HINDI

B.A/B.Com/B.Sc/B.B.M./B.H.M First Year, SEMISTER –II

Lesson Writers :

Dr. M. Manjula
Lecturer in Hindi
SRKH HS,Amaravathi, Guntur

Dr.S. Anand,
Department of Hindi,
St.Mary's Junior College,
Hyderabad

Dr.A. Sarala Devi
i/c Department of Hindi
Department of Hindi
S.S.&N College, Narasaraopet

Sk. Baji
Department of Hindi
Hindu College
Guntur

Editor

Dr. M. Manjula
Lecturer in Hindi
SRKH HS, Amaravathi, Guntur

Director

Dr.Nagaraju Battu

M.H.R.M., M.B.A., L.L.M., M.A. (Psy), M.A., (Soc), M.Ed., M.Phil., Ph.D.

Centre for Distance Education

Acharya Nagarjuna University, Nagarjuna Nagar-522510

Phone No.0863-2346208, 0863-2346222

0863-2346259 (Study Material)

Website: www.anucde.info

e-mail: anucdedirector@gmail.com

B.A.: Hindi

First Edition: 2021

No. of Copies

© Acharya Nagarjuna University

This book is exclusively prepared for the use of students of B.A. Hindi Centre for Distance Education, Acharya Nagarjuna University and this book is mean for limited circulation only

Published by

Dr.Nagaraju Battu

Director

Centre for Distance Education

Acharya Nagarjuna University

Nagarjuna Nagar-522510

Printed at

FOREWORD

Since its establishment in 1976, Acharya Nagarjuna University has been forging aheadin the path of progress and dynamism, offering a variety of courses and research contributions. I am extremely happy that by gaining 'A' grade from the NAAC in the year 2016, Acharya Nagarjuna University is offering educational opportunities at the UG, PG levels apart from research degrees to students from over 443 affiliated colleges spread over the two districts of Guntur and Prakasam.

The University has also started the Centre for Distance Education in 2003-04 with the aim of taking higher education to the door step of all the sectors of the society. The centre will be a great help to those who cannot join in colleges, those who cannot afford the exorbitant fees as regular students, and even to housewives desirous of pursuing higher studies. Acharya Nagarjuna Universityhas started offering B.A., BBA and B.Com courses at the Degree level and M.A., M.Com., M.Sc., M.B.A., and L.L.M., courses at the PG level from the academic year 2003-2004 onwards.

To facilitate easier understanding by students studying through the distance mode, these self-instruction materials have been prepared by eminent and experienced teachers. The lessons have been drafted with great care and expertise in the stipulated time by these teachers. Constructive ideas and scholarly suggestions are welcome from students and teachers involved respectively. Such ideas will be incorporated for the greater efficacy of this distance mode of education. For clarification of doubts and feedback, weekly classes and contact classes will be arranged at the UG and PG levels respectively.

It is my aim that students getting higher education through the Centre for Distance Education should improve their qualification, have better employment opportunities and in turn be part of country's progress. It is my fond desire that in the years to come, the Centre for Distance Education will go from strength to strength in the form of new courses and by catering to larger number of people. My congratulations to all the Directors, Academic Coordinators, Editors and Lesson- writers of the Centre who have helped in these endeavours.

Prof. P. Raja Sekhar
Vice-Chancellor (FAC)
Acharya Nagarjuna University

ACHARYA NAGARJUNA UNIVERSITY

Hindi Syllabus from the Academic Year 2020-21

B.A., B.Com., BBA & B.Sc. FIRST YEAR SEMESTER - II

SECOND LANGUAGE - HINDI

PROSE - 1) GADYA SANDESH - V.L. Narasimha Sinha

2) KATHALOK - Dr. Ghanshyam

Unit-I : गद्य संदेश (Prose) :

1. भारत एक है – रामधारी सिंह 'दिनकर'
2. बेईमानी की परत – हरिशंकर परसाई
3. एच.आई.वी. / एड्स – डॉ. प्रकाश भातल बंडे

Unit-II : कथा लोक (Short Stories) :

1. भूख हड़ताल – श्री बालशौरी रेड्डी
2. परमात्मा का कुत्ता – मोहन राकेश
3. वापसी – उषा प्रियंवदा

Unit-III : अनुवाद (Translation)

कार्यालयीन हिन्दी (Functional Hindi)

प्रशासनिक शब्दावली (Administrative Terminology)

(हिन्दी से अंग्रेजी में) (Hindi to English)

Unit-IV : व्याकरण (Grammar)

1. वाक्यों को शुद्ध कीजिए
2. संधि विच्छेद
3. शब्दों का वाक्यों में प्रयोग

Unit - V : पत्र लेखन (Letter Writing) : शिकायती, आवेदन पत्र

1. नौकरी के लिए आवेदन पत्र।
2. नगर पालिका के अधिकारी के नाम शिकायती पत्र।
3. पुस्तक विक्रेता के नाम पर पत्र।

अनुक्रमणिका

गद्य संदेश (Prose)

UNIT – I प्रथम विभाग

1. भारत एक है – रामधारी सिंह 'दिनकर' 1.1
2. बेईमानी की परत – हरिशंकर परसाई 2.2
3. एच .आई. वी /एड्स (AIDS) 3.3
   - मूल लेखक : डॉ. प्रकाश भातल बंड़े
   - डॉ. रमण गंगा खड़ेकर
   - अनुवाद : श्रीमती साधना मौर्य

व्दितीय विभाग (उपवाचक विभाग) (NON – DETAILED)

UNIT – II कथा लोक (SHORT STORIES)

1. हड़ताल – बालशौरी रेड्डी 4.1
2. भूख परमात्मा का कुत्ता - मोहन राकेश 5.2
3. वापसी - उषा प्रियंवदा 6.3

तृतीय विभाग

UNIT – III: अनुवाद (Translation)

कार्यालयीन हिन्द (Functional Hindi)

प्रशासनिक शब्दावली (Administrative Terminology)

(हिन्दी से अंग्रेजी में) (Hindi to English)

UNIT – IV **(व्याकरण** Grammar)

1. वाक्यों को शुध्द कीजीए
2. संधि विच्छेद
3. शब्दों का वाक्यों में प्रयोग

UNIT – V **पत्र लेखन** :(Letter Writing): शिकायती, आवेदन पत्र

1. नौकरी केलिए आवेदन पत्र।
2. नगर पालिका के अधिकारी के नाम शिकायती पत्र।
3. पुस्तक विक्रेता के नाम पर पत्र।

****

ACHARYA NAGARJUNA UNIVERSITY
MODEL QUESTION PAPER (नमूना प्रश्न पत्र)
B.A., B.Com., BBA & B.Sc. - FIRST YEAR - SEMESTER - II
(From the Academic Year 2020-21)
GENERAL HINDI - II

Time : 3 Hrs Maximum Marks : 75

---

1. **निम्न लिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।** **(2x6=12)**
   a) कहते हैं पहले पहल अगस्त्य ऋषि ने विंध्याचल को पार करके दक्षिण के लोगों को अपना संदेश सुनाया था।
   b) इन रोगों के लिए समाज में नियमित और आवश्यक रूप से जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है।
   c) ग्लानी से दुबला होने में देर लगती है और पानीदार भी दुबला हो जाता है।
   d) भाषा भेद की समस्या एकता की समस्या है।

2. **किसी एक गद्य पाठ का सारांश लिखिए।** **(1x12=12)**
   a) भारत एक है। b) बेईमानी की परत

3. a) **निम्न लिखित कहानियों में से किसी एक का सारांश लिखिए।** **(1x10=10)**
   a) भूख हड़ताल b) वापसी

   b) **निम्न लिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए।** **(1x8=8)**
   a) 'भूख हड़ताल' कहानी का उद्धेश्य लिखिए।
   b) 'अधेड़ आदमी' चरित्र का चित्रण कीजिए।

4. a) **निम्न लिखित पाँच शब्दों के समानार्थक अंग्रेजी शब्द लिखिए।** **(5x2=10)**
   i) पारपत्र ii) छुट्टी iii) भत्ता iv) प्रबन्धक v) संसद
   vi) राज्यपाल vii) पहचान पत्र viii) नगर निगम ix) मतदाता x) अध्यक्ष

   b) **निम्न लिखित पाँच वाक्यों को शुद्ध कीजिए।** **(5x1=5)**
   i) गोपाल एक आम खाया। ii) दशरथ की तीन रानियाँ थीं।
   iii) सीता का पति का नाम बताओ। iv) वह आते ही मैं जाऊँगा।
   v) राम उसका गाँव जाता है।

   c) **किन्हीं पाँच शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए।** **(5x1=5)**
   i) मनोहर ii) विद्यालय iii) एकैक iv) परमात्मा v) सदैव
   vi) सचरित्र vii) निष्पाप viii) निराशा ix) महेश x) स्वागत

   d) **किन्हीं पाँच शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।** **(5x1=5)**
   i) शान ii) जलवायु iii) अजनबी iv) कामयाबी v) विरासत
   vi) नियंत्रण vii) विषाणु viii) सबूत ix) शायद x) पीढ़ी

5. **किसी एक विषय पर पत्र लिखिए।** **(1x8=8)**
   a) नौकरी के लिए आवेदन पत्र लिखिए।
   b) पुस्तक विक्रेता के नाम पर पत्र लिखिए।

* * *

1. भारत एक है

इकाई की रूपरेखा:-

1.1 उद्देश्य

1.2 पाठ का परिचय

1.3 साहित्य - भारतीय साहित्य

1.4 लेखक – परिचय

1.5 मूल पाठ : "भारत एक है"

1.6 कठिन शब्दार्थ

1.7 पाठ का सारांश

1.8 निष्कर्ष

1.9 कुछ नमूने प्रश्न

1.10 संदर्भ सहित व्याख्यायें

1.11 सहायक ग्रंथ

1.1 उद्देश्य

1. भारत एक है, "एकता" का परिचय मिलेगा।
2. मानव के मन में "एकता" का भाव पैदा होने का कारण – समझेंगे।
3. मानव जीवन के साथ समाज की उन्नति केलिए और जीने के लिए "एकता" को पाने का राह मिलेगा।
4. मानवीय मूल्यों की महानता को और भावात्मक एकता को जन सकेंगे।
5. इस निबंध में आए हुए कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे।
6. निबंध का अध्ययन करने से यह स्पष्ट विदित होगा कि प्राचीन काल से आधुनिक काल तक भारतीय एकता क्या है ? इतना ही नहीं यह स्पष्ट होगा कि भिन्नत्व में एकत्व का जीता जागता उदाहरण भारत की एकता है।
7. पुस्तक अपने विवेचन-विश्लेषण में **दिनकर जी** के गहन चिन्तन का द्योतक है। राष्ट्रकवि ने अपनी इस पुस्तक में भारत की विविधता में **एकता** पर विचार करते हुए भाषा और संस्कृति की भूमिका को वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक के सन्दर्भ में रेखांकित करने की जिस तार्किक दृष्टि का परिचय दिया है, वह एक मिसाल है।

1.2 पाठ का परिचय

प्रस्तुत 'भारत एक है' उनका संस्कृतिक निबंध है। इसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति की एकता पर प्रकाश डाला है। उनके अनुसार भारत अनेकता में एकता का जीवंत उदाहरण है। निबंध के आरंभ में विविधता के अनेक रूपों का एवं करणों का उल्लेख किया है। विविधता के मुख्य कारण भारत का भूभाग बहुत कम समय के लिए एक शासन के अंतर्गत रहा है। भारत की जलवायु भी इसके लिए अनुकूल नहीं है।

उनके अनुसार जलवायु एवं क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार ही लोगों के पहनावे – ओढ़ावे और खान – पान में भी भेद आते हैं। यही विविधता का मूल कारण बनता है इस विविधता के बावजूद भारतीय एकता केलिए मुख्य आधार दर्शन और साहित्य है। भावात्मक एकता ही भारतीय एकता का मूल मंत्र है।

1.3 साहित्य – भारतीय साहित्य

सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ साथ साहित्य की रचना और उसके अध्ययन के प्रति मानव की उत्सुकता भी बढ़ती रही है। श्रेष्ठ साहित्य में मानव कल्याण की भावना का समावेश रहता है।

"साहितस्य भाव: साहित्यम" अर्थात जिसमें हित की भावना सन्निहित होती है उसे साहित्य" कहते हैं। साहित्य का हित चिन्तन विश्व – कल्याण की भावना पर आधारित होता है। कहने का तात्पर्य है कि – समष्टिगत हित – चिन्तन प्राप्त होता है वही साहित्य है। इसलिये विव्दानों ने "ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम साहित्य" कहा है। प्रत्येक युग का श्रेष्ठ साहित्य अपने युग के प्रगतिशील विचारों व्दारा किसी न किसी रूप में अवश्य प्रभावित होता है।

साहित्य –

1. हमारी कौतूहल और जिज्ञासावृत्ति को शांत करता है।
2. ज्ञान की जिज्ञासा को तृप्त करता है। और
3. मस्तिष्क की क्षुधा पूर्ति करता है।

जिस 'देश और जाति के पास जितना उन्नत और समृध्दिशाली साहित्य होगा वह देश और वह जाति उतनी ही अधिक उन्नत और समृध्दिशाली समझी जायेगी।

केवल साहित्य के व्दारा ही राष्ट्रीय इतिहास, देश की गौरव गरिमा, प्राचीन रीति – रिवाज, रहन – सहन, परंपरा, शताब्दियों पहले भाषा का संचार,वेश – भाषा, राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों के बारे में विस्तृत विचार होगा। वाल्मीकि की वाणी, तुलसीदास का अमर काव्य "रामचरित मानस" कालिदास के "रघुवंश" आदि महान साहित्य स्तोंतों के व्दारा देश की महिमा जानने का अवकास मिला। कहने की बात है कि – समाज के विचार, भाव, परिस्थितियों का प्रभाव इस समय के साहित्य पर पड़ेंगा। अत: समाज का दर्पण है साहित्य। यह स्वाभाविक ही है। साहित्य का प्रांतिबिम्ब है।

भारत एक है:

भारत एक है यह वाक्य सही है क्योंकि हम भारतवासी अलग–अलग धर्म में पैदा हुए हैं पर हमारे दिल एक है। जैसे कि आप देख लीजिए मुस्लिम भी आज होली मनाते हैं 15 अगस्त को हम सभी मिलकर झंडा फहराते हैं आदि। वैसे तो हम सभी ने सुना है कि एकता मे बल है। ऐसा व्यक्ति जो एक दूसरे की मदद करता है और एक साथ काम करते हैं वह जीवन में कभी नहीं होते। हमारी सांस्कृतिक एकता निबंध के माध्यम से दिनकर जी क्या संदेश देना चाहते हैं लिखिए?

1.4 लेखक – परिचय:–

आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय, संस्कृतिक चेतना का शंखनाद करनेवाले तथा युग – चारण नाम से विख्यात श्री. रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23-9-1908 को बिहार के मुंगेर जिले के "सिमरिया घाट " नामक गाँव में हुआ था। वे किसान परिवार के थे। दो वर्ष की आयु में ही उनके पिता का देहान्त हुआ। तदनंतर उनका पालन – पोषण का भार उनकी माता पर पड़ा।

'दिनकर' रामधारी सिंह का उपनाम है। आधुनिक हिन्दी कविता में अपना विशेष स्थान रखते हैं। दिनकर का बचपन कठिनाइयों में बीता। प्रारंभिक शिक्षा को प्राप्त करने के हेतु उन्हें भिक्षा मोकामा घाट के स्कूल तथा फिर पटना कालेज में हुई। उन्होंने "इतिहास" विषय लेकर बी.ए (आनर्स) की उत्तीर्ण की।

बचपन से ही कविता के प्रति उनकी रुचि थी। अपने छात्र जीवन में दहाती गीतों की रचना किया करते थे। यही कारण है की – उनकी कविता में हृदय को अंकित करने की अत्यधिक क्षमता है। दिनकर के स्कूल जीवन से ही राष्ट्रीय गीत, कविता, सवैया और सस्यापूर्ति के छंद तत्कालीन पत्रिकाओं में छपने लगे। "युवक" नामक पत्रिका में उनकी रचनाएँ बराबर छपी थी। दिनकर की प्ररवरता उनकी कविता में दिखाई देती है। वे कवि ही नहीं बल्कि सुंदर निबंधकार भि हैं।

दिनकर के काव्य का आरंभ प्रगतिवादी दृष्टिकोण को लेकर होता है। सामाजिक "वैषम्य के प्रति उन्होंने सर्वत्र आक्रोश प्रकट किया। शोषितों के प्रति उनकी सहानु भूति है और धनवानों के प्रति विध्रोह का प्रखर स्वर धरण करते हुए प्रतीत होते हैं।

श्वानों को मिलता दूध वस्त भूखे बालक अकुलाते हैं
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर जड़ों की रात बिताते हैं
युवती के लज्जा बसन बेच जन व्याज चुकाये जाते हैं
मालिक जब तेल फुलेलों पर पानी सा द्रव्य बहते है
पापी महलों का अहमकर देता तब मुझ को आमंत्रण।

इस आर्थिक वैषम्य को उलटने केलिए उत्तरोत्तर कवि की ललकार प्रखर होती है। और उसे विश्वास है कि – एक दिवस अवश्य यह विषमता बदलेगी। लेकिन तब विध्वंश की ज्वालामुखी फटकर वर्तमान व्यवस्था को भस्मीभूत कर देगा प्रलय का आह्वान ही भारत माता को शांति दे सकता है ,

दिनकर मोकामा घाट हाईस्कूल के प्रधानाचार्य, बिहार राज्य सरकार में सब रिजिस्ट्रार, विभाग के उपनिदेशक, 1950 में मिजफ्फर पुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष, 1964 में भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बने।

भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार पद पर रहकर उन्होंने अपनी प्रशासनिक योग्यता का परिचय दिया। साहित्य सेवाओं केलिए उन्हें विश्वविध्यालय ने डी. लिट की मानद उपाधि मिली।

विभिन्न सस्थाओं ने उनकी पुस्तकों पर साहित्य अकाडमी के व्दारा पुरस्कार तथा,

1974 में उनकी सर्वश्रेष्ट कृति 'उर्वशी' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार और

भारत सरकार ने पद्मभूषण की उपाधि प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया।

वर्षों तक वे संसद के सदस्य रहे और एक संसद – सदस्य को संस्कृति का जितना अच्छा ज्ञान हो सकता है उतना अच्छा ज्ञान दिनकर को भी है।

दिनकर ने कविता से बहुत काम लेना चाहा। सेवा की है। वह दु:ख में आँसू, सुख में हँसी और समर में तलवार बनकर मनुष्यों के साथ रही है। मनुष्य की चेतना को ऊर्ध्व मुखी रखने में कविता का बहुत प्रबल हाथ रहा है। स्वयं कवि ही पारिजात का वह पुष्प है जो स्वर्ग का संदेश लेकर पृथ्वी पर उतारा है। कवि जड़ विश्व को अपने स्वज के रंग से रंगनेवाला चित्रकार है। संसार उसकी कल्पना में अलौकिकता प्राप्त करता है। सफल कवि दृश्य और अट्टाश्य के बीच का वह सेतु है जो मानवता को देवत्व की ओर ले जाता है। (मिट्टी की ओर से संग्रहित)

कवि दिनकर भारत के अतीत गरिमा का स्मरण करके वेदना प्रकट करते हैं। आपकी कविताओं में राष्ट्रीय भावना अच्छी तरह दिखाई पड़ती है। दिनकर की वाणी में ओज का बाहुल्य है। वे युवक हृदयों के कवि हैं।

दिनकर की कविताएँ उपदेशात्मक बन गयी हैं। अपनी अलोचनाओं में भी वे इसी की वकालत कराते हैं। वे लिखते हैं – अनुकरण किये बिना जी नहीं कर सकती। (मिट्टी की ओर से उदधृत है)

इनका स्वर्गवास 25-4-1974 को हुआ।

लेखक की प्रमुख रचनाएँ

दिनकर प्रगतिवादी और राष्ट्र कवि हैं। उनकी कविता में हृदय के अंकित करने की अत्यधिक क्षमता है। दिनकर की रचनाओं की तालिका इस प्रकार हैं –

काव्य कृतियाँ :-

कुरुक्षेत्र – प्रबंध काव्य है (तीन पुरस्कार मिले)

ऊर्वशी – प्रबंध काव्य है (ज्ञान पीठ पुरस्कृत है)

हुंकार – (कविता संग्रह)

नील कुसुम – (कविता संग्रह)

रेणुका – (कविता संग्रह)

इतिहास के आँसू – (कविता संग्रह)

कोयला और कवित्व – (कविता संग्रह)

रश्मिरथी

परुशुराम की प्रतीक्षा

हरे को हरिनाम

आत्मा की आँखें

मृत्ति तिलक

बापू

सामधनी

धूप – छाँह

सीपी और शंख

नये सुभाषित

चक्रवाक

दिल्ली

दिनकर कवि ही नहीं सुन्दर गद्यकार भी हैं। उनकी गद्य रचनाएँ इस प्रकार हैं –

संस्कृति के चार अध्याय (साहित्य अकाडमी से पुरस्कृत)

हिन्दी गद्य में आलोचना

अर्थ नारीश्वर

मिट्टी की ओर

हमारी संस्कृतिक एकता

रेती के फूल

प्रसाद, पंत और मैथिलीशरण गुप्त

काव्य की भूमिका

शुध्द कविता की खोज

मेरी यात्रायें

साहित्य मुखी

भारत की संस्कृतिक कहानी

आधुनिक बोध

वेणु वन

चेतना की शिख

भारतीय एकता

लोकदेव नेहरू

विवाह की मुसीबतें
राष्ट्र भाषा और राष्ट्रीय एकता
इनके अतिरिक्त –
बाल साहित्य एवं आलोचना संबंधी साहित्य कभी प्रणयन किया।
संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ
हेराम (एकांकी संग्रह)
दिनकर की डायरी।

1.5 मूल पाठ : "भारत एक है"

अक्सर कहा जाता है कि भारतवर्ष की एकता उसकी विविधताओं मेम छिपी हुई है। और यह बात जरा भी गलत नहीं है क्योंकि अपने देश की एकता जितनी प्रकट है, उसकी विविधताएँ भी उतनी ही प्रत्यक्ष हैं।

भारतवर्ष के नक्शे को ध्यान से देखने पर यह साफ दिलहाइ पड़ता है कि इस देश के तीन भाग प्राकृतिक दृष्टि से बिल्कुल स्पष्ट हैं। सबसे पहले तो भारत का उत्तरी भाग है जो लगभग हिमालय के दक्षिण से लेकर विंध्याचल के उत्तर तक फैला हुआ है। उसके बाद, विंध्या से लेकर कृष्णा नदी से उत्तर तक का वह भाग है, जिसे हम दक्खिनी प्लेटो कहते हैं। इस प्लेटो के दक्षिण, कृष्णा नदी से लेकर, कुमारी अंतरीप तक का जो भाग है, वह प्रायध्दीप जैसा है। अचरज की बात है कि प्रकृति ने भारत के जो ये तीन खण्ड किए हैं, वे ही खण्ड भारतवर्ष के इतिहास के भी तीन क्रीडास्थल रहे हैं। पुराने समय में उत्तर भारत में जो राजी कायम किए गए, उनमें से अधिकांश विंध्या की उत्तरी सीमा तक ही फैलकर रह गए। विंध्या को लाँघ कर उत्तर भारत को दक्षिण भारत से मिलने की कोशिश तो बहुत ही की गई, मगर इस काम में कामयाबी किसी – किसी को ही मिली। कहते हैं पहले – पहल अगस्त्य ऋषि ने विंध्याचल को पार करके दक्षिण के लोगों को अपना संदेश सुनाया था। फिर भगवान श्री रामचन्द्र ने लमका पर चढ़ाई करने के सिलसिले में वंध्याचल को पार किया। महाभारत के जमाने में उत्तरी और दक्षिणी भारत के अंश एक राज्य के अधीन थे या नहीं, इसका कोई पक्का सबूत नहीं मिलता। लेकिन, रामचन्द्र जी ने उत्तरी और दक्षिणी भारत के बीच जो एकता स्थापित की, वह महाभारत काल में भी कायम थी और दोनों भागों के लोग आपस में मिलते – जुलते रहते थे। महाराजा युधिष्ठिर के राजसूय – यज्ञ में दक्षिण के राजा भी आए थे और कुरुक्षेत्र के मैदान में जो महायुध्द था, उसमें भी दक्षिण के वीरों ने हिस्सा लिया था, इसका प्रमाण महाभारत में ही मौजूद है। इसी तरह चन्द्रगुप्त, अशोक, विक्रमादित्य और उनके बाद मुगलों ने भी इस बात के लिए बड़ी कोशिश की किसी तरह सारा देश एक शासन के अधीन लाया जा सके, और उन्हें इस कार्य में सफलता भी मिली। लेकिन भारत के इतिहास की एक शिक्षा यह भी है कि इस देश को एक रखने के काम में यहाँ के राजाओं को जो भी सफलता मिली, वह ज्यादा टिकाऊ नहीं हो सकी। इस देश के प्राकृतिक ढाँचे में ही कोई ऐसी बात थी, जो सारे देश को एक रहने देने के खिलाफ पड़ती थी। यही कारण था कि जब भी कोई बलवान और दूरदर्शी राजा इस काम में लगा, सफलता थोड़ी – बहुत उसे जरूर मिली, लेकिन स्वार्थी, अदूरदर्शी और कमजोर राजाओं के आते ही देश कि एकता टूट गयी। और जो

कठिनाई विंध्या के दक्षिण से मिलाने में हुई, वही कठिनाई कृष्णा नदी से उत्तर के भाग को उसके दक्षिण के भाग से मिला कर एक रखने में होती रही।

इस देश में वैर – फूट का यह भाव इतना प्रबल क्यों रहा ? इसका भी कारण है। बड़ी – बड़ी नदियों और बड़े – बड़े पहाड़ों के गुण अनेक हैं, लेकिन उनमें एक अवगुण भी होता है कि वे जहाँ रहते हैं वहाँ देश के भीतर अलग – अलग क्षेत्र बना देते हैं और इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के भीतर एक तरह कि प्रांतीयता या क्षेत्रीय जोश पैदा हो जाता है यह देश है भी बहुत विशाल। इसके उत्तरी छोर पर काश्मीर पड़ता है जिसकी जलवायु लगभग मध्य एशिया कि जलवायु के सामान है। इसके विपरीत भारत के दक्षिणी छोर पर कुमारी अन्तरीप है जहाँ के घरों की रचना और लोगों के रंग – रूप आदि में श्रीलंका या सीलोन का नमूना शुरु हो जाता है। चेरापूंजी भी इसी देश में है जहाँ साल में 500 इंच से अधिक वर्षा होती है, और थार की मरुभूमि भी यहीं है जहाँ वर्षा होती ही नहीं अथवा नाममात्र की होती है।

जलवायु एवं क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार ही लोगों के पहनावे – ओढ़ावे और खाना – पान में भी भेद हो जाता है, जो भेद भारत में बहुत ही प्रत्यक्ष है। असल में इन भेदों को मिटाकर अगर हम कोई एक राष्ट्रीय ढंग चलाना चाहें तो उससे अनेक लोगों को बहुत ज्यादा तकलीफ होगी। उदाहरण के लिए, अगर हम रोटी और उड़द की दाल अथवा रोटी और मांस को देश का राष्ट्रीय भोजन बना दें, तो पंजाबी लोग तो मजे में रहेंगे, लेकिन बिहार और बंगाल के लोगों का हाल बुरा हो जाएगा, इसी तरह अगर हम यह कानून बना दें कि हर हिन्दुस्तानी को चप्पल पहनना ही होगा तो काश्मीर के लोग घबरा उठेंगे, क्योंकि पहाड़ पर चलने वाले पांवों में चप्पल पहनकर ठीक – ठीक नहीं चल सकते। पहनावे – ओढ़ावे में भी जगह – जगह भिन्नता मिलती है और पोशाकें भी जलवायु एवं क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार ही यहाँ तरह – तरह कि फैली हुई हैं।

मगर विविधता का सबसे बड़ा लक्षण यह है कि हमारे देश में अनेक प्रकार की भाषाएँ फैली हुई हैं और इनके कारण हम आपस में भी अजनबी के सामान हो जाते हैं। उत्तर भारत में तो गुजरात से लेकर बंगाल तक की जनता के बीच सम्पर्क खूब हुआ है इसलिए वहाँ भाषा – भेद की कठिनाई उतनी नहीं अखरती, लेकिन अगर कोई उत्तर भारतीय दक्षिण चला जाए अथवा कोई दक्षिण भारतीय उत्तर चला आए और वह अपनी मातृभाषा के सिवा अन्य कोई भाषा नहीं जानता हो तो वह सचमुच बड़ी मुश्किल में पड़ जाएगा। भाषा – भेद की यह समस्या हमारी राष्ट्रीय एकता की सबसे बड़ी बधा है। राष्ट्रीय एकता में पहले यह बधा थी कि पहाड़ों और नदियों को लांघना आसान नहीं था। मगर, अब विज्ञान के अनेक सुगम साधनों के उपलब्ध हो जाने से वह बधा दूर हो गई है। आज अगर देश के एक कोने में अकाल पड़ता है तो दूसरे कोने से अनाज यहाँ तुरन्त पहुँचा दिया जाता है। इसी प्रकार, पहले जब देश के एक कोने में विद्रोह होता था, तब दूसरे कोने में पड़ा हुआ राजा जल्दी से फौज भेज कर उसे दबा नहीं सकता था और विद्रोह की सफलता से देश की एकता टूट जाती थी। लेकिन आज तो देश के चाहे जिस कोने में भी विद्रोह हो, हम दिल्ली से फौज भेजकर उसे तुरन्त दबा सकते हैं। प्राकृतिक बाधाएँ अब खत्म हो गई हैं। यही कारण है कि

आज हमारी एकता इतनी विशाल हो गई है, जितनी विशाल वह रामायण, महाभारत, मौर्य और मुगल जमानों में कभी नहीं हुई थी। अब भी जो क्षेत्रीय जोश या प्रांतीय मोह बाकी है, वह धीरे – धीरे कम हो जाएगा, क्योंकि इस जोश को पालने वाली प्राकृतिक बाधाएँ अब शेष नहीं हें। मगर भाषा – भेद की समस्या जरा कठिन है और उसका हल तभी निकलेगा जब हिन्दी भाषी क्षेत्रों में अहिन्दी भाषाओं तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा का प्रकार हो जाए। सौभाग्य की बात है कि इस दिशा में कम शुरू हो गए हैं और कुछ समय बीतते – बीतते हम इस बाधा पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

यह तो हुई भारत की विविधता की कहानी। अब जरा यह देखने की कोशिश करनी चाहिए कि इस विविधता के भीतर हमारी एकता कहीं छिपी हुई है। सबसे विचित्र बात तो यह है कि यद्यपि हम अनेक भाषाएँ बोलते हैं जिनमें 14 भाषाएँ तो एसी हैं, जिन्हें भारत सरकार ने स्वीकृति दे रखी है : ये भाषाएँ हैं – हिन्दी, उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल। तेलुगु, मलयालम, कन्नड, उड़िया, असामी, पंजाबी, कश्मीरी और संस्कृत, किन्तु भिन्न – भिन्न भाषाओं के भीतर बहने वाली हमारी भावधारा एक है तथा हम, प्राय: एक ही तरह के विचारों और कथा वस्तुओं को लेकर अपनी – अपनी बोली में साहित्य रचना करते हैं। रामायण और महाभारत को लेकर भारत की प्राय: सभी भाषाओं के बीच अद्‌भुत एकता मिलेगी; इसके सिवा, संस्कृत और प्राकृत में भारत का जो साहित्य लिखा गया था, उसका प्रभाव भी सभी भाषाओं की जड़ में काम कर रहा है। विचारों की एकता जाति की सबसे बड़ी एकता होती है। अतएव भारतीय जनता की एकता के असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य है जो अनेक भाषाओं में लिखे जाने पर भी, अन्त में जाकर एक ही साबित होते हैं। यह भी ध्यान देने की बात है कि फारसी लिपि को छोड़ दे तो भारत की अन्य सभी लिपियों की वर्णमाला एक ही है, यद्यपि, वह अलग – अलग लिपियों में लिखी जाती है। जैसे हम हिन्दी में क, ख, ग आदि अक्षर पढ़ते हैं, वैसे ही ये अक्षर भारत की अन्य लिपियों में भी पढे जाते हैं, यद्यपि उनके लिखने का ढंग और है।

हमारी एकता का दूसरा प्रमाण यह है कि उत्तर या दक्षिण चाहे जहाँ भी चले जाए, आपको जगह – जगह पर एक ही संस्कृति के मन्दिर दिखाई देंगे, एक ही तरह के आदमियों से मुलाक़ात होगी, जो चंदन लगाते हैं, स्नान पूजा कराते हैं, तीर्थ – व्रत में विश्वास करते हैं अथवा जो नई रोशनी को अपना लेने के कारण इन बातों को शंका कि दृष्टि से देखते हैं। इत्तर भारत के लोगों का जो स्वभाव है, जीवन को देखने की जो उनकी दृष्टि है, वही स्वभाव और वही दृष्टि दक्षिण वालों की भी है। भारत की दीवार के टूटते ही, उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतरी के बीच कोई भी भेद नहीं रह जाता और वे आपस में एक – दूसरे के बहुत करीब आ जाते हैं। असल में, भाषा की दीवार के आरपार बैठे हुए भी वे एक ही हैं। वे एक धर्म के अनुयायी और संस्कृति की एक ही विरासत के भागीदार हैं; उन्होंने देश की आजादी के लिए एक होकर लड़ाई लड़ी और आज उनकी पार्लियमेंट और शासन–विधान भी एक है।

संसार के हर एक देश पर अगर हम अलग–अलग विचार करे तो हमें पता चलेगा कि प्रत्येक देश की एक निजी सांस्कृतिक विशेषता होती है जो उस देश के प्रत्येक निवासी चाल–ढाल, बातचीत,

रहन-सहन, खान-पान, तौर-तरीके और आदतों से टपकती रहती है । चीन से आने वाला आदमी विलायत से आने वालों के बीच नहीं छिप सकता, और यद्यपि अफ्रीका के लोग भी काले ही होते हेम, मगर वे भारतवासियों के बीच नहीं खप सकते । भारत वर्ष भी यूरोपीय पोशाक खूब चली हुई हैं लेकिन यूरोपीय लिबास में सजे हुए हिंदुस्तानियों के बीच एक अंग्रेज़ को खड़ा कर दिया जाए तो वह आसानी से अलग पहचान लिया जाएगा । इसी तरह भारत के हिन्दू ही नहीं, बल्कि हिंदुस्तानी, क्रिस्तान, पारसी और मुसलमान भी भारत से बाहर जाने पर आसानी से पहचान लिए जाते हैं कि वे हिंदुस्तानी हैं । और यह बात कुछ आज पैदा नहीं हुई, बल्कि इतिहास के किसी भी काल में भारतवासी ही थे तथा अन्य देशों के बीच में वे खप नहीं सकते थे । यही वह सांस्कृतिक एकता या शक्ति हे जो भारत को एक रखे हुए है; यही वह विशेषता है जो उन लोगों में पैदा होती है जो एक देश में रहते हैं एक तरह की जिन्दगी बसर कराते हैं और एक तरह के दर्शन और एक तरह की आदतों का विकास करके एक राष्ट्र के सदस्य हो जाते हैं ।

1.6 कठिन शब्दार्थ (Meanings)

1. अगस्त्य - एक ऋषि
2. राजसूय - वह यज्ञ जिसको करने का अधिकार केवल सम्राटों को होता है ।
3. अजनबी - अपरिचित
4. लाँघना - पार करना
5. विद्रोह - व्देष
6. विरासत - उत्तराधिकार में मिला हुआ धन
7. नक्शा - माप
8. कायम करना - स्थिर करना
9. कामयाबी - सफलता
10. अखरना - खलना
11. अगस्त्य - एक ऋषि
12. लाँघना - पार करना To cross
13. विद्रोह - व्देष, Enemity
14. चढ़ाई करना - आक्रमण करना Attack, invasion
15. सिलसिला - क्रम, संदर्भ, Context
16. सबूत - प्रमाण, Proof
17. हिस्सा लेना - भाग लेना To take part
18. मौजूद - उपस्थित, हाजिर To be present
19. टिकाऊ - शाखत, Permanent
20. खिलाफ - विरूध्द
21. फूट - शत्रुता, Enemity

22. अवगुण - बुरा गुण, Bad qualities
23. छोर - किनारा, अत, Shore
24. जलवायु - वातावरण, Atmosphere
25 . नमूना - प्रारूप, Sample

न क्रीड़ास्थल रहे हैं।

26. मरुभूमि - रेगिस्तान, Drsert
27. पहनावा-ओढ़ावा - वस्त्र, Cloth
28. मिटाना - नशा करना, Destroy
29. तकलीफ - कष्ट, Hardship, problem
30. बाधा - अड़चन, Hindarence
31. अकाल - Drought
32. दर्शन - Philosophy
33. खपना - मिलना, To meet
34. सदस्य - Member
35. तौर-तरीके - पध्दतियाँ, Life-style, way of living

1.7 पाठ का सारांश

इस निबंध में 'दिनकर' भारत की अदरूनी एकता और बाहरी विविधता की चर्चा कर रहे हैं। उनके अनुसार भारत देश की विविधताएँ जितना प्रत्यक्ष हैं, उसकी एकता भी उतनी ही प्रकट है। प्राकृतिक दृष्टि से भारत वर्ष के तीन भाग हैं। एक भाग हिमालय तथा विंध्य के पर्वतों के बीच फैला हुआ है। दूसरा भाग दक्खिनी प्लेटो है जो विंध्य से कृष्णा नदी तक व्याप्त है। तीसरा भाग कृष्णा नदी तक व्याप्त है। तीसरा भाग कृष्णा नदी से कुमारी अंतरीप तक विस्तृत है। ये तीन प्राकृतिक खंड भारतवर्ष के इतिहास के ती प्राकृतिक विभिन्नता के अतिरिक्त हमारे देश में अनेक प्रकार की भाषाएँ बोली जाती है। इनके कारण हम आपस में भी अपरिचितों के समान हैं। यह भाषा भेद हमारी राष्ट्रीय एकता की सबसे बड़ी बाधा है। इस समस्या का परिष्कार तभी होगा जब हिन्दी भाषी क्षेत्र में अहिन्दी भाषाओं तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा का अच्छा प्रचार हो जाए। इस दिशा में काम शुरू हो चुका है और विजय प्राप्त करने की आशा भी है।

इन्हीं विविधताओं के बीच हमारी एकता छिपी हुई है। यद्यपि हम अनेक भाषाएँ बोलते हैं तथापि इन भाषाओं के भीतर बहनेवाली हमारी राष्ट्रीय भावधारा एक है। हम अक्सर एक ही प्रकार के विचारों और कथा वस्तुओं को लेकर अपनी-अपनी भाषाओं में साहित्य की रचना करते है। रामायण और महाभारत को लेकर भारत की लगभग सभी भाषाओं में अद्‌भुत एकता मिलेगी। इसके अलावा संस्कृत और

प्राकृत में भारत का जो प्राचीन साहित्य लिखा गया था सका प्रभाव सभी भारतीय भाषाओं की जड़ में काम कर रहा है। विचारों की एकता जाति की सबसे बड़ी एकता होती है।

भारतीय जनता की एकता के असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य हैं। यहाँ की सभी लिपियों की वर्णमालाएँ भी एक जैसी ध्वनियों से बनी हैं। इसलिए वर्णमाला एक ही है जो 'अ' से प्रारंभ होकर 'ह' से समाप्त होती है।

हमारी एकता का दूसरा प्रमाण है हमारा धर्म। उत्तर और दक्षिण के सभी स्थानों में धार्मिक जनता एक ही प्रकार की होगी। इससे अलग आधुनिक विचारधारा वाले भी एक जैसे मिलेंगे। समस्त भारत के लोगों का स्वभाव और जीवन-दृष्टि अथवा जीवन-दर्शन एक ही जैसा होगा भाषा की दीवार के टूटते ही दोनों के बीच कोई भेद नहीं रहेगा। आपस में करीब आ जायेंगे। इस प्रकार भारतवासी एक धर्म के अनुयायी हैं। इतना ही नहीं उन्होंने एकजुट होकर स्वाधीनता संघर्ष में प्राण अर्पित किये थे ।वे एक ही सांस्कृतिक विरासत के भागीदार हैं। आज स्वाधीन भारत का शासन-विधान, संसद और न्यायपालिका सभी के लिए एक है।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ लोग अलग-अलग भाषा बोलते हैं और विभिन्न जाति, धर्म, संप्रदाय और संस्कृति के लोग एक साथ रहते हैं। इसी वजह से भारत में "विविधता में एकता" का ये आम कथन प्रसिद्ध है। इसे आध्यात्मिकता, दर्शन, विज्ञान और प्रौद्योगिकीय की भूमि भी कहा जाता है।

इन करणों से जब कोई भारतवासी दूसरे देशों में जायेगा तो उसे केवल भारतीय कहेंगे और कुछ भी नहीं। क्योंकि भारत एक है, अखंड है और अक्षुण्ण है।

मुख्य विषय

1. 'दिनकर' कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना प्रखर है।
2. निबंध का विषय गंभीर और विचार-प्रधान है।
3. आपकी भाषा विशुद्ध हिन्दी है। शैली विवरणात्मक है।
4. वे एक राष्ट्रीय कवि होने के नाते देश कि एकता के प्रबल समरथक हैं।
5. इस विषय से कवि 'दिनकर' की सम्यक विचार धारा प्रकट होती है।
6. अगस्त्य मित्रावरुणके पुत्र थे। उन्हें कुभसंभव कहा जाता है।
7. 'दिनकर' का ऐतिहासिक बोध प्रशंसनीय है।
8. आपकी भाषा अत्यंत सरल और शैली प्रवाहपूर्ण है।
9. लेखक की राष्ट्रीयता इन वाक्यों से होती है। वे एकतवादी है।
10. 'भारत एक है' एक सांस्कृतिक निबंध है।

1.8 निष्कर्ष

पूरे विश्व भर में भारत एक प्रसिद्ध देश है। भौगोलिक रुप से, हमारा देश एशिया महाद्वीप के दक्षिण में स्थित है। भारत एक अत्यधिक जनसंख्या वाला देश है साथ ही प्राकृतिक रुप से सभी दिशाओं से सुरक्षित है। पूरे विश्व भर में अपनी महान संस्कृति और पारंपरिक मूल्यों के लिये ये एक प्रसिद्ध देश है। इसके पास हिमालय नाम का एक पर्वत है जो विश्व में सबसे ऊँचा है। ये तीन तरफ से तीन महासागरों से घिरा हुआ है जैसे दक्षिण में भारतीय महासागर, पूरब में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरेबिक सागर से। भारत एक लोकतांत्रिक देश है जो जनसंख्या के लिहाज से दूसरे स्थान पर है। भारत की राष्ट्रीय भाषा हिन्दी है हालाँकि यहाँ पर लगभग 14 राष्ट्रीय रुप से मान्यता प्राप्त भाषा बोली जाती हैं।

1.9 कुछ नमूने प्रश्न/ अभ्यासार्थ प्रश्न

1. भारत में विविधता किन - किन बातों में दिखाई डटी है ?
2. भरत की भाषा भेद की समस्या का परिचय दीजिए।
3. भारत की सबसे बड़ी विरासत क्या है ?
4. विविधता के भीतर भारत की एकता कैसे समायी हुई है। स्पष्ट कीजिए।
5. 'भारत एक है' पाठ का सारांश लिखिए।

1.10 संदर्भ - सहित व्याख्याएँ (Annotations)

1. कहते हैं पहले पहल अगस्त्य ऋषि ने विंध्याचल को पार करके दक्षिण के लोगों को अपना संदेश सुनाया था।

प्रसंग: यह वाक्या 'भारत एक है' नामक संस्कृति निबंध से दिया गया हे। इसके लेखक श्री रामधारी सिंह "दिनकर" हेम। आप हिन्दी काव्य के प्रगतिशील राष्ट्रीय कवि हैं। हिन्दी गद्य साहित्य के लिए भी आपका विशेष योगदान रहा है। आपके निबंध विचार प्रधान होते हैं।

संदर्भ: भारत के उत्तर और दक्षिण के बीच को एक करने के प्रयत्नों की चर्चा करते हुए निबंधकार यह बात बताते हैं।

व्याख्या : भारत के उत्तर और दक्षिण के बीच विंध्य का पहाड़ एक प्राकृतिक सीमा बना हुआ था।

उत्तर भारत के अनेक राजाओं ने दक्षिण को जीतकर उस पर अपना अधिकार जमाने का प्रयत्न किया था। परंतु बहुत कम लोग इसमें सफल हुए थे। पुराणों के अनुसार वह अगस्त्य ऋषि थे जो विंध्य परबत को सबसे पहले पार करके दक्षिण की तरफ गये थे। अर्थात भारत के दो मिख्या भाग इतिहास - काल से भूत पहले पुराणकाल से ही एक हो चुके थे। प्राकृतिक रूप से दो होने पर भी उत्तर और दक्षिण सांस्कृतिक रूप से एक से एक ही थे। हमारे पूर्वजों को भारत की एकता का ज्ञान और अनुभव था। इससे प्रकट होता है कि भारत की विविधता पश्चिमी शासकों व्दारा फैलायी गयी झूठी अफवाह थी।

विशेष :

I इस विषय से कवि 'दिनकर' की सम्यक विचार धारा प्रकट होती है।

Ii अगस्त्य मित्रावरुणके पुत्र थे। उन्हें कुभसंभव कहा जाता है।

2) यही कारण था कि जब भी कोई बलवान और दूरदर्शी राजा इस काम में लगा, सफलता थोड़ी बहुत उसे जरूर मिली, लेकिन स्वार्थी, अदूरदर्शी और कमजोर राजाओं के आते ही देश की एकता टूट गयी।

प्रसंग: यह उद्धरण 'भारत एक है' नामक सांस्कृतिक निबंध से ग्रहीत है। इसको श्री 'दिनकर' ने लिखा है। ये प्रगतिशील राष्ट्रीय कवि हैं। गद्य पार भी समान अधिकार रखते हैं। 'संस्कृति के चार अध्याय' आपकी महान गद्य रचना है। आपकी भाषा विशुध्द हिन्दी है।

संदर्भ: इतिहासकाल में भारत शासकीय दृष्टि से हमेशा एक नहीं रहा था। लेखक इससे करणों का परिशीलन कर रहे हैं।

व्याख्या: भारत में प्राकृतिक रूप से विविधता है। विंध्य के पहाड़ भारत के उत्तर और दक्षिण को अलग किये हुए हैं। इसलिए लोगों का आना-जाना कष्टप्रद होता है। परस्पर मिलाप के बिना विचारों का विनिमय तो असंभव ही है। इस के अलावा शासकीय तौर पर भी भारत बहुत कम संदर्भों में एक रहा था। बलवान राजा पहाड़ के उस पार भी अपनी धक को स्थिर रख सकता था। दूरदर्शी चक्रवर्ती देश की एकता का सही उपाय आजमाता था। किन्तु बलवान राजा का बेटा भी बलवान हो, एस कोई नियम नहीं है। इसलिए कमजोर राजा के गद्दी पर चढ़ते ही दक्षिण उत्तर से अलग हो जाता था।

विशेष :

1. दिनकर' का ऐतिहासिक बोध प्रशंसनीय है।

1. आपकी भाषा अत्यंत सरल और शैली प्रवाहपूर्ण है।

3) हमारी एकता का दूसरा प्रमाण यह है कि उत्तर या दक्षिण चाहे जहाँ भी चले जाएँ, आपको जगह-जगह पर एक ही संस्कृति के मंदिर दिखाई देंगे .... ।

प्रसंग: यह गदयांश 'भारात एक है' नामक सांस्कृतिक निबंध से स्वीकृत है। इसके रचयिता श्री 'दिनकर' हैं। आप हिन्दी के प्रगतिशील राष्ट्रीय कवि हैं। आप हिन्दी के प्रगतिशील राष्ट्रीय कवि हैं। सफल गद्य लेखक हैं। समय-समय पर देश की समस्याओं के प्रति जागरूक रहे हैं। समस्या का समाधान खोजने का प्रयत्न करनेवाले हैं।

संदर्भ: देश की एकता को प्रमाणित करते हुए लेखक इस प्रकार कहते हैं।

व्याख्या: भारत देश में भिन्नता और एकता दोनों हैं। दोनों स्पष्ट और प्रत्यक्ष हैं। जो जिसे देखना चाहे वह उसे देख सकता है। वास्तव मैं भिन्नता बाहरी है। किन्तु एकता हृदय की है, मस्तिष्क की है। इसलिए सारे देश का धर्म और संस्कृति एक है। हिमालय से लेकर कुमारी अंतरीप तक एक ही प्रकार के विश्वासवाले लोग रहते हैं। चाहे आस्तिक हों, चाहे नास्तिक, भारत भर मेम एक ही देवी-देवताओं के मंदिर दिखाई देंगे। यहाँ पश्चिमी विचारों का भी प्रभाव हैं। इसलिए आधुनिक विचारधारा के लोग भी मिल जायेंगे।

मगर वे सभी एक ही प्रकार के होंगे । इस प्रकार भारतीयों के स्वभाव और जीवन-दर्शन मेम एकता है । यही देश की सच्ची एकता है ।

विशेष: लेखक की राष्ट्रीयता इन वाक्यों से स्पष्ट होती है । वे एकतावादी है ।

1.11 सहायक ग्रंथ

1) आधुनिक हिन्दी निबंध – सुरेशचन्द्र गुप्ता
2) आधुनिक हिन्दी निबंध – भुवनेश्वरी चरण सक्सेना
3) साहित्य मुखी – रामधारी सिंह "दिनकर"
4) शुध्द कविता की खोज – रामधारी सिंह "दिनकर"
5) भारत की सांस्कृतिक कहानी – रामधारी सिंह "दिनकर"

Sk. Baji,
Department of Hindi,
Hindu College, Guntur,
Cell No: 9700107983.
Mail.ID: hinducpllege786hindi@gmail.com

2. बेईमानी की परत

इकाई का रूपरेख :-

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 निबंधकार का परिचय

2.4 बेईमानी की परत का परिचय

2.5 सारांश

2.6 शब्दावली

2.7 बोध प्रश्न

2.8 संदर्भ सहित व्याख्या

2.1 उद्देश्य :-

इस इकाई के अंतर्गत आप बेईमानी की परत नामक विचारात्मक निबंध को पढ़ने जा रहे हैं। निबंध के लेखक – हरीशंकर परसाई है। इसका अध्ययन करने के बाद आप निबंध का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे। निबंध में आये हुए कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे। बेईमानी की परत किसे कहते हैं, देश भर में, लोगों के मन में बेईमानी को लेकर किस तरह के विचार पनप रहे हैं आदि के बारे में जान सकते हैं।

2.2 प्रस्तावना :-

आप इस इकाई के अंतर्गत विचारात्मक निबंध बेईमानी की परत पढ़ने जा रहे हैं । हिंदी का यह निबंध अति महत्वपूर्ण निबंध है। इस निबंध के लेखक हरीशंकर परसाई है। देश में बड़ती हुई बेईमानी, भ्रष्टाचार हमारी सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था को पूरी तरह से तहस नहस कर रही है। लोगों पर बेईमानी की परत किस हद तक चाड चुकी है इसका चित्रण लेखक ने व्यंग्यात्मक ढंग से चित्रित करते हैं।

2.3 निबंधकार हरीशंकर परसाई का परिचय (२२ अगस्त, १९२४ - १० अगस्त, १९९५):-

हिंदी के जाने-माने, हास्य व्यंग्य के लेखक हरिशंकर परसाई जी का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी नामक गांव में 22 अगस्त 1924 ई॰ को हुआ था। आपने अपने समस्त साहित्य में सामाजिक राजनीतिक एवं आम आदमी के जीवन की विडंबनाओं एवं विसंगतियों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। आपकी भाषा आम बोलचाल की भाषा है। आपने कई विधाओं में रचनाएँ की है जो हास्य व्यंग्य से ओत प्रोत है। आप हिंदी के पहले रचनाकार है जिन्होंने व्यंग्य को एक साहित्यिक विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से बाहर कर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। इस लिए आप को हिंदी व्यंग्य साहित्य के भीष्मपितामहा कहा जाता है। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपका निधन 10 अगस्त 1995 ई॰ में हुआ।

प्रमुख रचनाएँ :-

व्यंग्य संग्रह :- सदाचार की ताबीज, भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, तब की बात और थी, पगडंडियों का जमाना आदि।

उपन्यास :- रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज, ज्वाला और जल आदि ।

कहानी संग्रह :- हंसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ है ।

2.4 बेईमानी की परत का परिचय :-

आज के समय में बेईमान हर क्षेत्र में बढ़ती ही जा रही है । चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र हो या सामाजिक क्षेत्र लगभग सभी क्षेत्रों में बेईमानी, भ्रष्टाचार, घूसख़ोरी, चापलूसी ने अपने पैर पसार लिए है । देश में बड़ाती हुई इसी बेईमानी, भ्रष्टाचार, चापलूसी का वास्तविक चित्रण लेखक ने इस निबंध में हास्य व्यंग्य के रूप में किया है ।

2.5 सारांश :-

बेईमानी की परत निबंध में परसाई जी ने भारत के तत्कालीन राजनीति पर तथा समाज के हर क्षेत्र पर तीखा व्यंग्य किया है । उनका कहना है कि वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति पर बेईमानी की परत चढ़ी हुई है राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा साहित्य के सभी क्षेत्र भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गए हैं । स्वतंत्रता के पूर्व जिस भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था आज वही भारत बेईमानी व भ्रष्टाचार के चलते विकास हीन होता जा रहा है । जहाँ नज़र पड़ती है वहीं भ्रष्टाचार नज़र आता है । आम आदमी हर तरफ से शोषित,पीड़ित हो रहा है । इन्हीं सब परिस्थितियों का चित्रण इस निबंध में किया गया है ।

लेखक इस निबंध की शुरुआत व्यक्ति के मुटाई (मोटापा) के संदर्भ में बताते हुए कहते हैं कि व्यक्ति जब छोटा होता है अर्थात जब बच्चे की तरह होता है तब कपड़े बढ़ते शरीर के अनुसार बना लेते हैं । जब व्यक्ति प्रौढ़ावस्था के बाद उम्र ढलने लगती है तो घटते शरीर के आनुसार कपड़े बनवालेते हैं । कहने का तात्पर्य यह है कि जब व्यक्ति का शरीरी स्वयं अपने पर लदा होता है तब तक दुबलाने लगता है । जब वह दूसरों पर लदा होता है वह मुटाता है । जैसे नेता जनता पर लदता है, साधु भक्तों पर, आचार्य महत्वाकांक्षी छात्रों पर और बड़े साहब जूनियरों पर ।

व्यक्ति पर सबसे अधिक प्रभाव चाहे वह अच्छा हो या बुरा हो धन और दौलत का ही रहा है जिस के फलस्वरूप पैसा ही भगवान बन गया है । इन्हीं पैसों के लिए व्यक्ति चापलूसी, बेईमानी जैसी प्रवृत्तियों को अपनाने लगा है । लेखक का कहना है कि यह प्रवृत्ति न केवल व्यक्तियों तक ही सीमित रही है बल्कि इस देश की मशीनें भी चापलूसी करने लगी हैं । जैसे रेलवे प्लाटफार्म पर रखिगाई वज़न तौलने की मशिने । मात्र 10 पैसे इस के मुँह में डालने पर वज़न के साथ-साथ तारीफों के पुल भी बांध देते हैं । टिकट के दूसरी तरफ भाग्य फल लिखा होता है जो 10 पैसे के बदले में आपकी चापलूसी की गई होती है । जिसमें लिखा होता है कि 'आप के विचार बहुत अच्छे हैं', ' आप उनके अनुसार कार्य करेंगे तो सफल होंगे' आदि । परंतु

लेखक का कहना है कि यह मशीनें भला चाह कर आपकी तारीफ नहीं कर रही है बल्कि इनको तो पैसा चाहिए।

पूरे देश में भ्रष्टाचार, अविश्वास और धोखेबाजी का माहौल पैदा हो गया है। व्यक्ति अपने स्वार्थ के कारण एक दूसरे के साथ बेईमानी, धोखेबाज़ी तथा चापलूसी जैसी प्रवृतियों को अपना रहा है। अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर उनका शोषण करना आदि एक तरह का व्यवसाय बन चुका है। इसका सबसे बड़ा प्रभाव आम आदमी पर ही रहा है जो अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी जीने के लिए हर समय जद्दोजहद कर रहा है। इस संदर्भ में लेखक अपने अनुभव को बताते हुए साधुओं पर व्यंग करते हैं कि दो-तीन वर्ष पहले किसी मठाधीश के स्वामी ने हमें यह बात समझा दी थी कि यह देहा तुच्छ वस्तु है। जबकि स्वयं अच्छे और गौर वर्ण के मंच पर बैठकर व्याख्यान दे रहे थे। वह इस तरह कह रहे थे कि यह शरीर मल मूत्र की खान है। यह गंदा शरीर मिथ्या है, नाशवान है। वे लोग मूर्ख हैं जो उसे स्वादिष्ट पकवान खिलाते हैं। उसे सजाते हैं। उस पर इत्र चुपड़ते है। वे भूल जाते हैं कि एक दिन यह देह मिट्टी में मिल जाएगा और इसे कीड़े खा जाएंगे। इतने में एक सेवक रबड़ी का गिलास लेकर आता है और स्वामी जी उसे घटक जाते हैं। ऐसे ढोंगी साधुओं के चलते न जाने कितने ही लोग बेईमानी के शिकार हो जाते हैं।

परसाई जी भारत में तेजी से फैल रही गंदी राजनीति का चित्रण किया है। तत्कालीन अर्थनीति पर व्यंग करते हुए कहते हैं कि आम आदमी अनाज की दुकानों के सामने हाथ में थैली लिए अपनी बारी का इंतजार करता है। जब तक उसका नंबर आता है तब तक दाम बढ़ जाते हैं और घर से लाएँ हुए पैसे कम पड़ जाते हैं। अब तो साधारण आदमी भी जहाजों का टाइम टेबल याद रखने लगा है। अमेरिका से जहाज आएगा तो इसमें हमारे लिए गेहूँ आएगा, जापान से जहाज आएगा तो कुछ चावल आएगा। स्थिति यह है कि अमेरिका में जहाज का हड़ताल हो जाती है तो इससे भारतीय जनता चिंतित हो जाती है। परसाई जी कहते हैं कि इस तरह की भुखमरी से हम में अंतर्राष्ट्रीय चेतना आयी है। अगर अकाल पड जाता है तो हर भारतवासी अपने को शिव-मानव समझने लगता है।

आज कल लोगों की मानसिकता में, सोच विचार में काफी बदलाव देखने को मिलता है। जब कोई व्यक्ति गरीब होता है तो उसे कोई नहीं पूछता है कि तुम गरीब क्यों हो ? ठीक उसी तरह जब मैं दुबला था तो तब किसी ने नहीं पूछा कि यह व्यक्ति दुबला क्यों है ? किसी ने संविधान में नहीं देखा कि इसमें नागरिकों के कर्तव्य में दुबला होना लिखा है या नहीं ? कोई जरा सा मोटा हो जाता है तो उस पर हजार उंगलियाँ उठने लगती है। कोई गरीब थोड़ा सा पैसा प्राप्त कर लेता है तो उस पर सभी लोगों की नजर पड़ जाती है। अमिर को देखकर लोग यह समझने लगते हैं कि या तो यह स्मगलर है या कहीं से काला पैसा या घूस लेने लगा है। इस लिए वह मोटा है। ऐसे लोगों का प्रयोगशाला में विश्लेषण करने पर पता चलता है कि वे आनज नहीं खाते है। वे चंदा, घूस, काला धन, दूसरों के मेहनत के पैसे या पराया धन खाते हैं।

विशेषता:-

इस निबंध में लेखक ने बेईमानी पर तीखा व्यंग करते हैं। वर्तमान समय में बेईमानी व्यापक स्तर पर फैल रही है। बेईमानी के अनेक रूप है। कार्यालयों में काम करने वाले कर्मचारियों से लेकर आध्यात्मिक संदेश देने वाले महंत तक बेईमानी कर रहे हैं। अपने द्वारा की गई बेईमानियों को छुपाने के लिए लोग अलग–अलग रास्ते ढूँढने लगे हैं।

यह एक व्यंग्य प्रधान निबंध है। इस की भाषा सरल, स्पष्ट, भावात्मक एवं विवेचनात्मक है। इस में हिंदी भाषा के अलावा संस्कृत, अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है।

2.6 शब्दावली :-

मुटाना = मोटापन, दुबलाना = दुबलापन, चापलूसी = शुशामदी , बधाई = शुभ कमाना, महत्वाकांक्षी = उच्च अभिलाषा, धांधली = हेरा-फेरी, चतुर = बुद्धिमान, लड़कपन = बचपना, ग्लानि = पछतावा, अफसोस

2.7 बोध प्रश्न :-

1) हरीशंकर परसाई का संक्षिप्त परिचय लिखिए ?
2) बेईमानी की परत का सारांश लिखिए ?
3) बेईमानी की परत निबंध में लेखक किन विषयों पर तीखा व्यंग्य करते हैं ?
4) 'मुँह में 10 पैसे डाल दो तो तारीफ का एक वाक्य बोल देती है'। इस कथन का विश्लेषण कीजिए?
5) आदमी का मोटा होना क्या बेईमान का प्रतीक है ? अपना आशय स्पष्ट कीजिए ?

2.8 संदर्भ सहित व्याख्या :-

किसी भी साहित्यिक रचना में कुछ ऐसी पंक्तियाँ होती है जो उस रचना के केन्द्रीय भाव को स्पष्ट करने में अधिक सहायक होती है। कुछ ऐसी पंक्तियाँ है जिनमें लेखक अपने विचारों को प्रस्तुत करता है। जिन्हें अधिक व्याख्यायित करने की आवश्यकता होती है। इस इकाई के अंतर्गत 'बेईमानी की परत' के कुछ महत्वपूर्ण अंशों का संदर्भ सहित व्याख्या करने जा रहे है। पहले 'प्रसंग' में लेखक के परिचाया के बारेमें बताएँगे। 'संदर्भ' में दिए गए पंक्तियों के केन्द्रीय भाव को स्पष्ट करेंगे। 'व्याख्या' में पंक्तियों का विस्तार से अर्थ समझने का प्रयास करेंगे। अतः 'टिप्पणी' में एक वाक्य में पंक्तियों के मूल भाव को या लेखक के आशया को स्पष्ट करेंगे।

1) शरीर जब तक दूसरों पर लदा है, तब तक मुटाता है। जब अपने ही ऊपर चढ़ जाता है, तब दुबलाने लगता है। जिन्हें मोटे रहना है, वे दूसरों पर लड़े रहने का सभीत कर लेते है –नेता जनता पर लदता है, साधु भक्तों पर, आचार्य महत्वाकांक्षी छात्रों पर और बड़ा साहब जूनियरों पर।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'बेईमानी की परत' नामक पाठ से दिया गया है जिसके लेखक हरिशंकर परसाई है । आप का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी नामक गांव में हुआ । आपने अपने समस्त साहित्य में सामाजिक राजनीतिक एवं आम आदमी के जीवन की विडंबनाओं एवं विसंगतियों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है । आपकी भाषा आम बोलचाल की भाषा है । आपने कई विधाओं में रचनाएँ की है जो हास्य व्यंग्य से ओत प्रोत है। आप हिंदी के पहले रचनाकार है जिन्होंने व्यंग्य को एक साहित्यिक विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से बाहर कर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा । इस लिए आप को हिंदी व्यंग्य साहित्य के भीष्मपितामहा कहा जाता है । 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

संदर्भ :- दूसरों पर लदे रहने की बात निबंधकार व्यक्त कराते हैं । दूसरों के आधार पर व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है ।

व्याख्या :- लेखक इन पंक्तियों में व्यक्ति के मुटाई (मोटापा) के संदर्भ में बताते हुए कहते हैं कि व्यक्ति जब छोटा होता है अर्थात जब बच्चे की तरह होता है तब कपड़े बढ़ते शरीर के अनुसार बना लेते हैं । जब व्यक्ति प्रौढ़ावस्था के बाद उम्र ढलने लगती है तो घटते शरीर के आनुसार कपड़े बनवालेते हैं । कहने का तात्पर्य यह है कि जब व्यक्ति का शरीरी स्वयं अपने पर लदा होता है तब तक दुबलाने लगता है । जब वह दूसरों पर लदा होता है वह मुटाता है । जैसे नेता जनता पर लदता है, साधु भक्तों पर, आचार्य महत्वाकांक्षी छात्रों पर और बाड़े साहब जूनियरों पर।

टिप्पणी :- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक आदमी के व्यक्तित्व का चित्रण करते हैं ।

2) भुखमरी से हम में अंतर्राष्ट्रीय चेतना आ गयी। अगर अकाल पड जाया, तो हर भारतीय अपने को शिव-मानव समझने लगेगा ।

प्रसंग :-

संदर्भ:- भारत की खाद्य समस्या पर परसाई जी चर्चा करते हैं ।

व्याख्या :- भारत में गरीबी और महंगाई दोनों साथ-साथ पलती है । वजन बढ़ना तो लड़कपन ही हरकत है । कोई भी प्रौढ़ आदमी इस जमाने में मोटा नहीं बन सकता । कहते हैं कि आम आदमी अनाज की दुकानों के सामने हाथ में थैली लिए अपनी बारी का इंतजार करता है और वहीं खड़े खड़े सूख जाता है। जब तक उसका नंबर आता है तब तक दाम बढ़

जाते हैं और घर से लाएँ हुए पैसे कम पड़ जाते हैं । अतः परिवार का पालन-पोषण कष्टदायक हो जाता है । अब तो साधारण आदमी भी जहाजों का टाइम टेबल याद रखने लगा है । अमेरिका से जहाज आएगा तो इसमें हमारे लिए गेहूँ आएगा, जापान से जहाज आएगा तो कुछ चावल आएगा। स्थिति यह है कि अमेरिका में जहाज का हड़ताल हो जाती है तो इससे भारतीय जनता चिंतित हो जाती है । परसाई जी कहते हैं कि इस तरह की भुखमरी से हम में अंतर्राष्ट्रीय चेतना आयी है। अगर अकाल पड जाता है तो हर भारतवासी अपने को शिव-मानव समझने लगता है ।

टिप्पणी:- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक देश की खाद्य समस्या, तत्कालीन अर्थ-नीति पर तीखा व्यंग्य करते हैं।

3) वे कहा रहे थे – यह मलमूत्र की खान, यह गंदा शरीर मिथ्या है, नाशवान है, क्षणभंगुर है। मूरख इसे स्वादिष्ट पकवान खिलते हैं, इसे सजाते हैं, इस पर इत्र चुपडते हैं। वे भूल जाते हैं कि एक दिन यह देह मिट्टी में मिलेगी और इसे कोड़े खयोंगे।

प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'बेईमानी की परत' नामक पाठ से दिया गया है जिसके लेखक हरिशंकर परसाई है। आप का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी नामक गांव में हुआ। आपने अपने समस्त साहित्य में सामाजिक राजनीतिक एवं आम आदमी के जीवन की विडंबनाओं एवं विसंगतियों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। आपकी भाषा आम बोलचाल की भाषा है। आपने कई विधाओं में रचनाएँ की है जो हास्य व्यंग्य से ओत प्रोत है। आप हिंदी के पहले रचनाकार है जिन्होंने व्यंग्य को एक साहित्यिक विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से बाहर कर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। इस लिए आप को हिंदी व्यंग्य साहित्य के भीष्मपितामहा कहा जाता है। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

संदर्भ:- आज कल के ढोंगी साधुओं के बेईमानी का चित्रण कराते है। जो अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से लोगों को

अपनी ओर आकर्षित कर उनका शोषण करते हैं।

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक अपने अनुभव को बताते हुए साधुओं पर व्यंग करते हैं कि दो-तीन वर्ष पहले किसी मठाधीश के स्वामी ने हमें यह बात समझा दी थी कि यह देहा तुच्छ वस्तु है। जबकि स्वयं अच्छे और गौर वर्ण के मंच पर बैठकर व्याख्यान दे रहे थे। वह इस तरह कह रहे थे कि यह शरीर मल मूत्र की खान है। यह गंदा शरीर मिथ्या है, नाशवान है। वे लोग मूर्ख हैं जो उसे स्वादिष्ट पकवान खिलाते हैं। उसे सजाते हैं। उस पर इत्र चुपड़ते है। वे भूल जाते हैं कि एक दिन यह देह मिट्टी में मिल जाएगा और इसे कीड़े खा जाएंगे। इतने में एक सेवक रबड़ी का गिलास लेकर आता है और स्वामी जी उसे घटक जाते हैं। ऐसे ढोंगी साधुओं के चलते न जाने कितने ही लोग बेईमानी के शिकार हो जाते हैं।

टिप्पणी:- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ढोंगी साधुओं पर व्यंग्य करते हैं।

4) उनके भोजन का एक प्रयोगशाला में विश्लेषण करने पर पता चला कि वे अनाज नहीं खाते थे, चन्दा, घूस, काला पैसा, दूसरे की मेहनत का पैसा या पराया धन खाते थे।

प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'बेईमानी की परत' नामक पाठ से दिया गया है जिसके लेखक हरिशंकर परसाई है। आप का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी नामक गांव में हुआ। आपने अपने समस्त साहित्य

में सामाजिक राजनीतिक एवं आम आदमी के जीवन की विडंबनाओं एवं विसंगतियों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है । आपकी भाषा आम बोलचाल की भाषा है । आपने कई विधाओं में रचनाएँ की है जो हास्य व्यंग्य से ओत प्रोत है। आप हिंदी के पहले रचनाकार है जिन्होंने व्यंग्य को एक साहित्यिक विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से बाहर कर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा । इस लिए आप को हिंदी व्यंग्य साहित्य के भीष्मपितामहा कहा जाता है । 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

संदर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक बेईमानी का पैसा खाने वाले घूसखोरों के बारे में बतते हैं ।

व्याख्या:- आज कल लोगों की मानसिकता में, सोच विचार में काफी बदलाव देखने को मिलता है । जब कोई व्यक्ति गरीब होता है तो उसे कोई नहीं पूछता है कि तुम गरीब क्यों हो ? ठीक उसी तरह जब मैं दुबला था तो तब किसी ने नहीं पूछा कि यह व्यक्ति दुबला क्यों है ? किसी ने संविधान में नहीं देखा कि इसमें नागरिकों के कर्तव्य में दुबला होना लिखा है या नहीं ? कोई जरा सा मोटा हो जाता है तो उस पर हजार उंगलियाँ उठने लगती है । कोई गरीब थोड़ा सा पैसा प्राप्त कर लेता है तो उस पर सभी लोगों की नजर पड़ जाती है । आमिर को देखकर लोग यह समझने लगते हैं कि या तो यह स्मगलर है या कहीं से काला पैसा या घूस लेने लगा है। इस लिए वह मोटा है। ऐसे लोगों का प्रयोगशाला में विश्लेषण करने पर पता चलता है कि वे आनज नहीं खाते है । वे चंदा, घूस, काला धन, दूसरों के मेहनत के पैसे या पराया धन खाते हैं ।

टिप्पणी:- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक घूसखोरों को कटु आलोचना करते हैं ।

उपसंहार:– बेईमानी की परत नामक पाठ से लेखक देश में बड़ाती हुई बेईमानी, भ्रष्टाचार, चापलूसी का चित्रण करते हैं । चंदा, घुस, काला धन, दूसरों के मेहनत के पैसों को खाकर मोटा ने वालों की तीखी आलोचना करते हैं । अतः लोगों पर बेईमानी की परत किस हद तक चाड चुकी है इसका चित्रण लेखक ने व्यंग्यात्मक ढंग से चित्रित करने का प्रयास किया है।

1. मध्यवर्ग के लोग कपड़े कैसे सिलवाते हैं ?
2. आदमी क्यों मोटा होता है ? परसाई ने उसे किससे जोड़ा है ।
3. महंत कैसे बेईमानी करते है ?
4. भारत के लोग विदेशों से अनाज के आने के टाइमटेबल क्यों याद करते हैं ?
5. 'बेईमान की परत' शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए ।
6. "बेईमान की परत" नामक कहानी का सारांश लिखिए ।

Dr.S. Anand,
Department of Hindi,
St.Mary's Junior College, Hyderabad
Cell No. 8465042368.

3. एच. आई. वी. /एड्स

मूल लेखक : डॉ. प्रकाश भातल बंड़े
डॉ. रमन गंगा खडेकर
अनुवाद: श्रीमति साधना मौर्य

3.1 उद्देश्य
3.2 प्रस्तावना
3.3 लेखक का परिचय
3.4 पाठ का परिचय
3.5 पाठ एच. आई. वी./ एड्स का सारांश
3.6 एचआईवी/एड्स के बारे में जानकारी
3.7 संदर्भ सहित व्याख्या
3.8 कठिन शब्दावली
3.9 बिध – प्रश्न
3.10 सहायक ग्रंथ सूची

3.1 उद्देश:

1. पाठ एच. आई. वी. / एड्स एक वैज्ञानिक निबंध है।
2. यह बीमारी बीसवीं सदी की लाइलाज हैं
3. भारत में भी यह बीमारी विशेष तेजी से फेल रही हैं। इस की जानकारी लेनी जरूरी हैं।
4. इस में एच. आई. वी. / एड्स का इतिहास, भारत में इसका आगमन और फैलाव को लेखक ने बताया गया हैं।
5. इस से प्रति फैली भ्रम / भ्रांतियों का परिचय इस पाठ में लिखा गया है।
6. मानव सभ्यता के विकास को समझते हुए अंधविश्वास, क्षणिक आनंद से जीवन किस तरह बदलाव होता है इस का सुझाव ही इस पाठ का उद्देश्य है।
    a. लेखिका लोकप्रिय अनुवादिका है।
    b. उनका उद्देश्य एड्स संक्रमणिक बीमारी से मुक्ती पाने का प्रयास ।

3.2 प्रस्तावना :

प्रस्तुत लेख 'एच. आई. वी. / एड्स' एक वैज्ञानिक निबंध हे। 'एच. आई. वी. / एड्स' बीसवीं सदी की लाइलाज बीमारी है। यह बीमारी भारत में भी विशेष तेजी से फैल रही है। लाइलाज होने के कारण इस की जानकारी लेना ही सबसे बड़ा इलाज है। इस आशय से स्नातकों को यह पाठ पढ़ाया जा रहा है। इस में मुख्यत: एच. आई. वी. / एड्स का इतिहास, भारत में इसका आगमन और फैलाव, इस बीमारी के होने पर होने वाले लक्षण, इस विषाणु का संक्रमण कैसे होता हे,

इस बीमारी के प्रति फैली भ्रम – भ्रांतियों का परिचय आदि मुद्दे चर्चित हैं। सरल भाषा में लिखा गया यह लेख सुबोधगम्य है।

3.3 लेखक का परिचय

हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन की कमी है। वैज्ञानिक खोजों, तकनीकी से संबंधित अधिकांश विषय प्रायः अंग्रेजी में प्रकाशित होते हैं। बाद में उनका हिन्दी अनुवाद किया जाता है। 'एच. आई. वी. / एड्स' के संबंध में भी यही हुआ है। यह बीसवीं सदी की सबसे भयंकर बीमारी रही है। इससे संबंधित पहली जानकारी अंग्रेजी में ही प्राप्त होती है। इससे संबंधित शोधकार्य भी पहले अंग्रेजी में हुए हैं। प्रस्तुत पुस्तकांश के लेखकों ने भी मूल पुस्तक को अंग्रेजी में लिखा है। वे लेखक हैं – डॉ. प्रकाश भातल बंड़े और डॉ. रमण गंगा खडेकर। दोनों 'यूनिसेफ' की परियोजना में काम करने वाले रहे हैं। 'यूनिसेफ' की परियोजना के तहत उन्होंने पहले अंग्रेजी में पुस्तक लिखी है। उनके अनुसार यह एड्स संक्रमणिक बीमारी के संदर्भ में प्रयास था। 'यूनिसेफ' की मुंबई शाखा के सहयोग से यह संपन्न हुआ।

लेखिका श्रीमती साधना मौर्य ने अंग्रेजी पुस्तक का 'यौवन की दहलीज पर' शीर्षक से हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत किया है। श्रीमती साधना मौर्य लोकप्रिय अनुवादिका है। अंग्रेजी से हिन्दी और अंग्रेजी से मराठी में अनुवाद करने का विशेष अनुभव उनको प्राप्त है। इन्होंने स्नातक स्तर की शिक्षा विज्ञान से प्राप्त की। बाद में एम.ए (अर्थशास्त्र तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी) पूरा किया। हिन्दी अधिकारी व अनुवाद करने के पद पर फिलहाल कार्यरत हैं।

3.4 पाठ का परिचय

एच. आई. वी संक्रमण शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को इस हद तक कम कर देता है कि इसके बाद शरीर अन्य संक्रमणों से लड़ पाने में अक्षम हो जाता है। इस प्रकार के संक्रमण को "अवसरवादी" संक्रमण कहा जाता है क्योंकि ये अवसर पाकर कमजोर हो रहे प्रतिरक्षा प्रणाली पर हावी हो जाते हैं जो बाद में एक बीमारी का रूप ग्रहण कर लेती है।

इस विषय पर अधिक जानकारी के लिये एड्स (AIDS) का निदान, एड्स (AIDS) के लक्षण और एच.आई.वी (HIV) संक्रमण एवं बीमारियों के लिये डब्ल्यूएचओ (WHO)

जब कोशिकाओं की संख्या 200 कोशिकाएं प्रति के आवश्यक स्तर से नीचे गिर जाती है, तो कोशिकाओं की मध्यस्थता से प्राप्त प्रतिरोधक क्षमता समाप्त हो जाती है और अनेक प्रकार के

अवसरवादी रोगाणुओं से होने वाले संक्रमण दिखाई देने लगते हैं। प्रारंभिक संक्रमणों में अक्सर भार में मध्यम और अस्पष्ट कमी, श्वसन तंत्र के प्रतिवर्ती संक्रमण (जैसे साइनसाइटिस (sinusitis), ब्रॉन्काइटिस bronchitis), ओटाइटिस मीडिया (otitis media), फैरीन्जाइटिस (pharyngitis)), प्रोस्टेटाइटिस (prostatitis), त्वचा पर फुन्सियां और मुंह के छाले शामिल होते हैं।

3.5 पाठ एच. आई. वी./ एड्स का सारांश

एच. आई. वी./ एड्स : इतिहास

सन् 1981 में, अमेरिका के लास एंजिल्स शहर के रोगियों में, डॉक्टरों को कुछ युवा लोगों में एक विशिष्ट लक्षण दिखाई दिये । वहाँ पर समलिंगी संभोगी संभोग करने वाले कुछ युवा लोगों में एक विशिष्ट प्रकार का न्यूमोनिया (न्यूमोसिस्टिस केरिनाय न्यूमोनिया) और त्वचा का कर्करोग या कैंसर (कॉपोसीज सारकोमा) देखा गया । आमतौर पर यह रोग उन लोगों में पाया जाता था, जिनमें शरीर की रोग प्रतीकार शक्ति कम थी या जो लोग बूढ़े थे । वैज्ञानिकों को शरीर की नैसर्गिक रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम करने वाले कोई भी कारण नहीं मिले । यह अनुमान लगाया गया कि शायद यह समलिंगी व्यवहार के कारण हुआ हो । इस रोग को गे-रिलेटेड इम्युनोडेफिशिएन्सी सिंड्रोम (Gay-related mmunodeficiency syndrome या GRID) नाम दिया गया ।कुछ समय के बाद वैसे ही लक्षण विषमलिंगी संभोग करने वाले, शिराओं से मादक द्रवों का सेवन करने वाले और हीमोफीलिक (जिन्हें आनुवांशिक रक्तदोष के कारण बार-बार रक्त देना पड़ता है) लोगों में भी दिखाई दिए । ये लोग समलिंगी संबंध रखने वाले नहीं थे । तब वैज्ञानिकों ने सोचा कि यह रोग प्रतिकारक शक्ति कम करने वाले किसी विषाणु से होता होगा और इस तरह इसका नाम बदलकर एक्वाइयर्ड इम्युनोडेफिशिएंसी सिंड्रोम (Acquired Immunodeficiency Syndrome-AIDS) रखा गया ।

सन् 1983 मेम फ्रान्स के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. ल्यूक माँटग्नियर ने इस रोग के विषाणु की खोज की । उसी समय अमेरिका के डॉ. राबर्ट गेलो को भी यही विषाणु दिखाई दिया । शुरुआत में इस विषाणु को अलग-अलग वैज्ञानिकों ने अलग-अलग नाम दिए । लेकिन बाद में इसे 'ह्यूमन इम्युनोडेफिशियन्सी वायरस (एच.आई.वी) नाम दिया गया, जिसका अर्थ है, मानव शरीर की रोग प्रतिकारक शक्ति कम करने वाला विषाणु । एच.आई.वी पर नियंत्रण के लिए गुप्तरोगों पर नियंत्रण करना जरूरी है । इन दोनों के लिए समाज में नियमित और आवश्यक रूप से जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है । साथ ही देश के राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम में एड्स को उच्च प्राथमिकता देने की भी आवश्यकता है ।

भारत में पहली बार एच.आई.वी. संक्रमण कब देखा गया और अब तक यह कितना फैल चुका हे?

अप्रैल 1986 में सर्वप्रथम मद्रास की कुछ वेश्याओं में यह रोग पाया गया । दुर्मा दोगन मुम्बई में एड्स का पहला भारतीय रोगी मिला । यह व्यक्ति हृदय रोग की शस्त्रक्रिया के लिए विदेश गया था । शस्त्रक्रिया के समय उसे जो रक्त दिया गया था, वह दुर्भाग्यवश एच.आई.वी. संक्रमित था , जिससे उसे एड्स हो गया था ।

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संस्था (NACO) के 2000 के अंकड़ों के अनुसार भारत के करीब 38 लाख लोग एच.आई.वी. रोग से ग्रासित हैं । महाराष्ट्र के लगभग सभी जिलों में एच.आई.वी. संक्रमित रोगियों, की रिपोर्ट आयी हैं ।

एच.आई.वी. मुख्यतया सेक्स से फैलने वाला एक रोग हे। इसलिए कुछ गुप्तरोगों की तरह ही यह महामारी भी तीन अवस्थाओं से गुजरती है। इस महामारी की प्राथमिक अवस्था में यह रोग वेश्याओं में दिखाई दे देता है। दूसरी अवस्था में इन वेश्याओं के ग्राहकों में एच.आई.वी. के लक्षण दिखाई देते हैं व तीसरी अवस्था में वेश्याओं के ग्राहकों की पत्नी और बच्चे भी इस रोग से ग्रस्त हो जाते हैं। ऐसा लगता है कि पश्चिम भारत के अधिकतर प्रमुख शहरों में यह रोग अपनी तीसरी अवस्था तक पहुँच चुका है।

एड्स के लक्षण व चिन्ह

एच.आई.वी. और एड्स में क्या अंतर है ?

एच.आई.वी. का अर्थ है, ह्यूमन इम्यूनों इंम्युनो – डिफीशियन्सी वायरस। यह एड्स केलिए जिम्मेदार विषाणु का नाम है। एड्स, 'अक्वायर्ड इम्युनो डिफीशियन्सी सिंड्रोम' का संक्षिप्त रूप है। ये विषाणु मनुष्य के शरीर में प्रवेश करने के बाद सीधे सफेद रक्त कोशिकाओं पर हमला कर देते हैं। सफेद रक्त कोशिकाएँ अपने शरीर कि सुरक्षा प्रक्रियाओं को समन्वित करती हैं तथा शरीर का विभिन्न संक्रमणों, जैसे – विषाणु, बैक्टोरिया और फंगस (कवक) आदि से संरक्षण करती हैं।

शरीर में प्रवेश के बाद विषाणु चुपचाप पुनरुत्पादन का कार्य करता रहता है। एच.आई.वी. के संक्रमण के बाद अरम्भिक अवस्था में, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता, इस विषाणु से लड़ती रहती है। इसलिए करीब 11 वेश तक एड्स के कोई भी लक्षण दिखाई नहीं देते हैं। इस अवस्था को 'संक्रामिक अवधि' या एच.आई.वी. रोग की प्रारंभिक अवस्था कहते हैं।

विषाणु के कारण धीरे – धीरे सीडी 4 लिंफोसाइट की संख्या कम होती जाती है। कुछ समय के बाद ये बहुत ही कम हो जाती है। यह समय अलग– अलग लोगों में अलग – अलग हो सकता है। जब सीडी – 4 की संख्या 200 कोशिका प्रति घनमीटर के नीचे पहुँच जाती है, तब रोग के लक्षण दिखाई देना शुरू हो जाते हैं। सीडी–4 कोशिकाओं की कमी के कारण व्यक्ति किसी भी संक्रमण, विषाणु, बैक्टोरिया या कवक की चपेट में आसानी से आ जाता है। क्षयरोग के कीटाणु, यदि शरीर में सुप्त अवस्था में होते हैं, उसे 'अवसरवादी संक्रमण' कहते हें। इसतरह कम प्रतिरोधक शक्ति वाले लोग, इन जीवाणुओं के शिकार हो जाते हैं।

जब एच.आई.वी. के कारण कुछ विशेष लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं, तब वह अवस्था एड्स कहलाती है। आमतौर पर रोगी लगभग दो साल के भीतर 'अवसरवादी संक्रमण से ग्रसित हो जाते हैं 1

यह जरूरी है कि लक्षण –रहित अवस्था में एड्स शब्द का प्रयोग प्राणनाशक रूप मे, नहीं करना चाहिए, क्यों कि इससे रोगी को यह लगता है कि वह कुछ ही वर्षों में मरने वाला है।

एड्स के बाह्य लक्षण क्या हैं?

एड्स के लिए डॉक्टर के व्दारा परीक्षण किया जाना आवश्यक है । रोगी को खुद ही लक्षणों को देखकर यह नहीं समझना चाहिए कि उसे एड्स रोग हो गया है, क्योंकि कई बार ऐसा भी हो सकता है कि कोई दूसरी ही बीमारी हो । एड्स के कुछ लक्षण इस प्रकार हैं –

1. बिना वजह ही अचानक वजन का कम हो जाना, मूल वजन का 10 प्रतिशत तक वजन कम होना, हर माह 5 किलो से ज्यादा वजन कम होना, और यह सब बिना किसी उचित कारण के, जैसे कम अहार लेना, अधिक तनाव या अन्य बीमारियाँ, जिनकी वजह से भूख कम लगती है ।

2. एक महीने से ज्यादा तक जुलाब का होना ।

3. एक महीने से ज्यादा तक बुखार और खाँसी का चलना ।

4. बुरशी नामक कवक के संक्रमण (कैंडीड़िएसिस) से मुँह में व्रण छालों के निर्माण होने से गर्म व मसालेदार भोजन खाने में तकलीफ होना ।

5. त्वचा का कर्करोग (कैंसर) और हरपीस का संक्रमण होना ।

उपरिलिखित लक्षणों की उपस्थिति में और यदि व्यक्ति का पूर्व – इतिहास जोखिम भरे व्यवहार का रहा है, तो ऐसी स्थिति में डॉक्टर के पास जाकर रोग का निदान आवश्यक है । परंतु ऐसे समय में एड्स रोग हो ही गया है, ऐसा समझ कर घबरा जाने की जरूरत नहीं है । यह स्थिति 'एड्स फोबिया' भी कहलाती है ।

एच.आई.वी. विषाणु का संक्रमण (ये विषाणु शरीर में कहाँ रहते हैं ?)

मनुष्य के शरीर में ये विषाणु सफेद रक्त कोशिकाओं (सी.डी.-8 लिंफोसाईट्स) और कुछ मज्जा कोशिकाओं में रहते हैं । इन कोशिकाओं में प्रवेश का एक निश्चित स्थान होता है (सफेद रक्त कोशिकाओं के अंदर जाने का दरवाजा), जिसे सी.डी.- 4 रेसेप्टर कहा जाता है । ये रेसेप्तरी, विषाणु को आकर्षित करते हैं और इस तरह एच.आई.वी. विषाणु के शरीर में प्रवेश में सहायक होते हैं । सी.डी.- 4 रेसेप्टर, शरीर की बहुत-सी कोशिकाओं में पाया जाता है । एच.आई.वी. विषाणु इन कोशिकाओं में प्रवेश करके, दूसरी संवेदनशील कोशिकाओं को भी संक्रामित कर देता है । एच.आई.वी. विषाणु सी.डी.- 4 लिंफोसाइट्सऔर कुछ मज्जा कोशिकाओं की ओर ही अधिक आकर्षित होता है, इसलिए इसकी उपस्थिति करीब-करीब सभी अंगों में और स्त्रावों में देखी जा सकती है । यद्यपि इसकी मात्रा, रक्त, वीर्य और योनि के स्त्राव की अपेक्षा, अन्य शारीरिक स्त्रावोंमें बहुत कम होती है । रक्त और योनि व जननांगों के स्त्रावों की तुलना में, वीर्य में इन विषाणुओं की मात्रा 50 गुना ज्यादा होती है । इन कारण एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति के रक्त, वीर्य या योनि स्त्राव के लेन-देन से एच.आई.वी. फैलता है । शरीर के अन्य स्त्रावों में, विषाणुओं का प्रमाण बहुत कम होता है, इसलिए शरीर के अन्य स्त्रावों से इस विषाणु के प्रसार की संभावना बहुत कम ही होती है

इस विषाणु संक्रमन किस तरह से होता है ?

एच.आई.वी. के विषाणु वीर्य, योनि व जननांगों के स्त्रावों और रक्त में पर्याप्त मात्र में पाये जाते हैं। यदि एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति का रक्त, वीर्य या योनिस्त्राव, स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करता है, तो इस तरह वह भी एच.आई.वी.संक्रमन से ग्रस्त हो जाता है। संभोग में वीर्य और योनिस्त्राव दोनों का आदान-प्रदान होता है, यदि एच.आई.वी.संक्रमित व्यक्ति से बिना कंडोम का उपयोग किए हुए संभोग किया गया, तो इस विषाणु के दूसरे व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करने की पूरी संभावना रहती है। बाधित व्यक्ति का रक्त, स्वस्थ व्यक्ति को देने से भी एच.आई.वी. फैलता है। एच.आई.वी.ग्रसित व्यक्ति को इंजक्शन देने के लिए जिस सुई का उपयोग किया गया था, उसी सुई को बिना जीवाणु रहित किए आँय स्वस्थ व्यक्ति को इंजेक्शन देने से भी संक्रमण की संभावना रहती है। संक्रमण ग्रसित गर्भवती माता से यह संक्रमण बच्चे को भी हो जाता है। शिराओं से मादक द्रव्यों का सेवन करने वाले व्यक्तियों में एक ही सुई का उपयोग जब अनेक लोग करते हैं, तब उससे भी एच.आई.वी. फैलने की संभावना बढ़ जाती है।

एच.आई.वी. फैलने के अनेक मार्गों में संभोग का माध्यम से सबसे सुगम व महत्वपूर्ण है। रक्त देना या इंजेक्शन लेना तो जीवन में कभी - कभी ही होता है। जब कि सहस क्रियाओं के होने के अवसर बहुत अधिक होते हैं। अन्य गुप्तरोगों से जननेन्द्रियों पर होने वाले व्रण से इस विषाणु का शरीर में प्रवेश आसानी से हो जाता है, इसलिए गुप्तरोगों से ग्रसित व्यक्ति में एच.आई.वी. संक्रमण की संभावना अधिक होती है।

एच.आई.वी. विषाणु का संक्रमण किस माध्यमों से नहीं होता है ?

एच.आई.वी. संक्रमण निम्नलिखित माध्यमों से नहीं होता है :

1. हाथ मिलाने से।
2. एक साथ बैठने से या यात्रा करने से।
3. खाँसने से या छींकने, आँसूओं से।
4. आलिंगन करने से, चुम्बन से।
5. एच.आई.वी. बाधित व्यक्ति व्दारा उपयोग किये गये तरणताल, तालाब, टेलीफोन या शोचालय का उपयोग करने से।
6. एच.आई.वी. बाधित व्यक्ति के उपयोग किये गये बर्तन, कप, प्लेट, चादर या उसके पहने हुए कपड़े का इस्तेमाल करने से।
7. पीड़ित के साथ खाने-पीने से।
8. मच्छरों या खटमलों या अन्य कीड़ों के काटने से।
9. एच.आई.वी. बाधित व्यक्ति की सेवा करने से।

10. किसी भी प्रकार के अनजाने में हुये सम्पर्क से, जैसे बस/ट्रेन में धक्का लगना, पीठ पर हाथफेरना/थपथपाना आदि।
11. रक्तदान करने से।

3.6 एचआईवी/एड्स की विशेषताएँ।

◦ विश्व के हर देश के लोग एचआईवी/एड्स (एक्वायर्ड इम्यून डेफिशियेन्सी सिन्ड्रोम) से संक्रमित हैं। एचआईवी/एड्स दिनों-दिन वैश्विक संकट बन रहा है।

- एचआईवी/एड्स अमेरिका से अन्य देशों को फेला है।
- यह बीमारी अधिकतर युवाओं को प्रभावित कर रही है।
- युवा महिलाओं को विशेषकर खतरा होता है।
- बाह्य आकर्षण का परिणाम हमेशा बुरा ही होता है ।
- ह्यूमन इम्युनो डेफिशियेन्सी वायरस (HIV) के कारण एड्स होता है। एच.आई.वी शरीर की सुरक्षा प्रणाली की अन्य बीमारियों से लड़ने की शक्ति को क्षति पहुँचाता है।
- दवाइयाँ एच.आई.वी/एड्स के साथ जी रहे लोगों को लंबे समय तक जीने के लिये मदद करती हैं, लेकिन इस बीमारी का अब तक कोई भी टीका या इलाज नहीं है।
- एच.आई.वी/एड्स को फैलने से रोकने के लिये सबसे प्रभावशाली नीति जानकारी का प्रसार है। हर देश में हर व्यक्ति का यह जानना बहुत आवश्यक है कि इस बीमारी से बचाव कैसे हो सकता है।
- कंडोम, एच.आई.वी के यौन संक्रमण से बचा सकते हैं।
- मनुष्य को हर तरह से निष्ठावान बनकर समाज में अच्छा नाम कमाना है।
- जो लोग एच.आई.वी/एड्स के साथ जी रहे हैं या इससे प्रभावित हैं, उन्हें विशेष देखभाल और सहानुभूति की आवश्यकता है। एच.आई.वी/एड्स के लिये सेवाएँ और कार्यक्रमों की पहुँच को बाधित करने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अवरोधों को हटाने के लिये उपाय किये जाने चाहिये।
- ईश्वर के व्दार पर देर है अंधेर नहीं, कम-से-कम अब भी आभास किया और कराया जा सकता है कि संक्रमण रोगों के गिरफत में न आये। जिससे लज्जाजनक जीवन बिताना पड़े।
- मनुष्य को अपना जीवन हमेशा उदात्ता विचारों भावो, भावनाओं, सतसंगति, आध्यात्मिक चिंतन - मनन में लगाना चाहिए विशेषकर नवयुवकों को, इससे प्राप्त होने वाला आनंद व असीम है।

3.7 संदर्भ - सहित व्याख्याएँ (Annotations)

गद्यांश : इन रोगों के लिए समाज में नियमित और आवश्यक रूप से जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है।

प्रसंग : यह उद्धरण के मूल लेखक डॉ. प्रकाश भातल बंडे जी और डॉ. रमण गंगा खड्रेकर व्दारा लिखित एच.आई.वी/एड्स नमक पाठ से उद्धत है। इसका अनुवाद श्रीमती साधना मौर्य ने किया।

संदर्भ : बीसवी सदी में यह लाइलाज बीमारी हें। इसके प्रति मुख्यत: नवयुवकों में जागरूकता लाना आवश्यक है।

व्याख्या: यह महामारी बीमारी बीसवी सदी में अमेरिका से आरम्भ हुई है। और धीरे- धीरे हवा के झोंके की भाँति अन्य देशों में भी फेल गई है। इसका प्रमुख कारण है कि मनुष्य का मनसा, वाचा, कर्मणा कर्मनिष्ठ, सत्यनिष्ठ, धर्म निष्ठ न होना है। बाह्य प्रलोंभनों की ओर बेकार में आकर्षित होने का दुष्परिणाम यही होता है। इस सत्य को जानने के प्रति जन-सामन्य ही नहीं अपितु सभी वर्गों के लोगों में जागरूकता लाना आवश्यक है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप इस तरह निष्ठा पूर्वक रहेगा तो किसी भी सरकार को इसके संक्रमण की रोकथाम के लिए करोड़ों रुपए व्यर्थ खर्च करने की आवश्यकता नहीं होता है।

टिप्पणी: 1. मनुष्य को धर्म निष्ठ, कर्मनिष्ठ का पालन करना चाहिए।

1. जन - कल्याण मेम योगदान देना है न कि समाज को पतन कि ओर नहीं।
2. आज के नवयुवक कल के उज्जवल भविष्य रूपी इमारत है अत: उन्हें शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक दृष्टि से स्वच्छ और स्वस्थ्य रहना है।
3. स्वयं संक्रामक रोगों से सचेत रहते हुए, अन्य नागरिकों को भी सचेत रहने के लिए बाध्य करना चाहिए।
4. मनुष्य स्वयं निर्णय कर सकता है कि हानिकारक जीवन व्यतीत करें या सुख - समृद्धि वाला जीवन ?

3.8 कठिन शब्दावली

1. आमतौर = साधारणतः, समान्यतः, Usually
2. प्रतिरोधक क्षमता = रोगों से लड़ने की क्षमता, Resistance power, stamina
3. विषाणु = विष पूरित कण, Deseased cells
4. जागरूकता = ज्ञानोदय, Awareness
5. नियंत्रण = रोकथाम, Prevention
6. सफेद रक्त कोशिकाएँ = White blood cells
7. पुनरुत्पादन = पुनः निर्माण, Reproduction, reproduce
8. प्राणनाशक = जीवन के लिए हानिकारक, Life - risk

9. आहार = भोजन, Diet, food
10. जोखिम = खतरा, Risk, trouble, problem
11. संभावना = होने जैसे लगना, Expectance.

3.9 अभ्यासार्थ – प्रश्न

1. एच.आई.वी/एड्स के इतिहास पर प्रकाश डालिए।
2. एच.आई.वी/एड्स भारत मेम कब और कितना फैला है, स्पष्ट कीजिए।
3. एच.आई.वी/एड्स लक्षणों पर प्रकाश दिली।
4. एच.आई.वी/एड्स के विषाणु कैसे फैलते हैं।
5. एच.आई.वी/एड्स विषाणुओं का संक्रमण किस माध्यम से नहीं होता है ?

3.10 सहायक ग्रंथ सूची

1. एच.आई.वी/एड्स (21 वी शताब्दी का सब से बड़ा झूठ) - डॉ. विश्वरूप राय चौदरी
2. एच.आई.वी और एड्स शिक्षा – डॉ. अरुण शर्मा
3. एच.आई.वी/एड्स (eBook) – विश्वरूप राय चौदरी
4. आप के अवचेतन मन की शक्ति - डॉ. जोसेफ मर्फी
5. एड्स और HIV के बारें में जानिए – डॉ. वीर सिंह

******

Sk. Baji,
Department of Hindi,
Hindu College, Guntur,
Cell No: 9700107983.
Mail.ID: hinducpllege786hindi@gmail.com

4.भूख हड़ताल

इकाई की रूपरेखा :-

4.1. उद्देश्य
4.2. लेखक परिचय
4.3. प्रस्तावना
4.4. भूख हड़ताल – कहानी
4.5. कहानी की समीक्षा
4.6. कहानी की प्रमुख पत्रों का चरित्र – चित्रण
4.7. कहानी का उद्देश्य
4.8. स्मरण रखने योग्य बातें
4.9. बोध प्रश्न
4.10. कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.1. उद्देश्य:

कहानी के कहानीकार श्री बालशौरी रेड्डी दक्षिण के श्रेष्ठ अहिंदी भाषी हिन्दी लेखक है। प्रस्तुत कहानी में आप समाज की बुनियादी समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं। कहानी में लेखक एक पात्र है। आपको मद्रास में एक मीटिंग में भाषण के लिए जाना था, किंतु बस – स्टेशन सुन – सान रह गया। उस दिन परिवहन विभागवालों ने हड़ताल किया था। अत: लेखक को बस – स्टेशन में ही किसी गाड़ी केलिए कुछ समय तक इंतजार करना पड़ता है।

4.2. लेखक परिचय:

श्री बालशौरी रेड्डी जी का जन्म 1 जुलाई 1928 को आंध्रप्रदेश के कड़पा जिले के गोल्लल गूडुर नामक गाँव में हुआ। नेल्लुरु, कड़पा, इलाहाबाद और वाराणसी से इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। दक्षिण के श्रेष्ठ अहिन्दी भाषी हिन्दी सहित्यकारों में बालशौरी रेड्डी जी एक है। दक्षिण में राष्ट्रभाषा हिन्दी को समृद्द एवं लोकप्रिय बनाने में श्री रेड्डी जी का योगदान अविस्मरणीय है। उनकी मातृभाषा तेलुगु है, फिर भी राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति उनके हृदय में श्रद्धा और प्रेम की भावना कूट – कूट कर भरी हुई हैं। अत: हिन्दी को ही उन्होंने अपनी लेखनी का माध्यम बनाया है। आंध्र वासी होने के कारण भी रेड्डी जी आंध्र के समाज से

बहुत ही प्रभावित हुए हैं। अत: उनकी रचनाओं में दक्षिण के सामाजिक, पारिवारिक, संस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन का स्वाभाविक चित्रण परिलक्षित होता है। अपनी हिन्दी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने दक्षिण के जन – जीवन एवं संस्कृति से हिन्दी पथकों का परिचयकराया है। उनका यह कार्य रष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

'शबरी', 'जिन्दगी की राह', 'यह बस्ती', 'ये लोग', 'भग्न सीमाएं', 'बैरिस्टर', 'स्वप्न और सत्य', 'प्रकाश और परछाई', 'लकुमा', 'धरती मेरी माँ', 'प्रोफेसर', 'वीर

केसरी', 'दावानल' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। उनकी कई सैकड़ों कहानियां प्रकाशित हुई। इन्होंने तेलुगु में भी कुछ उपन्यास और कई कहानियां प्रकाशित की। 'पंचामृत', 'आंध्र भारती', 'तेलुगु साहित्य का इतिहास', तेलुगु वाङ्मय :विविध विधाएं' जैसी संस्कृति एवं साहित्य से संबंधित पुस्तकों का भी सृजन किया, श्री रेड्डी जी ने कई उपन्यास एवं नाटकों का हिन्दी से तेलुगु में और तेलुगु से हिन्दी में अनुवाद संपन्न किया हें। श्री रेड्डी जी कई सालों तक हिन्दी 'चंदमामा' का साप[हल संपादन किया। संप्रति श्री रेड्डी जी मद्रास में रहते हुए अपना साहित्य – सृजन में लगे हुए हैं।

4.3. प्रस्तावना:

('भूख हड़ताल' की कहानी में एक स्वाभिमान जीवन बितानेवाले एक लकड़हारे की मनोभावना, बाधा का चित्रण है। लकड़हारा हर दिन जलावन बेच कर जीविका चला लेता है। एक दिन परिवहन विभाग वालों ने हड़ताल किया है। उस दिन बस – स्टेशन सूना – सूना रह गया । कहानीकार मद्रास मीटिंग में जाने केलिए बस – स्टेशन आता है, परिस्थिति देखकर परेशान होता है कि मीटिंग में कैसे पहुंचे । इतने में लकड़हारा आकार कहानीकार से अनुरोध करता है कि जलावन खरीदें। लकड़हारा सस्ते में देना चाहता है फिर भी कहानीकार लेना नहीं चाहता क्योंकि उस समय वह मीटिंग केलिए जा रहा था । भूखा लकड़हारे की विवशता को जानकर कहानीकार उससे कहता है कि इस समय तो मैं जलावन नहीं ले सकता, लेकिन नारायणराव से कहता है, "तुम ये दो रुपये ले लो लकड़ी भी साथ में ले जाओ"। लेकिन स्वाभिमान नारायण कहता है – बाबू जी मुझ पर आपको मेहरबानी दिखाने की जरूरत नहीं, हम कोई भिखमाँगे नहीं हैं।

'मेहरबानी' से एक दिन की भूख मिटती है, लेकिन भूख की समस्या हमेशा की है, उसे मिटाने का काम सरकार का है।)

4.4. भूख हड़ताल – कहानी

आज सबेरे पांच बजे उठा। नहा – धोकर चाय पी ली। बस पकड़ने के ख्याल से बस – स्टैण्ड पहुंचा। बस – स्टैण्ड को सुनसान देख मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही। बस –स्टेशन पर एक भी बस न थी। हमेशा मुसाफिरों से खचाखच भरा रहने वाला बस – स्टेशन आज एकदम खाली था। मुझे लगा कि मैं कहीं गलत जगह पहुँच गया हूँ। मेरी आँखों पर मुझे विश्वस न हुआ। मुझे बस – स्टेशन तक पहुँचाने के लिए साले साहब ने अपनी जीप भेजी थी। मेरे साथ ड्राइवर राजगोपाल और साले साहब का नौकर चिन्नस्वामी भी थे।

मुझे आश्चर्य चकित देख बोले – "साहब, हम लोग कल रात को आपसे बताना भूल गए। आज तो परिवहन विभाग वाले हड़ताल पर हैं। सरकारी और गैर – सरकारी बसें भी नहीं चलेंगी। क्या करें?"

"अरे भाई, कुछ तो उपाय सोचा! मुझे किसी भी हालत में दुपहर तक मद्रास पहुंचना है। शाम के तीन बजे मुझे एक मीटिंग में भाषण देना है। मिनिस्टर साहब उसकी अध्यक्षता करने वाले हैं"।

"कैसे मीटिंग है?" – राजगोपाल ने पूछा।

"प्रौढ़ शिक्षा की समस्याएं और उनके निदान पर। अब मेरी समस्या को सुलझाओ तो सही!"

"साब! आप कृपया यहाँ पर बैठे रहिए। हम लीग इस बीच पता लगाकर लौट आते हैं – कहीं लारी, ट्रक या सरकारी गाड़ी जाती हो"।

"क्या इस वक्त रेल गाड़ी नहीं?"

"साब! आपको चित्तूर से पाकाला होते हुए रेणिगुंटा तक पहुँचना है, वहाँ से आपको जनता एकसप्रेस मिल सकती है, लेकिन रेणिगुंटा तक पहुँचने केलिए इस वक्त कोई गाड़ी नहीं है।

"तब तो एक काम करो। वेलूर तक जाने केलिए कोई साधन हो तो जल्दी पता लगाओ। मुझे उस गाड़ी पर चढ़ा दो, बस, मैं वक्त पर मद्रास पहुँच जाऊंगा"।

"बात सही है, मगर बस – सर्विस तो इस वक्त उपलब्ध नहीं है। आपको ट्रक या लारी का ही सहारा लेना पड़ेगा"।

"कोई बात नहीं, कुछ तो इंतजाम हो। अब चर्चा करने से फायदा क्या है। जाओ, जल्दी करो। हाँ, सुनों तुम लोग मुझे वेल्लूर तक इसी जीप में पहुँचा दो, आखिर चौबीस किलो मीटर का रास्ता है। आधा घंटे में पहुँच सकते हैं। वेलूर से तमिलनाडु सरकार की बसें तो उपलब्ध हैं। वहाँ पर तो कोई हड़ताल नहीं है"।

"आपका कहना सही है, मगर बात यह है ....." राजगोपाल कुछ कहने जा रहा था।

मुझे गुस्सा आ गया, मैंने खीझकर कहा – "तुम हर बात में कोई न कोई अड़ंगा लगते हो। हाँ, बोलो, इसमें कैसी कठिनाई है?"

"साब! आप नाराज मत होइएगा। बात यह है कि आंध्रा प्रदेश सरकार की गाड़ी तमिलनाडु की सीमा को पार कर नहीं जा सकती"।

"हाँ, हाँ, मैं समझ गया। अरे भाई, यहाँ से तो रोज सैकड़ों ट्रक मद्रास जाते हैं। परिवहन अधिकारी मेरे दोस्त है। तुम उनके घर जाकर मेरी हालत बता दो और कुछ इंतजाम करके आ जाओ। तब तक मैं यहीं बैठा रहूँगा।

राजगोपाल और चिन्नस्वामी जीप स्टार्ट करके चले गए। मैं सिमेंट बेंच पर लुढ़क पड़ा। दिल में बेचैनी थी। मुझसे बैठ नहीं रहा गया। उठ खड़ा हुआ। चहलकदम करने लगा। एक कोने में टीन का शेड बना

था। चाय की छोटी – सी दुकान लगी थी। जब कुछ सूझ नहीं रहा था, तो मन को दूसरी दिशा में मोड़ने के ख्याल से चाय की दुकान तक पहुँचा। चाय पी ली, सिगरेट सुलगाया और ज़ोर की एक काश ली।

मुझे लगा कि अब मेरा दिमाग का टेन्शन कम हो गया। यह समस्या मेरी ही नहीं, बल्कि पूरे समाज कि है। मुझ जैसे कई ज़रूरतमन्द लोग आज अपनी मंजिल तक पहुँचने से रह गए होंगे। कोई शादी में वक्त पर पहुँच पाया न होगा। किसी को आज नौकरी में प्रवेश करना होगा, किसी का साक्षात्कार होगा, कोई अपने बंधु व रिश्तेदार को अस्पताल में दाखिल करने से रह गया होगा। तब मुझे तसल्ली मिली। मैंने सोचा कि प्रौढ़ शिक्षा को लेकर मेरे लेक्चर बाजी करने पर ही आम आदमी का सवाल हल होनेवाला नहीं है। आये दिन इस समाज में कोई न कोई आन्दोलन होता रहता है। हर घड़ी कोई न कोई हलचल होती रहती है।

ताबी एक अधेड़ उम्र का आदमी मेरी तरफ आस भरी नजर गड़ाये आ पहुँचा, नीरस स्वर में बोला – "बाबूजी, आप जलावन खरीदना चाहेंगे?"

"नहीं भाई, हम तो मुसाफिर हैं"।

"बाबू जी, आज कोई ग्राहक नहीं आये; सस्ते में बेचूँगा, लेते जाइयेगा"। बूढ़े लकड़हारे ने गिड़गिड़ाकर कहा।

"भाई, हम तो इस शहर के नहीं हैं, हमें दूर कि यात्रा करनी है, जिस पर बस के अड्डे से मेरे घर तक पहुँचने केलिए लकड़ी के वास्ते इतनी मजूरी देनी पड़ेगी, जो इस लकड़ी के दाम से ज्यादा बैठेगी। समझो!"

लकड़हारा निराश हो भारी कदमों को घसीटते लकड़ी के गट्ठर के पास लौटने को हुआ। उसकी आँखों से दीनता टपक रही थी। वैसे उसका बदन गठीला था, उसकी रूप – रेखाएँ भी नाक – नक्श – ऐसी थी कि उसे साबित कपड़े पहना दिए जाए तो उसे सब लोग संभ्रान्त परिवार का व्यक्ति ही समझ बैठेंगे।

उसकी दृष्टि में जो प्रखरता थी, उसने मुझे बरबस उसकी ओर आकृष्ट किया। मैंने सोचा कि लकड़ी के गट्ठर का बोझ उतारने से मेरा कोई फायदा होने वाला नहीं है, उल्टे नुकसान ही होगा, उस नुकसान का अर्धांश उसे देकर दोनों तरफ से थोड़ा – बहुत संतुष्ट हो लें। मैंने उस आदमी को पुकारा, जब समीप आया, मैंने पूछा, "भाई, तुम्हारा नाम क्या है?"

"असली नाम नारायणराव है पर मैं नारायण नाम से लोगों के बीच जाना – पहचाना जाता हूँ "।

"सुनो, तुम ये दो रुपये ले लो, लकड़ी भी साथ में ले जाओ"।

मेरे मुँह से ये शब्द निकलने की देरी थी कि नारायण का चेहरा रंग बदलने लगा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे इस प्रस्ताव या तो वह असंतुष्ट है या रुष्ट। इस बीच वह तपाक से बोल उठा – "बाबूजी, मुझ

पर आपको मेहरबानी दिखने कि कोई जरूरत नहीं और न मैंने आपसे दान ही माँगा है! लकड़ी खरीदना चाहें तो खरीद लीजिए, वरना चलते बनिए। हम कोई भिखमंगे नहीं हैं"।

लकड़हारे का रोष देख मैं चौंक पड़ा। उसके स्वाभिमान और आत्मविश्वास की भावना को मन ही मन दाद देते हुए बोला – भाई, बुरा मत मानो। मैंने सोचा कि आज तुम्हारी लकड़ी बिकी नहीं, बाल – बच्चे वाले होगे, खाली हाथ लौटोगे तो बच्चों को कुछ खिलाने – पिलाने में शायद तकलीफ हो"।

बाबूजी, यह समस्या एक दिन की नहीं। जिन्दगी भर की है। आज आप मुझ पर रहम खाकर कुछ रुपये दें तो आज की समस्या हल हो जाए, किन्तु जिन्दगी भर कौन देगा? हम जैसे लोगों को इस, समाज में खाने की गैरंटी कहां है। कभी तूफान होता हैं, कभी बरसात हो जाती है तो हम चाह कर भी जंगल मेम जाकर लकड़ी काट कर नहीं ला सकते। लाने पर भी उसकी बिक्री न हो, तो उस दिन हमें फाका करना पड़ता है। कभी बुखार आया, या मुझे या बाल – बच्चों व पत्नी को कुछ हुआ तो मैं काम पर नहीं जा सकता, उस दिन हमें खाना कौन देगा? जब तक इन हाथ – पैरों में ताक़त है, तब तक मैं अपनी गृहस्थी की गाड़ी कोल्हू के बैल की तरह खींच सकता हूं, उसके बाद मेरा परिवार कुत्ते की मौत मरेगा"। ये शब्द कहते वह उत्तेजित हो उठा।

"यह समस्या केवल तुम्हारी ही नहीं भाई हम सबकी है । जो नौकरी करता है और उसकी अपनी कोई जमीन – जायदाद या संपत्ति नहीं होती वह यदि अचानक मर जाता है या उसकी नौकरी छूट जाता है तो उसके परिवार की भी यही हालत होती है। इसीलिए हमने आजादी की लड़ाई लड़ी ताकि इस देश में पैदा हुआ व्यक्ति कोई भूखा, नंगा और बीमार न रहे, थोड़ा – बहुत पढ़ – लिख कर अपने को समझे"।

"आप की बात सही है? आजादी तो मिल गई फिर भी इस देश में लाखों और करोड़ों लोग भूखे, नंगे और बीमार हैं। काला अक्षर भैंस बराबर है। मैं तो यही रोना रोता हूं। आजादी चन्द लोगों की नहीं, सब केलिए उसका फल मिले"।

"बाबूजी जानते हैं, कल रात को क्या हुआ। मैं समीप के जंगल में लकड़ी काटने गया, जंगल के गार्ड ने देख लिया। उसने मिझे माँ – बहन की गालियाँ सुनाई। मिझे इतना क्रोध आया कि उसका गला घोंट दूँ, आगे बढ़ा लेकिन मुझे बीबी और बच्चों की याद आयी। अगर मैं उसको मार कर जेल जाऊँ या फाँसी पर लटकता हूँ , तो उनका क्या होगा। वे अनाथ हो जाएँगे। मैंने एक औरत का हाथ पकड़ा तो उसको मैं अपनी किस्मत पर नहीं छोड़ सकता। यही विचार कर मैं क्रोध के आँसू पीकर रह गया, वरना मैं उसी वक्त उसको मार डालता"।

"बाबूजी, जानते हैं, इसके बाद क्या हुआ। मैं वहाँ से निकल कर एक झाड़ी के पीछे छिप गया तभी एक मोटर गाड़ी आई उसमें जंगल का अफसर भी था। गाड़ी के मालिक ने मोटर गाड़ी की बत्तियाँ

जलाकर उस रोशनी में रुपयों के कई बंडल गिन – गिन कर रख दिये। अफसर जंगल के कई चंदन के पेड़ दिखा कर उनको कटवाने की सलाह दे रहा था, उनके जाने के बाद मैं पेड़ पर चढ़ा, बहुत सारी लकड़ी काटी, खुश होकर नीचे उतरा तो मेरा पैर साँप की एक लंबी बांबी पर पड़ा। बाबूजी, जानते हैं क्या हुआ। बांबी में से एक नाग फुफकारते हुए निकला। आगर वह मुझे डस लेता तो मेरी बीबी का सिंदूर पूंछ जाता और मेरे बच्चे अनाथ हो जाते। दर – दर भटकते हुए भीख माँगते"। ये शब्द कहते वह फफक – फफक कर रोने लगा।

थोड़ी देर रुककर फिर बोला – "बाबू जी, यह पापी पेट भरने के लिए आदमी क्या नहीं करता है डाका डालता है, धोखा देता है, खून करता है, दगा देता है, भूख की ज्वाला जब शरीर को भस्म करने के लिए लपलपाती है, तब आदमी अंधा हो जाता है। हैरान हो जाता है, लेकिन मैं ईमानदारी के साथ जीना चाहता हूँ। मगर मेरे सामने जीने की कोई राह दिखाई नहीं देती। मजदूरी करने को तैयार हूँ। रोज काम नहीं मिलता। अब आप बताइये, मुझे क्या करना है। पढ़े – लिखे हैं"।

मैं सोचने लगा कि हमारे समाज में ऐसे कितने ही पेशेवर लोग हैं जिनकी जीविका आकाश – कुसुम तोड़ने के बराबर है। मुझे गहरी सोच में डूबे देख लकड़हारा मेरे समीप आया, और कौतूहलवश पूछा – "बाबू जी बसों में काम करने वाले ये लोग हड़ताल क्यों कर रहे हैं?"

मैंने सहज भाव से जवाब दिया –"ये लोग तनख्वाह और भत्ते बढ़ाने कि माँग कराते हुए हड़ताल कर रहे हैं"।

"बाबू जी मैंने सुना है कि इन लोगों को तरह – तरह के भत्ते मिलते हैं। और सहूलियतें दी जाती हैं, क्या यह बात सच है?"

"हाँ भाई, बिलकुल सच है। उन्हें घर – भाड़ा मिलता है, नगर – भत्ता, बीमार पढ़ने पर इलाज का खर्च, बोनस, पेंशन, प्राविडेंड़ फण्ड, ग्रेजयुटी, छुट्टी का वेतन, एल.टी.सी, इंक्रिमेंट, प्रमोशन और भी कई सुविधाएँ प्राप्त है"।

"तब तो बाबूजी, इतनी सारी सुविधाएँ पाकर भी ये लोग हड़ताल कर रहे हैं? हमको सरकारी सुविधाएँ पाकर भी ये लोग हड़ताल कर रहे हैं? हमको सरकारी नौकरी नहीं मिल सकती?"

"पढे – लिखे लोग को ही सरकारी नौकरी मिलती है। अनपढ़ लोगों को नहीं"।

"क्या अनपढ़ लोगों को भूख नहीं लगती?"

"लगती है, लेकिन सरकार को चलाने केलिए पढे – लिखे लोगों कि जरूरत होती है"।

"तो बाबू जी, अनपढ़ लोगों से भी तो वोट माँगते हैं। मैंने भी वोट दिया है, मेरी औरत ने भी वोट दिया है। यह सरकार चलाने वालों केलिए हमारे वोट कि जरूरत होती है तो उन्हें चाहए कि हमें कोई काम दिला दें"।

"दिलाना तो चाहिए भाई! मगर सरकार के पास जैसे काम होते हैं, वैसे लोगों को सरकार चुनती है"।

"तो क्या हाँ किसी काम के नहीं? हमारे बाप – दादा ने यही काम किया, हमारे परदादाओं ने भी यही काम किया। हमें कोई दूसरा काम सीखा दें तो हम भी कर सकते हैं न!"

"बात तो सही है। मगर सरकार सभी लोगों को काम कहाँ से दे सकती है?"

"हाँ, साहब, आप लोग तो ऐसे हि कहते हैं। चूँकि आप लोगों का पेट भर गया है। हम तो मुफ्ट में तो सरकार से खाना नहीं माँगते, हमें कम दें और रोटी का इंतजाम करे। हमारा माल न बिका तो सरकार खरीद ले, जहाँ कुछ लोगों को सारी सहूलियतें दी जाती हैं, वहाँ हम जैसे लोगों को क्यों नहीं? क्या हमारे घर – द्वार, बीबी – बच्चे नहीं ? क्या हम इस देश ए नागरिक नहीं हैं? क्या हमें भूख नहीं लगती है? यह कमबख्त भूख भी हड़ताल करे तो क्या ही अच्छा होता? हमारी समस्या अपने आप हल हो जाती"।

लकडहारा बराबर कहता जा रहा था, उसके सवालों का मेरे पास कोई जवाब नहीं था। वाकई वह जो कुछ कह रहा था, मेरी दृष्टि में सही था। खाने की गैरंटी हमारे समाज में सब केलिए होनी ही चाहिए। इस तथ्य को महसूस करते मैं वहाँ से चुपके से निकल गया। इतने में सामने से जीप आती दिखाई दी। मेरी समस्या तो हल हो गयी, किन्तु मेरे कानों में लकड़हारे के सवाल गूँज रहे थे। वे सवाल प्रश्न – चिन्ह बनकर मेरे चारों तरफ फैलते गये।

4.5. कहानी की समीक्षा:

'भूख हड़ताल' कहानी के लेखक श्री बलशौरी रेड्डी हैं । आप दक्षिण के श्रेष्ठ अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखक हैं । प्रस्तुत कहानी में आप समाज की बुनियादी समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं ।

कहानी में लेखक एक पात्र हैं। आपको मद्रास में एक मीटिंग में भाषण के लिए जाना था, किन्तु बस – स्टेशन सुन – सान रह गया । उस दिन परिवहन विभागवालों ने हड़ताल किया। अत: लेखक को बस – स्टेशन में ही किसी गाड़ी के लिए कुछ समय तक इंतजार करना पड़ता है। उसी समय उनका परिचय एक मेहनतकशवर्ग के आदमी से होता है। वह एक लकड़हारा था जो जलावन बेचकर अपनी जीविका चलाता । वह लेखक से अनुरोध करता है जलावन खरीदें । लेखक मना करता है किन्तु उसकी दीनता

देखकर दो रुपये दान में देना चाहता है । लकड़हारा उसे स्वीकार नहीं करके कहता है कि 'हम भीखमाँगे नहीं हैं '।

वह अपने जैसे करोड़ों लोगों के जीवन कि समस्याओं को लेखक के सामने रखता है और कहता है कि पढ़े – लिखे लोग बड़े भाग्यशाली हैं वे बैठे – बैठे तनखा लेते हैं और अन्य सुविधाओं के लिय हड़ताल करते हैं। पर हम जैसे गरीबों की इस देश में कोई पूछता ही नहीं । यदि सरकार सबको काम दिखाती है तो हम खुशी – खुशी काम करके जीविका चला सकते हैं। पर सरकार हमारी तरफ ध्यान ही नहीं देती, जैसे कि हम मनुष्य हैं ही नहीं । आजादी तो मिल गयी फिर भी इस देश में लाखों और करोड़ों लोग भूखे, नंगे और बीमार हैं । पेट भरने के लिए हमें बहुत कष्ट करना पड़ता है। भूख के कारण ही इतनी सारी समस्याएँ हैं । अंतत: विरक्ति भाव से वह कहता है "कमबख्त भूख भी हड़ताल करे तो क्या ही अच्छा होता हमारी समस्या अपने आप हल हो जाती"।

लकड़हारे की बातों में सच्चाई है। यदि भूख हड़ताल हो तो कोई समस्या ही नहीं। समाज की वर्तमान परिस्थितियों का चित्रण करनेवाली इस कहानी के लिए 'भूख हड़ताल' ही उचित है।

4.6.कहानी की प्रमुख पत्रों का चरित्र – चित्रण

<u>नारायणराव :</u>

'भूख हड़ताल' कहानी में नारायणराव एक लकड़हारा था । स्वाभिमान जीवन बितानेवाला था और उनकी बाधा का चित्रण है । लकड़हारा हर दिन जलावन (ಕಟ್ಟಿಗೆ) बेच कर जीविका चला लेता है। एक दिन परिवहन विभाग वालों में हड़ताल किया है। उस दिन बस – स्टेशन सूना रह गया। कहानीकार मीटिंग में जाने के लिए बस – स्टेशन आता है, परिस्थिति देखकर परेशान होता है कि मीटिंग में कैसे पहूँचे। इतने में लकड़हारा से अनुरोध करता है कि जलावन बेचकर खरीदें । लकड़हारा सस्ते में देना चाहता है फिर भी कहानीकार लेना नहीं चाहता ।

क्यों कि इस समय मीटिंग में जाना है । भूखा लकड़हारा की विवशता को जानकर कहानीकार उससे कहता है कि इस समय तो जलावन नहीं ले सकता, लेकिन लकड़हारा नारायण से कहता है, "तुम ये दो रुपये ले लो लकड़ी भी साथ में ले जाओ"। लेकिन स्वाभिमान नारायण कहता है – बाबूजी मुझ पर आपको मेहरबानी दिखाने की जरूरत नहीं , हम कोई भिखमाँगे नहीं है ।

'मेहरबानी' से एक दिन की भूखी की समस्या हमेशा की है, उसे मिटाने का काम सरकार का है ।

4.7.कहानी का उद्देश्य (Objective of the story)

श्री बालशौरी रेड्डी की कहानी 'भुख हड़ताल' में स्वाभिमान जीवन बितानेवाले एक लकड़हारे की मनोभावना, पीड़ा का चित्रण मिलता है । लकड़हारा हर दिन जलावन बेच कर जीविका चला लेता है । एक दिन परिवहन विभाग वालों ने हड़ताल किया है । कहानीकार मीटिंग में जाने के लिए बस – स्टेशन

आता है। इंतने में लकड़हारा आकर कहानीकार से अनुरोध करता है कि जलावन खरीदें। लकड़हारा सस्ते में देना चाहता है फिर भी कहानीकार लेना नहीं चाहता क्योंकि इस समय मीटिंग में जाता है।

भुख लकड़हारे की विवशता को जानकर कहानीकार उससे कहता है कि इस समय तो मैं जलावन नहीं ले सकता, लेकिन 'तुम ये दो रुपये ले लो लकड़ी भी साथ में ले जाओ'। लेकिन स्वाभिमान नारायण कहता है – बाबू जी मिझ पर आपको मेहरबानी दिखाने की जरूरत नहीं, हम कोई भिखमाँगे नहीं है।

'मेहरबानी' से एक दिन की भूख मिटती है, लेकिन भुख की समस्या हमेशा की है, उसे मिटाने का काम सरकार का है।

4.8. स्मरण रखने योग्य बातें

1. इस में दक्षिण भारत के सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन का स्वाभाविक चित्रण परिलक्षित होता है।
2. भूख की समस्या को हमेशा मिटाने का काम सरकार का है।
3. प्रस्तुत कहानी में आप समाज की बुनियादी समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं।
4. संप्रति श्री रेड्डी जी मद्रास में रहते हुए भी साहित्य सृजन में लगे हुये हैं।

4.9. बोध प्रश्न

1. 'भूख हड़ताल' कहानी का सारांश लिखिए।
2. अधेड़ आदमी 'नारायण' का चरित्र चित्रण कीजिए।
3. 'भूख हड़ताल' में वर्णित सामाजिक वर्णन का उल्लेख कीजिए।

4.10. कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. प्रेमचंद की कहानियां
2. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की रचनायें
3. कुछ अन्य कहानियां

****

Dr.A. Sarala Devi,
i/c Department of Hindi,
S.S.&N College,
Narasaraopet,
Cell No: 9248906047.
Mail.ID:
saraladevi202@gmail.com

5 परमात्मा का कुत्ता

इकाई की रूपरेखा :-

5.1. उद्देश्य
5.2. प्रस्तावना
5.3. मोहन राकेश – लेखक का परिचय
5.4. परमात्मा का कुत्ता – कहानी (कथावस्तु)
5.5. कहानी की विशेषताएँ
5.6. कहानी की प्रमुख पात्रों का चरित्र – चित्रण
5.7. कहान का उद्देश्य
5.8. स्मरण रखने योग्य बातें
5.9. बोध प्रश्न
5.10. कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.1. उद्देश्य:-

1. इस इकाई में आप मोहन राकेश के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।
2. प्रस्तुत इकाई में परमात्मा का कुत्ता कहानी का सारांश दिया गया है।
3. श्रेष्ठ कहानी तत्वों के आधार पर कहानी की विशेषताएँ आप जान सकेंगे।
4. परमात्मा का कुत्ता कहानी के प्रभाव, पात्रों का चरित्र –चित्रण के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
5. कथाकार का उद्देश्य आप समझ सकेंगे।

5.2.प्रस्तावना:-

श्री मोहन राकेश एक ऐसे कहानीकार हैं जो सामाजिक अंशों को अपना विषय बनाते हैं। इन्होंने मुख्यत: हास्य – व्यंग्य को अपनी साहित्याभिव्यक्ति का मार्ग बनाया। सामाजिक असमानताओं तथा सरकारी मामलों में होनेवाले कुकृत्यों का फर्दाफाश किया। प्रस्तुत कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' एक सामाजिक अंश को लेकर लिखी गयी कहानी है। सरकारी कार्यालयों में होनेवाले भ्रष्टाचार का रोचक ढंग से प्रकट किया गया है इस कहानी के माध्यम से। कई सालों तक सरकारी दफ्तरों के पीछे पड़ने के बाद उसे कुछ जमीन मिलती है, जमीन क्या किसी खेती के नालायक गड्ढा। उसके बदले कुछ कम ही क्यों न हो कुछ जमीन माँगता है। कई महीने, सालों हो गये अर्जी रखकर। लेकिन फाइल आगे बढ़ती ही नहीं । हर जगह भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार। इस कहानी के माद्यम से सरकारी कार्यालयों का स्पष्ट चित्र उभर कर सामने आता है।एक प्रकार से कहानीकार इस प्रकार के भ्रष्टाचार का खंडन करते हुए स्वस्थ समाज की कल्पना करते हैं।

5.3. मोहन राकेश – लेखक का परिचय:

श्री मोहन राकेश का जन्म पंजाब के अमृतसर में ई. 1925 में हुआ था। इनकी शिक्षा – दीक्षा अमृतसर में ही हुई। आपने पंजाब विश्वविद्यालय से एम. ए हिन्दी किया। कुछ समय तक प्राध्यापक का काम किया। पश्चात आप पत्रकारिता के क्षेत्र में आ गये। सन 1960 – 62 में 'सारिका' का संपादन किया

। इसके बाद आप स्वतंत्र लेखन में लग गये । आपकी साहित्य सेवा के लिए आपको 'नेहुरू फेलोशिप' प्रदान की गयी । 'लहरों का राजहंस' संस्कृत के प्रसिध्द बौध्द कवि अश्वघोष विरचित 'सौंदरनंद' पर आधारित नाटक है । 'आषाढ़ का एक दिन' संस्कृत के मेघ – संदेश काव्य पर आधारित है । 'आधे – अधूरे', 'अंधेरे बंद कमरे', 'पैर तले जमीन' आदि इनके अन्य प्रमुख नाटक हैं । 'इन्सानके खंडहर', 'नये बादल', 'जानवर और जानवर', 'बारिश' आदि इनके प्रमुख कहानी – संग्रह हैं 'अंडे के छिलके' इनका एकांकी – संग्रह है । सन 1972 में इनका देहावसान हो गया ।

5.4. परमात्मा का कुत्ता – कहानी (कथावस्तु)

बहुत से लोग वहाँ सिर लटकाये हुए थे, जैसे किसी का मातम करने के लिए जमा हुई हों । कुछ लोग साथ लाई हुई पोटलियाँ खोल कर खाना खा रहे थे, दो – एक व्यक्ति पगड़ियां सिर के नीचे रखकर कम्पाउन्ड के बाहर सड़क के किनारे बिखर गये थे । चने, कुलचेलवाले का रोजगार गर्म था और कमेटी के नल के पास छोटा – मोटा क्यू लगा था । नल के पास कुर्सी डालकर अर्जीनवीस धड़धड़ अर्जियाँ टेप कर रहा था । उसके माथे से पसीना बहकर उसके ओंठों पर आ रहा था, लेकिन उसे पोंछने की फुर्सत नहीं थी । सफेद दाढ़ियोंवाले दो – तीन लम्बे जाट अपनी लाठियों पर झुके हुए उसके खाली होने की प्रतीक्षा कर रहे थे । धूप से बचने के लिए लगाया हुआ उसका टाट हवा से उड़ा जा रहा था और थोडी दूर मूढ़े पर बैठ हुआ उसका लड़का अपनी अंग्रेजी प्राइमरी को रटटा लग रहा था – सी-ए-टी कैट माने बिल्ली, बी-ए-टी बैट, बैट माने बल्ला, एफ-ए-टी फैट, फैट माने मोटा .... । कमीजों के बटन आधे खुले हुए और फाइलें बगल में दबाये हुए कुछ बाबू एक दूसरे से छेडखानी करते हुए रजिस्ट्रेशन ब्रांच से रिकार्ड ब्रांच की तरफ जा रहे थे । लाल बेल्टवाला चपरासी आस-पास की भीड़ से उदासीन अपने स्टूल पर उकड़ू होकर बैठा, मन ही मन कुछ हिसाब कर रहा था । कभी उसके ओंठ हिलते थे और कभी उसका सिर हिल जाता था । सारे कम्पाउन्ड में सितम्बर की खुली धूप फैली थी ।

चिड़ियाँ डालों से कूदने और फिर ऊपर को उड़ने का अभ्यास कर रही थी और कौए पोर्च के सिरे पर चहलकदमी कर रहे थे । एक सत्तर पचहत्तर वर्ष की बुढिया, जिसका सिर हिल रहा था और चेहरा झुर्रियों के गुंझल के सिवा कुछ नहीं था, लोगों से पूछ रही थी कि वह अपने लड़के के मरने के बाद उसके नाम एलाट हुई जमीन की हकदार है या नहीं ।

अंदर हाल – कमरे में फाइलें धीरे – धीरे हिल रही थी । दो – चार बाबू बीच की मेज के पास जमा होकर चाय पी रहे थे और उनमें से एक दफ्तरी कागज पर लिखी हुई अपनी ताजा गजल यारों को सुना रहा था और यार इस विश्वास के साथ सुन रहे थे कि वह जरूर उसने 'शमा' या 'बीसवी सदी' के सिकी पुराने अंक से चुराई है ।

"अजीज साहब यह शेर अपने आज ही कहे हैं, या दो – तीन साल पहले कहे हुए शेर आज अचानक याद आ गये हैं ?" साँवले चेहरे और घनी काली मूँछों वाले एक बाबू ने बाई आँख को जरा–सा दबाकर पूछा । आसपास सब लोगों के चेहरे खिल गये ।

"यह मेरी बिल्कुल ताजा गजल है," अजीब साहब ने अदालत के कटघरे में खड़े होकर हलफिया सच बोलने के लहजे में कहा, "इससे पहले इसी वजन पर कोई और चीज कहीं हो तो याद नहीं"। और आँखों से सब के चेहरों को टटोलते हुए उन्होंने हल्की-सी हँसी के साथ कहा, "अपना दीवान तो कभी कोई रिसर्च करने वाला ही मुस्तव करेगा . . . ."

एक फरमायशी कहकहा लगा, जिसे 'शी', 'शी' की आवाजों ने बीच में ही दबा दिया। कहकहे पर लगाई गई इस ब्रेक का मतलब था कि कमिश्नर साहब अपने कमरे में तशरीफ ले गये हैं। कुछ क्षणों का वक्फा रहा जिसमें सुरजीतसिंह वल्द गुरमीतसिंह कि फाइल एक मेज से ऐक्शन के लिए दूसरी मेज पर चली गई, सुरमीतसिंह वल्द गुरमीतसिंह मुस्कुराता हुआ हाल से बाहर चला गया और जिस बाबू की मेज से फाइल आई थी, वह नए पाँच रुपये के नोट को सहलाता हुआ चाय पीनेवालों के जमघट में आ शामिल हुआ। अजीज साहब अब काफी धीमी आवाज में अपनी गजल का अगला शेर सुनने लगे।

साहब के कमरे की घण्टी हुई। चपरासी मुस्तैदी से उठकर कमरे में गया और उसी मुस्तैदी से बाहर आकर अपने स्टूल पर बैठ गया। चपरासी से खिड़की का पर्दा ठीक कराकर कमिश्नर साहब ने मेज पर रखे हुए कागजों पर एक साथ दस्तखत किये, और पाइप सुलगाकर 'रीडर्स डाइजेस्ट' का ताजा अंक पढ़ने लगे। 'रीडर्स डाइजेस्ट' लाइफ और अरेगी आदि पत्रिकाओं के अंक रसे उनके साथ ही आते थे। लेटीशिया बाल्टिज़ का लेख कि उसे इतालबी मर्दों से क्यों प्यार है, वे पढ़ चुके थे। और लेखों में हृदय की शल्य-चिकित्सा के संबंध में जे. डी. रैटक्लिफ का लेख सबसे पहले पढ़ने के लिए उन्होंने चुन रखा था। पृष्ठ एक सौ ग्यारह खोलं उन्होंने हृदय के नये आपरेशन का ब्यौरा पड़ना आरंभ किया।

तभी बाहर शोर सुनाई देने लगा।

कम्पाउण्ड में 'पेड़ के नीचे बिखर कर बैठे हुए लोगों में तीन नई आकृतियाँ आ शामिल हुई थी। एक अधेड़ आदमी था, जिसने अपनी पगड़ी नीचे बिछा ली और हाथ पीछे को करके एक टँगे फैलाकर उस पर बैठ गया था। पगड़ी के खाली छोर पर एक उससे जरा बड़ी उमर की स्त्री और एक जवान लड़की बैठी थी और उनके पास ही खड़ा एक दुबला सा लड़का अपने आस-पास की हर चीज को घूर रहा था। पुरुष की फैली हुई टँगे धीरे-धीरे परी खुल गई थी और आवाज इतनी ऊँची हो गई थी कि कम्पाउण्ड के बाहर से भी बहुत से लोगों का ध्यान उसकी ओर खिंच गया था। वह बोलता हुआ साथ घुटन पर हाथ मार रहा था। "सरकार को अभी और वक्त चाहिए। दस - पाँच साल में सरकार फैसला करेगी, कि अर्जी मंजूर होनी चाहिए या नहीं सरकार वक्त ले ले रही है। काली, यमराज भी तो हमारा वक्त गिन रहा है। उधर वह हमारा वक्त पूरा करेगा और इधर तुम कहना कि तुम्हारी अर्जी पास कि गई"।

चपरासी की टँग स्टूल से नीचे उतरी और वह सीधा हो गया। कम्पाउण्ड में बिखर कर बैठ और लेटे हुए सब लोग अपनी-अपनी जगह पर कस हये। कई लोग पेड़ के पास जमा हो गए।

"दो साल से अर्जी दे रखी है कि सालों, जमीन के नाम पर तुमने मुझे जो गड्ढा एलाट कर दिया है, उसकी जमीन दो, मगर दो साल से अर्जी दी कमरे पार नहीं कर पाई?" वह आदमी बोलता रहा, "इस कमरे से उस कमरे में अर्जी के जाने में वक्त लगता है। इस मेज से उस मेज पर जाने में वक्त लगता है। सरकार वक्त ले रही है। मैं आ गया हुं अपना घर-बार लेकर यहीं पर, ले लो जितना वक्त तुमने लेना है। ..... सात साल की भूखमरी के बाद मुझे जमीन दी है - 'सौ मरले का गड्ढा ! उसमें मैं बाप - दादों की अस्तियाँ गढ़ूँ ? अर्जी दी साल से मरले के पचास मरले दे दो, लेकिन जमीन दे दो। मगर अर्जी दो साल से वक्त ले रही है। मैं भूखा मर रहा हूँ और अर्जी वक्त ले रही है।

चपरासी अपने हथियार लिये उठा - माथे पर त्योरियाँ और आँखों में आक्रोश। आस - पास जमा भीड़ को हटाता वह उसके पास सामने आ गया।

"ए मिस्टर, चल यहाँ से बाहर!" उसने हथियारों की पूरी चित के साथ कहा, "चल .... उठ ...."

मिस्टर यहाँ से उठ नहीं सकता। वह आदमी बोला, "मिस्टर यहाँ का बादशाह है। पहले मिस्टर देश के बेताज की जय बुलाता था। अब वह आप किसी की जय नहीं बुलाता। अब वह आप बादशाह है - बैताज बादशाह! उसे कोई लाज - शरम नहीं है। उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता। समझा चपरासी बादशाह!"

"अभी पता चल जायेगा तुझे कि तुझ पर किसी का हुक्म चलता है या नहीं"। चपरासी बादशाह और गर्म हुआ, "अभी पुलिस के सुपुर्द कर दिया जायगा तो सारी कि सारी बादशाही निकल जायगी ...."

"हा-हा!" बेताज बादशाह हँसा, 'तेरी पुलिस मेरी बादशाही निकालेगी? मैं पुलिस के सामने नंगा हो जाऊँगा और कहूँगा कि निकालो मेरी बादशाही! हम में से किस कि बादशाही निकालेगी पुलिस के सामने नंगा हो जाऊँगा और कहूँगा कि निकालो मेरी बादशाही! हम में से किस की बादशाही निकालेगी पुलिस? ये मेरे भाई की बेवा है - उस भाई की, जिस पाकिस्तान में टांग पकड़ कर चीरा गया था। यह मेरे भाई का लड़का है, जो अभी तपेदिक का मरीज हो गया था। यह मेरे भाई की लड़की है जो अब ब्याहने लायक गई है। इसकी बड़ी बहन पाकिस्तान में है। आज मैंने इन सबको बादशाह दे दी है। ले आ तू जानकर अपनी पुलिस। वह आकर इन सबकी बादशाह निकाल दे। कुत्ता! साला .....!!"

अन्दर से कई एक बाबू निकल कर बाहर आ गये। "कुत्ता साला" सुनकर चपरासी अपने आप से बाहर हो गया। वे तैश में उसे बाँह से पकड़ घसीटने लगा, "अभी तुझे मार-मार कर. ..." और उसने उसे टूटे हुए बूट की एक ठोकर दी। स्त्री और सहम कर वहाँ से हट गई। लड़का रोने लगा।

बाबू लोग भीड़ को हटाते हुए आगे बढ़ आये और उन्हों ने चपरासी को पकड़ कर हटा लिया। चपरासी बड़बड़ता रहा, "कमीना आदमी, दफ्तर में आ कर गाली देता है मैं अभी तुझे ...." एक नहीं तुम सबके सब कुत्ते हो, 'वह कहता रहा," "तुम भी कुत्ते हो और मैं भी कुत्ता हूँ। फर्क इतना है कि तुम सरकार के कुत्ते हो। हम लोगों कि हड्डियाँ चूसते हो और सरकार की तरफ से भौंकते हो। मैं परमात्मा का कुत्ता हूँ। उसकी दी हुई हवा खाकर जीता हूँ और उसकी तरफ से भौंकता हूँ। उसका घर इन्साफ का घर है। मैं उसके घर की रखवाली करता हूँ। तुम सब उसकी इन्साफ की दौलत के लुटेरे हो तुम पर भौंकना मेरा फर्ज है। मेरे मालिक का फरमान है। मेरा तुमसे असली बैर है। कुत्ते का कुत्ता दुश्मन होता है। तुम मेरे दुश्मन हो, मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ। तुम बहुत से हो, मैं एक हूँ। इसलिए तुम सब मिलकर मुझे मारो। मुझे यहाँ से निकाल दो। लेकिन मैं फिर भी भौंकता रहूँगा। तुम मेरा भौंकना बन्द नहीं कर सकते। मेरे अन्दर मेरे मालिक का नूर है, मेरे बाहर गुरु का तेज है। मुझे ज बन्द कहाँ र दोगे। मैं वहाँ भौंकूंगागा और भौंक-भौंक कर तुम सब लोगों के कान फाड़ दूँगा। साले, आदमी के कुत्ते, जूठी हड्डी पर मरने वाले कुत्ते, दुम हिला-हिला कर जीने वाले कुत्ते ....

",बाबूजी बस करो। एक बाबू हाथ जोड़ कर बोला, "लोगों पर रहम खाओ और अपनी सन्तबाणी बन्द करो। तुम बताओ तुम्हारा केस क्या है, तुम्हारा नाम क्या है ?"

'मेरा नाम है बारह सौ छब्बीस बटा सात। मेरे माँ - बाप का दिया हुआ नाम खा लिया कुत्तों ने। अब वह नाम है जो तुम्हारे दफ्तर का दिया हुआ है। मैं बारह सौ छब्बीस बटा सात हूँ। मेरा और कोई नाम पता नहीं है। मेरा नाम याद कर लो। अपनी डायरी में लिख लो। वाह गुरु का कुत्ता - बारह सौ छब्बीस बटा सात"।

"बाबूजी,आज जाओं, कल परसों फिर आ जाना। तुम्हारी अर्जी की कार्रवाई तकरीबन - तकरीबन पूरी हो चुकी है ....

"तकरीबन - तकरीबन पूरी हो चुकी है और मैं तकरीबन - तकरीबन आप पूरा हो चुका हूँ। अंब सिर्फ यह देखना बाकी है कि वह पूरी होती है कि पहले मैं पूरा होता हूँ। एक तरफ सरकार का हुनर है और दूसरी तरफ परमात्मा का हुनर।तुम्हारा तकरीबन - तकरीबन अभी दफ्तर में ही रहेगा और मेरा तकरीबन - तकरीबन मकाफन में पहूँच जायेगा। सालों ने सारी पढ़ाई खर्च करके दो लफ्ज ईजाद किये हैं - शायद और तकरीबन कार्रवाई पूरी हो गई है। शायद से निकालो तकरीबन में डाल दो और तकरीबन से निकालो तो शायद गर्क कर दो। यही तुम्हारी दफ्तरी तालीमहै। तकरीबन तीन - चार महीने में तहक़ीक़ात होगी। शायद महीने दो महीने में रिपोर्ट आयेगी। मैं आज शायद और तकरीबन दोनों घर पर छोड़ आया हूँ। मैं य हूँ और यही बैटूँगा । मेरा कम होना है तो आज ही होगा और अभी होगा। तुम्हारे शायद और तकरीबन के ग्राहक ये सब खड़े हैं। यह ठगी इनसे करो ...."

बाबू लोग अपनी सदभावना से निराश होकर एक - एक करके अन्दर लौटने लगे।

"बैठा है, बैठा रहने दो"।

"बकता है, बकने दो"।

"साला बदमाशी से काम निकालना चाहता है"।

"लेट हिम बार्क हिमसेल्फ टू डेथ"।

बाबुओं के साथ चपरासी भी बड़बड़ाता हुआ अपने स्टूल पर लौट गया, "मैं साले के दाँत तोड़ देता। अब बाबू लोग हाकिम हैं और हाकिमों का कहना मानना पड़ता है, वर्ना ...."

"अरे बाबा, शांति से काम ले। यहाँ मिन्नत चलती है, पैसा चलता है, धौंस नहीं चलती"। भीड़ में से कोई उसे समझाने लगा।

वह आदमी उठकर खड़ा हो गया।

"मगर परमात्मा का हुक्म सब जगह चलता है"। वह कमीज उतारता हुआ बोला, "और परमात्मा के हुक्म से आज बेताज बादशाह नंगा होकर कमिश्नर साहब के कमरे में जायेगा। आज वह नंगी पीठ पर साहब के डंडे खायेगा , आज वह बूटों की ठोकरें खाकर प्राण देगा। लेकिन वह किसी की मिन्नत नहीं करेगा। किसी को पैसा नहीं चढ़ायेगा। किसी की पूजा नहीं करेगा। जो वाह गुरु की पूजा करता है, वाह पुर किस की पूजा नहीं करता तो अब वाह गुरु का नाम लेकर ...."

इससे पहले कि वाह अपने कहे को किये में परिणत करना, दो – एक आदमियों ने बढ़कर उसके हाथ पकड़ लिये। बेताज बादशाह हाथ छुड़ाने के लिये संघर्ष करने लगा।

मुझे जाकर इनसे पूछने दो कि क्या इसीलिए महात्मा गाँधी ने इन्हें आजादी दिलाई थी कि ये आजादी के साथ इस तरह संभोग करें ? उसकी मिट्टी खराब करें ?उसके पवित्र नाम पर कलंक लगायें ? उसे टके – टके कि फाइलों में बाँधकर जलील करें ? लोगों के दिलों में उसके लिये नफरत पैदा करें ? छोड़ दो। इन्सान के तन पर कपड़े देखकर बात इन लोगों की समझ में नहीं आती। इन्हें समजाने का यही एक तरीका है। शरम उसे होती है जो इन्सान हो। मैं तो आप कहता हूँ कि मैं इन्सान नहीं हूँ, कुत्ता हूँ ...."

सहसा भीड़ में एक दशहत–सी फैल गयी। कमिश्नर साहब अपने से बाहर निकल आये थे। वे माथे की त्यौरियों और चेहरे की झुर्रियों को गहरा किये हुए भीड़ के पास आ गये।

"क्या बात हे ? क्या चाहते हो तुम ?"

"आपसे मिलना चाहता हूँ। साहब को घूरता हुआ बोला, "सौ मरले का एक गड्ढा मेरे नाम एलाट हुआ है वह गड्ढा वापस करना चाहता हूँ। ताकि सरकार उसमें एक तालाब बनवा दें ताकि अफसर लोग शाम को वहां मछलियाँ मारा करें। या सरकार उस उस गड्ढे को एक तहखाना बना दे और मेरे जैसे कुत्तों को वहाँ बन्द कर दे ....." मछलियाँ

"ज्यादा बातें मत करो। अपना केस लेकर मेरे पास आओ"।

"मेरा केस मेरे पास नहीं है साहब, दो साल से सरकार के पास है। मेरे पास अपना शरीर और दो कपड़े हैं। चार दिन बाद ये भी नहीं रहेगें, इसलिये इन्हें आज ही उतार देता हूँ। बाकी सिर्फ बारह सौ छब्बीस बटा सात रह जायगा। वह बारह सौ छब्बीस बटा सात परमात्मा के हुजूर ममें भेज दिया जायगा ....."

"बातें बन्द करो और मेरे साथ आओ !"

कमिश्नर साहब अपने कमरे की तरफ चल दिये। वह आदमी भी कमीज कंधे पर रखे हुए उनके साथ – साथ चल दिया।

"दो साल चक्कर लगाता रहा किसीने नहीं सुना। खुशामदें करता रहा किसी ने नहीं सुना। वास्ते देता रहा, किसी ने नहीं सुना ...."

चपरासी ने चिक उठा दी और वह कमिश्नर साहब के साथ अन्दर चल गया। घण्टी बजी, फाइल हिलीं; बाबुओं की बुलाहट हुई और आध घण्टे बाद बेताज – बादशाह मुस्कुराता हुआ बाहर निकल आया। उत्सुक आँखों की भीडने उसे देखा तो वह फिर बोलने लगा, "चूहों की तरह बिटर – बिटर देखने से कुछ नहीं होता। भौंको – भौंको, सबके सब भौंका, अपने आप सालों के कानों के पर्दे फट जायेंगे। भौंको कुत्तों भौंको ...."

उसकी भावज दोनों बच्चों के पास खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। वह दोनों बच्चों के कन्धे पर हाथ रखे हुए सचमुच बादशाह की तरह सड़क पर चलने लगा।

"हयादार हो तो सालो मुंह लटकाये खड़े रहो। अर्जियाँ टाइप कराओ और नल का पानी पियो। सरकार वक्त ले रही है। और नहीं तो बहया बनो। बेहयाई हजार बरकत है"।

वह सहसा रुका और ज़ोर से हँसा।

"यारो, बैहयाई हजार बरकत है"।

उसके चले जाने के बाद कंपाउंड में और उसके आस – पास मातमी वातावरण और गहरा हो गया। भीड़ धीरे – धीरे बिखरकर अपनी जगहों पर चली गई।

चपरासी की टांगें फिर स्टूल पर उठ गई। सामने कैंटीन का लड़का बाबुओं के कमरे में एक सैट चाय ले गया। आर्जीनवीस की मशीन चलने लगी। और टिक – टिक की आवाज के साथ उसका लड़का फिर अपना सबक दोहराने लगा, "पी–इ–एन पेन, पेन माने कलम; एच–इ–एन हेन, हेन माने मुर्गी; डी–इ–एन डेन, डेन माने अंधेरी गुफा ...."

5.5. कहानी का सारांश – विशेषताएँ

'परमात्मा का कुत्ता' मोहन राकेश की प्रसिद्ध कहानियों में से एक है। इसमें आप सरकारी दफ्तरों में व्याप्त लालफीता – शाही, भ्रष्टाचार तथा उदासीनता का सजीव चित्रण करते हैं।

कहानी के आरंभ में एक सरकारी दफ्तर के परिसर का चित्रण किया गया । वहाँ कई लोग अपनी फाइलों का काम पूरा होने की आशा रखकर इंतजार कर रहे होते हैं । उनमें बाल – बच्चे, बूढ़े, निस्सहाय बहुत होते हैं, किन्तु वहाँ के कर्मचारियों पर इनकी स्थितिगतियोंका कोई प्रभाव नहीं रहता । एक बूढ़ी अपने मरे हुए बच्चे को मिली जमीन के बारे में पूछती है किन्तु उसका जवाब देनेवाला कोई नहीं है । सभी कर्मचारी अपने में मस्त और इन लोगों के प्रति उदासीन रहते हैं । कैच सरकारी बाबू कविता – गजलें आदि सुनने – सुनाने में मग्न हैं तो कुछ कर्मचारी मजे में बटें करते रहते हैं । कई लोग चाय पीते रहते हैं । फाइलों का काम उन्हीं का जल्दी होता है जो इन लोगों को कुछ पैसे घुस के रूप में देते हों । इन सबके ऊपर अधिकारी जो कमीशनर साहब हैं वे भी कुछ दस्तखत करके मैगजीन वगैरा पढ़ने में व्यस्त रहते।

ऐसे में एक अधेड़ आदमी अपनी भाभी और बच्चों के साथ दफ्तर के परिसर में प्रवेश करता है । आते ही वह अपनी पगड़ी जमीन पर बिछाकर परिवार सहित बैठ जाता है और ऊँची आवाज से कहने लगता है कि सरकार इतने सालों से उसकी अर्जी पर फैसला नहीं ले सकी । वह पाकिस्तान से आया हुआ भारतीय है और उसके कुछ रिश्तेदार अभी पाकिस्तान में ही हैं । उसके पुनरावास की समस्या हल नहीं हुई । सात वर्ष घूमने के बाद जमीन के रूप में नालायक गड्ढा मिला । उसने अर्जी राखी कि उस गड्ढे के बदले थोड़ी कम जमीन ही क्यों न हो अच्छी दिलवायें । उसके अर्जी रखे दो साल बीत गये किन्तु सरकार का फैसला अब तक नहीं हुआ । वह सरकार की कारवाई से ऊब जाता है और आज सीधे कार्यालय में घुस पड़ता है कि काम करके ही वापस जाऊँगा । वह कहता है कि कर्मचारियों ने उसका नाम भी बदल डाला अब वह 'बारह सौ छब्बीस बटा सात' है । क्योंकि वही उसकी फाइल का नंबर है । धीर–धीरे सबका ध्यान उस पर जाने लगता है और चपरासी उसे बाहर निकालने की कोशिश करता है । इतने में वह अचानक सरकारी कर्मचारियों को 'कुत्ता. . .साला' कहतें हुए गाली देने लगता है ।

वह इसका विवरण भी प्रस्तुत करता है कि सरकारी कर्मचारी सब के सब कुत्ते हैं जो आम लोगों की हड्डियाँ चूसते है और सरकारी की तरफ से भौंकते हैं । पर वह तो परमात्मा का कुत्ता है जो परमात्मा की तरफ से भौंकता है परमात्मा का कर्तव्य है इन्साफ (न्याय) की रक्षा करना । अत: वह आज भौंककर इन सरकारी कुत्तों के कान फाड़ देगा। वह शेर – शराबा सुनकर कुछ सरकारी बाबू बाहर आते हैं और उसे शांत करने की कोशिश करते हैं । एक बाबू कहता है कि उसका काम 'तकरीबन' (लगबग) हो गया । पर अधेड़ आदमी मानता नहीं औए कहता है कि यदि आज उसका काम पूरा नहीं हुआ तो वह नंगा होकर कमीशनर साहब के पास जाएगा । धमकी के तौर पर वह अपनी कमीज भी उतार देता है जिससे वहाँ के सब कर्मचारी दर जाते हैं । कमीशनर साहब बाहर आते हैं और उसे लेकर कार्यालय के अपने कमरे में जाते हैं । आधे घंटे में अधेड़ व्यक्ति का काम हो जाता है । अधेड़ आदमी विजयगर्व से बेताज – बादशाह की तरह अकड़कर (ఠ౯ముౕము వ౦ఠుచుకున౦)बाहर आता हे । वह बाहर इंतजार करते लोगों से कहता है कि 'इस तरह चूहों की तरह रहने से काम नहीं बनेगा, जागो – भौंको और इनके कान फाड़ दो'। अधेड़ आदमी के व्यवहार से स्पष्ट होता है कि भद्र व्यवहार से सरकार की नींद नहीं खुलेगी, बेहयाई (న౦సౕన౦గౕగుగ౯ వౕయువహ౯ఠ౦౦చుటు) से ही सरकारी दफ्तरों में काम होता है ।

विशेषताएँ: इस कहानी में समाज की वास्तविक परिस्थितियों का चित्रण किया गया । कहानी की पुष्ठभूमि सरकारी कार्यालय है । 'कुत्ता एवं भौंकना' मात्र प्रतीक हैं । इन दोनों शब्दों के लिए 'जागरूक' तथा 'सचेत कार्यवाही' के अर्थ लेने चाहिए । मोहन राकेश इस कहानी के ब्दारा बताते हैं कि जनता जब सचेत बनेगी तभी भ्रष्टाचारों का नाश होगा ।

दुख की बात यह है कि आज भी सरकारी कार्यालयों की कार्यवाही में इस कहानी से भिन्न आचरण दिखाई नहीं पड़ता ।

5.6. कहानी की प्रमुख पात्र का चरित्र – चित्रण

अधेड़ आदमी :

मोहन राकेश की प्रसिद्ध कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' एक मुख्य पात्र पर आधारित है । वह 'अधेड़ आदमी' या 'बारह सौ छब्बीस बाटा सात' है । उसका कोई नाम नहीं रहता, क्योंकि सरकार उसका नाम '1226/7' रख दिया । वह उसकी अर्जी की फाइल का नाम है ।

अधेड़ आदमी में सरकारी कार्रवाई में होती देरी के होती देरी के प्रति क्षोभ है । वह पाकिस्तान अपनी गाली की भी सफाई (ಶಮಠ಼ಥಶ) पेश करता है ।

अधेड़ आदमी चरित्र का सब से आकर्षक गुण उसका फक्कड़पन है । वह बाहर जाते वक्त वहाँ इंतजार करते लोगों को भी क्रांतिकारी रुख अपनाने की सलाह देता है । वह निरूपित करता है कि होड – हल्ला करने से ही सरकारी कार्यालयों में काम बनता है । चुप बैठने से कोई फायदा नहीं, अतः सब लोग सजग होकर भ्रष्टाचारों का विरोध करे, यही संदेश 'अधेड़ आदमी' के पात्र के माध्यम से संप्रेषित है ।

5.7. कहानी का उद्देश्य: (Obective of the story)

'परमात्मा का कुत्ता' कहानी वर्तमान समाज में फैल भ्रष्टाचारों पर लिखी गयी है । इस कहानी की रचना सोद्देश्य है । कहानी में अधेड़ व्यक्ति अपनी अर्जी की कार्रवाई के लिए सरकारी कार्यालय में जाकर हल्ला करता है । उसका क्रोध न्याय पूर्ण है । क्योंकि अर्जी रखे दो सालों का समय बीत चला पर कोई कारवाई नहीं हुई । अतः वह कार्यालय में घुसकर कर्मचारियों को गाली देता है और उन पर रोब जमाता है । वह अपनी कमीज उतारकर नंगा होने को भी तैयार हो जाता है । तब जाकर उसकी फाइल पर काम होता है और उसकी अर्जी पास की जाती है ।

कहानी के अंत में उसका उद्देश्य निहित है । अधेड़ आदमी बाहर आकर सभी की तरफ विजयगर्व से देखता है और कहता है 'चूहों की तरह रहने से फायदा नहीं – कुत्तों की तरह भौंको, अपना काम कराओ !' समाज में फैली गैरजिम्मेदारी ही भ्रष्टाचारों की जड़ है जो भारत के शरणार्थी बनकर आया । उसके कुछ रिश्तेदार अभी पाकिस्तान में ही हैं । वह जमीन के लिए सात साल दफ्तरों के पीछे घूमता रहा, तब जाकर

उसे जमीन मंजूर की गयी। वह भी बेकार गड्ढा। दो साल से उसकी अर्जी पर कार्रवाई चल रही है। अत: वह ऊब जाता है और अपना क्षोभ प्रकट करने परिवार सहित कार्यालय में आता है।

अधेड़ आदमी में अपना कार्य साधने के लिए कुछ भी कर जाने की हिम्मत है। वह चपरासी से टक्कर लेता है और कर्मचारियों को गाली देता है। वह कहता है की यदि उसका काम पूरा नेहीं हुआ तो वह नंगा बनकर कमिशनर साहब के कमरे में जायेगा। इस प्रक्रिया में वह अपनी कमीज भी उतार देता है।

अधेड़ आदमी के क्रोध में न्याय है, और ईमानदारी है। वह सरकारी कर्मचारियों को 'कुत्ते' कहकर स्वयं को 'परमात्मा के व्दारा न्याय की रक्षा करने भेजा गया कुत्ता' कहकर वह यदि जनता सजग होकर सरकारी कर्मचारियों पर टूट पड़े, तो भ्रष्टाचार नहीं होंगे। अत: हर एक नागरिक को चाहिए कि वह अधेड़ आदमी की तरह सजग रहे और भ्रष्टाचारों का अंत कर दें। घूसख़ोरी, भ्रष्टाचार, बेईमानी, आदि की दवाई एकमात्र जनता का क्रोध है। अत: जनता के सामने वर्तमान समाज की इस ज्वलंत समस्या को रखकर उसका समाधान बतलाना ही इस कहानी का उद्देश्य है।

5.8. कुछ स्मरण रखने योग्य बातें:

1. मोहन राकेश हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानीकार है।
2. मोहन राकेश ने सामाजिक जीवन से संबंधित समस्याओं को लेकर रचनाएँ की है।
3. 'अंडे के छिलके' इनका एकांकी – संग्रह है।
4. इन्होंने मुख्यत: हास्य – व्यंग्य को अपनी साहित्याभिव्यक्ति का मार्ग बनाया।
5. 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी वर्तमान समाज में फैल हुई भ्रष्टाचारों पर लिखी गयी है।
6. कहानी में अधेड़ व्यक्ति अपनी अर्जी की कार्रवाई के लिए सरकारी कार्यालय में जाकर अर्जी रखा।
7. हर एक नागरिक को चाहिए कि वह अधेड़ आदमी की तरह सजग रहे और भ्रष्टाचारों का अंत कर दें।
8. एक प्रकार से काहीनीकार इस प्रकार के भ्रष्टाचार का खंडन करते हुए स्वस्थ समाज की कल्पना कराते हैं।
9. इस कहानी के माद्यम से सरकारी कार्यालयों का स्पष्ट चित्र उभर कर सामने आता है।
10. इस कहानी के व्दारा मोहन राकेश जी ने यह साबित किया था कि अधर्म और अन्याय पर धर्म और न्याय की जीत जरूर होती है।

5.9. अभ्यासार्थ प्रश्न :-

1. 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी का सारांश लिखिया।
2. 'बेताज बादशाह' पर टिप्पणी लिखिया।
3. "सरकार वक्त ले रही है।" तथ्य पर प्रकाश डालिए।

4. 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी में सामाजिक अंश का उल्लेख कीजिए ।

5. अधेड़ आदमी का चरित्र – चित्रण कीजिए ।

5.10. कुछ उपयोगी पुस्तकें

1 .चर्चित कहानियाँ – गुलाम यम खान शबनम पुस्तक महल, कटक

2. हिन्दी निबंध – राजहंस प्रकाशन

3. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास – ए. गुलाबराय

……

Dr.A. Sarala Devi,
I/c Department of Hindi,
S.S.&N College, Narasaraopet,
Cell No: 9248906047.
Mail.ID: saraladevi202@gmail.com

6. वापसी

– उषा प्रियंवदा

इकाई की रूपरेखा :-

6.1. उद्देश्य
6.2. प्रस्तावना
6.3. उषा प्रियंवदा – लेखक का परिचय
6.4. वापसी – कहानी
6.5. कहानी की विशेषताएँ, समीक्षा
6.6. कहानी के प्रमुख पत्रों का चरित्र – चित्रण
6.7. कहानी का उद्देश्य
6.8. कुछ स्मरण रखने योग्य बातें
6.9. बोध प्रश्न
6.10. कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.1. उद्देश्य

1. वापसी न केवल उषा प्रियंवदा की, अपितु 'नयी कहानी की श्रेष्ठ रचना है।
2. 'वापसी' कहानी के सारांश का परिचय इस इकाई में मिलेगा।
3. 'वापसी' कहानी की विशेषताओं का समग्र विवरण इस इकाई में मिलेगा।
4. 'वापसी' कहानी में प्रमुख पात्र गजाधर बाबू का चरित्र–चित्रण और विशेषताओं के बारे में जान सकेंगे।
5. वापसी कहानी के उद्धेश्य के बारे में समग्र विवरण आप इस इकाई के व्दारा परिचित होंगे।
6. इस कहानी में नयी पीढ़ी की आधुनिक जीवन शैली तथा हृदयहीनता पर भी प्रकाश डाला गया है।

6.2. प्रस्तावना:

'वापसी' न केवल उषा प्रियंवदा की, अपितु 'नयी कहानी' की श्रेष्ठ रचना है। नए बदलते पारिवारिक मूल्यों ने पुरानी पीढ़ी को परिवार में कितना नगण्य बना दिया है, इसका अत्यंत संवेदनात्मक चित्र 'वापसी' में देखने को मिलता है। गजाधर बाबू जीवन भर अपने परिवार के लिए रेलवे के क्वार्टर में एकांकी जीवन बिताते हैं। सेवानिवृत्त होने पर घर लौटना और अपने बीवी – बच्चों के बीच पारिवारिक

जीवन बिताना उनका सपना है। परंतु जब वे घर जाते हैं, तो महसूस करते हैं कि वहाँ उनके लिए कहीं जगह नहीं है वे अपने – आप क अकेला और अजनबी अनुभव करते हैं। बच्चे ही नहीं, पत्नी भी उनके साथ दुराव – सा रखती है। वह भी उस जीवन का ही एक हिस्सा बन गयी है। अंतत: वे एक शक्कर के कारखाने में नौकरी कर लेते हैं। पत्नी से भी साथ चलने का आग्रह कराते हैं, परंतु वह कहानी हैं, "मैं चलूँगी तो यहाँ का क्या होगा? इतनी बड़ी गृहस्ती, फिर सयानी लड़की....। गजाधर बाबू चले जाते हैं। कहानी के अंत में गजाधर बाबू की पत्नी के ये शब्द कितना कुछ कह जाते हैं – "अरे नरेंद्र, बाबूजी की चारपाई कमरे से निकाल दें।

उसमें चलने तक की जगह नहीं है"। वापसी में मध्यवर्गीय बदलते पारिवारिक संबंधों की यथार्थ झाँकी प्रस्तुत की गई है। नयी पीढ़ी की आधुनिक जीवन शैली तथा हृदयहीनता पर भी इसमें प्रकाश डाला गया है।

6.3. उषा प्रियंवदा – लेखक का परिचय:

'नयी कहानी' के प्रतिभा संपन्न कहानीकारों में उषा प्रियम्वदा का नाम अग्रगण्य है। यद्यपि उनका जन्म सन 1931 में भारत में हुआ था तथापि ये अमरीकी नागरिक हैं। उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में पी.एचडी. की उपाधि प्राप्त की। उसके पश्चात वे प्रयाग विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापिका रही। इसके बाद उषाजी अमरीकी साहित्य पर शोध करने के लिए इंडियाना विश्वविद्यालय यू.एस.ए चली गयी। वहाँ उन्होंने साहित्य सृजन किया। उनके साथ साहित्य में आधुनिक जीवन की विसंगतियाँ, रिक्तता, एकाकीपन, टूटन आदि की मार्मिक व्यंजना हुई है। जिंदगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा तथा कितना बड़ा झूठ उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। 'पचपन खंभे लाल दीवारें' तथा 'रुकोगी नहीं राधिका' उनके बहुचर्चित उपन्यास हैं। मध्यवर्गीय जीवन की विभिन्न समस्याओं का अत्यंत सूक्ष्म – संवेदनशील, यथार्थ एवं मार्मिक चित्रण उनकी कहानियों का प्राण – तत्व है । प्रमुख रूप से महिलाओं की संवेदनाओं की कथाकार है। परंतु समाज की व्याप्त स्थितियाँ भी उनकी कहानियों में मूर्त हुई हैं नारी के अंतर्गत का अत्यंत सूक्ष्म अंकन उषा प्रियंवदा की कहानियों में देखने को मिलता है।

6.4. वापसी – कहानी

गजाधर बाबू ने कमरे में जमे सामान पर एक नजर दौड़ाई – दो बक्स, डोलची, बालटी।

"यह डिब्बा कैसा है, गनेशी?" उन्होंने पूछा। गनेशी बिस्तर बाँधता हुआ, कुछ गर्व, कुछ दु:ख, कुछ लज्जा से बोला, "घरवाली ने साथ मनें कुछ बेसन के लड्डू रख दिए हैं। कहा, बाबूजी को पसन्द थे। अब कहाँ हम गरीब लोग आपकी कुछ खातिर कर पाएँगे"। घर जाने की खुशी में भी गजाधर बाबू ने एक विषाद का अनुभव किया, जैसे एक परिचित, स्नेह, आदरमय, सहज संसार से उनका नाता टूट रहा हो।

"कभी – कभी हम लोगों की भी खबर लेते रहिएगा" । गनेशी बिस्तर में रस्सी बाँधता हुआ बोला ।

"कभी कुछ जरूरत हो तो लिखना गनेशी, इन अगहन तक बिटिया की शादी कर दो" ।

गनेशी ने अंगोछे के छोर से आँखें पोछी, "अब आप लोग सहारा न देंगे, तो कौन देगा? आप यहाँ रहते यो शादी में कुछ हौसला रहता"।

गजाधर बाबू चलने को तैयार बैठे थे। रेलवे क्वार्टर का यह कमरा जिसमें उन्होंने कितने वर्ष बिताए थे, उनका सामान हट जाने से कुरूप और नग्न था। आँगन में रोपे पौधे भी जान – पहचान के लोग ले गए थे और जगह – जगह मिट्टी बिखरी हुई थी। पर पत्नी, बाल – बच्चों के साथ रहने की कल्पना में यह बिछोह एक दुर्बल लहर की तरह उठ कर विलीन हो गया।

गजाधर बाबू खुश थे। पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर हो कर जा रहे, जो अधिकांश समय उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे। संसार की दृष्टि से उनका जीवन सफल कहा जा सकता था। उन्होंने शहर में एक मकान बनवा लिया था, बड़े लड़के अमर और लड़की कान्ति की शादियों कर दी थीं, दो बच्चे ऊँची कक्षाओं में पढ़ रहे थे। गजाधर बाबू नौकरी के कारण प्राय: छोटे स्टेशनों पर रहे, और उनके बच्चे तथा पत्नी शहर में, जिससे पढ़ाई में बाधा न हो। गजाधर बाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और स्नेह के आकांक्षी भी। जब परिवार साथ था, ड्यूटी से लौट कर बच्चों से हँसते – बोलते, पत्नी से कुछ मनोविनोद करते, उन सबके चल जाने से उनके जीवन में गहन सूनापन भर उठा। खाली क्षणों में उनसे घर में टिक न जाता। कवि प्रकृति के न होने पर भी उन्हें पत्नी की स्नेहपूर्ण बटें याद आती रहती। दोपहर में गर्मी होने पर भी, दो बजे तक आग जलाए रहती और उनके स्टेशन से वापस आने पर गरम – गरम रोटियाँ सेंकति... उनके खा चुकने और मना करने पर भी थोड़ा – सा कुछ और थाली में परोस देती और प्यार से आग्रह करती। जब वह थके – हारे बाहर से आते, तो उनकी आहट पा वह रसोई के व्दार पर निकल आती ,और उनकी सलज्ज आँखें मुस्कुरा उठतीं। गजाधर बाबू को तब हर छोटी बात भी याद आती और वह उदास हो उठते ..... अब कितने वर्षा बाद वह अवसर आया था जब वह फिर उसी स्नेह और आदर के मध्य रहने जा रहे थे।

टोपी उतार कर गजाधर बाबू ने चारपाई पर रख दी, जूते खोल कर नीचे खिसका दिए, अन्दर से रह – रह कर कहकहों की आवाज आ रही थी। इतवार का दिन था और उनके बच्चे इकट्ठे होकर नाश्ता कर रहे थे। गजाधर बाबू के सूखे चेहरे पर स्निग्ध मुस्कान आ गई। उसी तरह मुस्कराते हुए, वह बिना खाँसे अन्दर चले आये। उन्होंने देखा कि नरेन्द्र कमर पर हाथ रखे शायद गत रात्रि की फिल्म मेम देखे गए किसी नृत्य की नकल कर रहा था, और बसन्ती हँस – हँस कर दुहरी हो रही थी। अमर की बहू को अपने तर – बदन, आँचल या घूंघट का कोई होश न था और वह उन्मुक्तरूप से हँस रही थी। गजाधर बाबू को देखते ही नरेंद्र धप – से – बैठ गया और चाय का प्याला उठा कर मुँह से लगा लिया। बहु को होश आया और उसने झट से माघा ढंक लिया, केवल बसन्ती का शरीर रह – रह कर हँसी दबाने के प्रयत्न में हिलता रहा।

गजाधर बाबू ने मुस्कराते हुए उन लोगों को देखा। फिर कहा, "क्यों नरेन्द्र, क्या नकल कर रहे हो ?कुछ नहीं, बाबूजी"। नरेन्द्र ने सिटपिटा कर कहा। गजाधर बाबू ने चाहा कि वह इस मनोविनोद में भाग लेते, पर उनके आते ही जैसे सब कुन्ठित हो चुप हो गए। उससे उनके मन में थोड़ी – सी खिन्नता उपज आई। बैठते हुए बोले, 'बसन्ती, चाय मुझे भी देना। तुम्हारी अम्मा की पुजा अभी चल रही क्या ?"

बसन्ती ने माँ की कोठरी की ओर देखा, अभी आती ही होंगी, और प्याले में उनके लिए चाय छानने लगी। बहू चुपचाप पहले ही चली गई थी, अब नरेन्द्र भी चाय का आखिरी घूँट पी कर उठ खड़ा हुआ, केवल बसन्ती पिता के लिहाज में, चौके में बैठी माँ की राह देखने लगी। गजाधर बाबू ने एक घूँट चाय पी, फिर कहा, "बिट्टी – चाय तो फीकी है" ।

"लाइए, चीनी और डाल दूँ" । बसन्ती बोली।

"रहने दो, तुम्हारी अम्मा जब आएगी, तभी पी लूँगा" ।

थोड़ी देर में उनकी पत्नी हाथ में अर्थ अध्यर्र का लोटा लिए निकली और अशुद्ध स्तुति कहते हुए तुलसी में डाल दिया। उन्हें देखते ही बसन्ती भी उठ गई। पत्नी ने आकर गजाधर बाबू के मन में फाँसी – सी करक उठी, "अपने – अपने काम में लग गए है – आखिर बच्चे ही हैं" ।

पत्नी आकर चौके में बैठ गई। उन्होंने नाक – भौं चढ़ाकर चरों ओर जूठे बर्तनों पड़े हैं। इस घर में धरम – करम कुछ नहीं। पूजा करके सीधी चौके में घुसो" । फिर उन्होंने नौकरी को पुकारा, फिर पति की ओर देखकर बोली, "बहू ने भेजा होगा बाजार" । और एक लंबी साँस ले कर चुप हो रही।

गजाधर बाबू बैठ कर चाय और नाश्ते का इन्तजार करते रहे। उन्हें अचानक ही गनेशी की याद आ गई। रोज सुबह, पैसेंजर आने से पहले यह गरम – गरम पूरियाँ और जलेबियाँ और चाय लाकर रख देता था। गजाधर बाबू जब तक उठकर तैयार होते, कांच के गिलास में ऊपर तक भरी लबालब, पूरे ढाई चम्मच बीनी, और गाढ़ी मलाई। पैसेंजर भले ही रानीपुर लेट पहुँचे, गनेशी ने चाय पहुँचाने में कभी देर नहीं की। क्या मजाल कि कभी उससे कुछ कहना पड़े।

पत्नी का शिकायत – भरा स्वर सुन उनके विचारों में व्याघात पहुँचा। वह कह रही थीं, "सारा दिन इसी खिच – खिच में निकल जाता है। इस गृहस्थी का धन्धा पीटते –पीटते उमर बीत गई। कोई जरा हाथ भी नहीं बाँटता"।

"बहू क्या किया करती है?" गजाधर बाबू ने पूछा।

"पड़ी रहती है। बसंती को कहो तो फिर कहेगी कि कॉलेज जाना होता है" ।

गजाधर बाबू ने जोश मेम आकर बसन्ती कॉ आवाज दी । बसन्ती भाभी के कमरे से निकली तो गजाधर बाबू ने कहा, "बसन्ती आज से शाम का खाना बनाने कि ज़िम्मेदारी तुम पर है । सुबह का भोजन तुम्हारी भाभी बनाएगी"। बसन्ती मुँह लटका कर बोली – 'बबूजी, पढ़ना भी तो होता है" ।

गजाधर बाबू ने प्यार से समझाया, "तुम सुबह पढ़ लिया करो । तुम्हारी माँ बूढ़ी हुई, उनके शरीर में अब वह शक्ति नहीं बची है । तुम हो, तुम्हारी भाभी है, दोनों कॉ मिलकर कम में हाथ बंटाना चाहिए" ।

बसन्ती चुमनप रह गई । उसके जाने के बाद, उसकी माँ ने धीरे से कहा, "पढ़ने का तो बहाना है । कभी जी ही नहीं लगता । लगे कैसे ? शीला से ही फुरसत नहीं, बड़े – बड़े लड़के हैं उनके घर में, हर वक्त वहाँ घुसा रहना, मुझे नहीं सुहाता । मना करूँ तो सुनती नहीं" ।

नाश्ता कर, गजाधर बाबू बैठक में चले गए । घर छोटा था और ऐसी व्यवस्था हो चुकी थी कि उसमें गजाधर बाबू के रहने के लिए कोई स्थान न बचा था । जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ अस्थायी प्रबन्ध कर दिया जाता है, उसी प्रकार बैठक में कुर्सियों कॉ दीवार से सटाकर बीच में गजाधर बाबू के लिए पतली – सी चारपाई डाल दी गई थी । गजाधर बाबू उस कमरे में पड़े – पड़े, कभी – कभी अनायास ही, इस अस्थायित्व का अनुभव करने लगते । उन्हें याद हो आती उन रेलगाड़ियों की, जो आनी और थोड़ी देर रुक कर किसी और लक्ष्य की ओर चली जाती । पर छोटा होने के कारण बैठक में ही अब अपना प्रबन्ध किया था । उनकी पत्नी के पास अन्दर एक छोटा कमरा अवश्य था, पर वह एक ओर अचारों के मतमान साज, बन्त के कनस्तर और घी के घिरा था – दूसरी ओर पुरानी रजावी, दिरो में पिपटी और रस्सी से बंधी राखी थी, उसके पास एक बड़े – से टीन के बक्स में घर – भर के गरम कपड़े थे । बीच में एक अलगनी बंधी हुई थी, जिस पर प्राय: बसन्ती के कपड़े लापरवाही से रहते थे । वह भरसक उस कमरे में नहीं जाते थे । घर का दूसरा कमर और उसकी बहू के पास था । तीसरा कमरा, जो सामने की ओर था, बैठक था । गजाधर के आने से पहले उसमें अमर की ससुराल से आया बेंत की तीन कुर्सियों पर नीली गद्दियां और बहू के हाथों के कढ़े कुशन थे ।

जब कभी उनकी पत्नी को कोई लम्बी शिकायत करनी होती, तो अपनी चटाई बैठक में डाल पड़ जाती थीं । वह एक दिन चटाई ले कर आ गयीं । गजाधर बाबू ने घर – गृहस्ती की बातें छेड़ीं, वह घर का रवैया देख रहे थे । बहुत हलके से उन्होंने कहा कि अब हाथ में पैसा कम रहेगा, कुछ खर्च कम होना चाहिए ।

"सभी खर्च तो वाजिब – वाजिब है, किसका पेट काटूँ ? यही जोड़ – गांठ करते बूढ़ी हो गयी, न मन का पहना, न ओढा"।

गजाधर बाबू ने आहत, विस्मित दृष्टि से पत्नी को देखा। उनसे अपनी हैसियत छिपी न थी। उनकी पत्नी तंगी का अनुभव कर उसका उल्लेख करतीं। यह स्वाभाविक था, लेखिन उसमें सहानुभूति का पूर्ण अभाव गजाधर बाबू को बहुत खटका। उनसे यदि राय – बात की जाती कि प्रबन्ध कैसे होगा, तो उन्हें चिंता कम, संतोष अधिक होता। लेकिन उनसे तो केवल शिकायत की जाती थी, जैसे परिवार की सब परेशानियों के लिए वही जिम्मेदार थे।

"तुम्हें किसी बात की कमी है अमर की माँ – घर में बहू है, लड़के – बच्चे हैं, सिर्फ रुपये से ई आदमी अमीर नहीं होता" । गजाधर बाबू ने कहा और कहने के साथ ही अनुभव किया। यह उनकी आंतरिक अभिव्यक्ति थी – ऐसी कि उनकी पत्नी नहीं समझ सकती। "हाँ, बड़ा सुख है न बहू से। आज रसोई करने गई है, देखो क्या होता है ?" कहकर पत्नी ने आँखें मूंदी और सो गई। गजाधर बाबू बैठे हुए पत्नी को देखते रह गए। यही थी क्या उनकी पत्नी, जिसके हाथों के कोमल स्पर्श, जिसकी मुस्कान कि याद में उन्होंने सम्पूर्ण जीवन काट दिया था। उन्हें लगा कि वह लायंयमयी युवती जीवन की राह में कहीं खो गई और उसकी जगह आज जो स्त्री है वह उनके मन और प्राणों केलिए नितान्त अपरिचित है। गाढ़ी नींद में डूबी उनकी पत्नी ने भरा सा शरीर बहुत बेडौल और कुरूप लग रहा था, चेहरा श्रीहीन और रूखा था। गजाधर बाबू देर तक निस्संग दृष्टि से पत्नी को देखते रहें और फिर लेट कर छत की ओर ताकने लगे।

अन्दर कुछ गिर और उनकी पत्नी हड़बड़ा कर उठ बैठी, "लो बिल्ली ने कुछ गिरा दिया शायद" और वह अंदर भागीं। थोड़ी देर में लौट कर आयीं, तो उनका मुँह फूला हुआ था, "देखा बहू को, चौका खुला छोड़ आई, बिल्ली ने दाल की पतीली गिरा दी। सभी तो खाने को है, अब क्या खिलाऊँगी ?" वह सांस लेने को रुकी और बोलीं, "एक तरकारी और चार पराठे बनाने में सारा डिब्बा घी उंडेल कर रख दिया। जरा – सा दर्द नहीं, कमानेवाला हाड़ तोड़े, और यहाँ चीजें लुटें। मुझे तो मालूम था कि यह सब काम किसी के बस का नहीं हैं" ।

गजाधर बाबू को लगा कि पत्नी कुछ और बोलेंगी तो उनके कान झनझना उठेंगे। ओंठ खींच, करवट ले कर उन्होंने पत्नी की ओर पीठ कर ली।

रात का भोजन बसन्ती ने जन – बूझकर ऐसा बनाया था कि कौर तक निगला न जा सके। गजाधर बाबू चुपचाप खा कर उठ गये, पर नरेन्द्र थाली सरका कर उठ खड़ा हुआ और बोला, "मैं ऐसा खाना नहीं खा सकता" ।

बसन्ती तुनककर बोली, "तो न खाओ, कौन तुम्हारी खुशामद करता है" ।

"तुमसे खाना बनाने को कहा किसने था ?" नरेंद्र चिल्लाया।

"बाबूजी ने"

"बाबूजी को बैठ – बैठे यही सूझता है" ।

बसन्ती को उठा कर माँ ने नरेद्र को मनाया और अपने हाथ से कुछ बना कर खिलाया। गजाधर बाबू ने बाद में पत्नी से कहा, "इतनी बड़ी लड़की हो गई और उसे खाना बनाने तक शऊर नहीं आया ?" "अरे आता तो सब कुछ है, करना नहीं चाहती" । पत्नी ने उत्तर दिया। अगली शाम माँ को रसोई में देख, कपड़े बदल कर बसन्ती बाहर आई, तो बैठक में गजाधर बाबू ने टोक दिया, "कहाँ जा रही हो ?"

"पड़ोस में शीला के घरा", बसन्ती ने कहा।

"कोई जरूरत नहीं है, अंदर जाकर पढ़ो" गजाधर बाबू ने कड़े स्वर में कहा। कुछ देर अनिश्चित खड़े रह कर बसन्ती अन्दर चली गई। गजाधर बाबू शाम को रोज टहलने चल जाते थे, लौट कर आये तो पत्नी ने कहा, "क्या कह दिया बसन्ती से ? शाम से मुँह लपेटे पड़ी है। खाना भी नहीं खाया" ।

गजाधर बाबू खिन्न हो आए। पत्नी की बात का उन्होंने उत्तर नहीं दिया। उन्होंने मन में निश्चय कर लिया कि बसन्ती की शादी जल्दी ही कर देनी है। उस दिन के बाद बसन्ती पिता से बची – बची रहने लगी। जाना हो तो पिछवाड़े से जातीं। गजाधर बाबू ने दो – एक बार पत्नी से पूछा तो उत्तर मिला "रूठी हुई है"। गजाधर बाबू को रोष हुआ। लड़की के इतने मिजाज, जाने को रोक दिया तो पिता से बोलेगी नहीं। फिर उनकी पत्नी ने ही सूचना दी कि अमर अलग अलग रहने कि सोच रहा है।

"क्यों ?" गजाधर बाबू ने चकित हो कर पूछा।

पत्नी ने साफ – साफ उत्तर नहीं दिया। अमर और उसकी बहू कि शिकायतें बहुत थी। उनका कहना था कि गजाधर बाबू हमेशा बैठक में ही पड़े रहते हैं, कोई आने – जानेवाला हो तो कहीं बिठाने की जगह नहीं। अमर को अब भी वह छोटा – सा समझते थे और मौके – बेमौके टोक देते थे। बहू को काम करना पड़ता था और सास जब – तक फूहड़पन पर ताने देती थीं। "हमारे आने से पहले भी कभी ऐसी बात हुई थी ?" गजाधर बाबू ने पूछा। पत्नी ने सिर हिलाकर बताया कि "नहीं!" पहले अमर घर का मालिक बन कर रहता था, बहू को कोई रोक – टोक न थी, अमर के दोस्तों का प्राय: यहीं अड्डा जमा रहता था और अन्दर से नाश्ता – चाय तैयार हो कर जाता रहता था। बसन्ती को भी वही अच्छा लगता था।

गजाधर बाबू ने बहुत धीरे से कहा, "अमर से कहो, जल्दबाज़ी की कोई जरूरत नहीं है" ।

अगले दिन सुबह घूम कर लौटे तो उन्होंने पाया कि बैठक में उनकी चारपाई नहीं है। अन्दर जाकर पूछने वाले ही थे कि उनकी दृष्टि रसोई के अन्दर बैठी पत्नी पर पड़ी। उन्होंने यह कहने को मुँह खोला कि बहू कहाँ है; पर कुछ याद कर चुप हो गए। पत्नी की कोठरी में झांका तो अचार, रजाइयों और कनस्तरों के मध्य अपनी चारपाई लगी पायी। गजाधर बाबू ने कोट उतार कर अलगनी के कुछ कपड़े खिसका कर एक किनारे टांग दिया। निश्चित जीवन, सुबह पैसेंजर ट्रेन आने पर स्टेशन की चहल – पहल चिरपरिचित चेहरे और पटरी पर रेल के पहियों की खट्खट् जो उनके लिए मधुर संगीत की तरह था। तूफान और डाक गाड़ी के इंजनों की चिंघाड़ उनकी अकेली रातों की साथी थी। सेठ रामजीरत्न के मिल के कुछ लोग कभी

कभी पास आ बैठते, वह उनका दायरा था, वही उनके साथी। वह जीवन अब उन्हें खोई निधि-सा प्रतीत हुआ। उन्हें लगा कि वह जिन्दगी व्दारा ठगे गए हैं उन्होंने जो कुछ चाहा, उसमें से उन्हें एक बूँद भी न मिली।

लेटे हुए वह घर के अंदर से आते विविध स्वरों को सुनते रहे। बहू और सास कि छोटी-सी झड़प, बालटी पर खुले नल कि आवाज, रसोई के बर्तनों की खटपट और उसी में दो गोरैयों का वार्तालाप-और अचानक ही उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब घर की किसी बात में दखल न देंगे। यदि गृहस्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई की जगह यहीं हैं, तो यहीं पड़े रहेंगे। अगर कहीं और डाल दी गई तो वहाँ चले जाएंगे। यदि बच्चों के जीवन में उनके लिए कहीं स्थान नहीं, तो अपने ही घर में परदेशी की तरह पड़े रहेंगे... और उस दिन के बाद सचमुच गजाधर बाबू कुछ नहीं बोले। नरेंद्र माँगने आया तो उसे बिना कारण पूछे रुपये दे दिये, बसन्ती काफी अंधेरा हो जाने के बाद भी पड़ोस में रही तो भी उन्होंने कुछ नहीं कहा – पर उन्हें सबसे बड़ा गम यह था कि उनकी पत्नी ने भी उनमें कुछ परिवर्तन लक्ष्य नहीं किया। वह मन ही मन कितना भार ढो रहे हैं, इससे वह अनजान बनी रहीं। बल्कि उन्हें पति के घर के मामले में हस्तक्षेप न करने के कारण शान्ति ही थी। कभी-कभी कह भी उठती, 'ठीक ही हैं, आप बीच में न पड़ा कीजिए, बच्चे बड़े हो गए हैं, हमारा जो कर्तव्य था, कर रहें हैं। पढ़ा रहें हैं, शादी कर देंगे"।

गजाधर बाबू ने आहत दृष्टि से पत्नी को देखा। उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी व बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन मात्र है। जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी माँग में सिन्दूर डालने की अधिकारी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है, उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। वह घी और चीनी के डिब्बों में इतना रमी हुई कि अब वही उनकी संपूर्ण दुनिया बन गई है। गजाधर बाबू उनके जीवन के केंद्र नहीं हो सकते, उन्हें तो अब बेटी की शादी के लिए भी उत्साह बुझ गया। किसी बात में हस्तक्षेप न करने के निश्चय के बाद भी उनका अस्तित्व उस वातावरण का एक भाग न बन सका। उनकी उपस्थिति उस घर में ऐसी असंगत लगाने लगी थी, जैसे सजी हुई बैठक में उनकी चारपाई थी। उनकी सारी खुशी एक गहरी उदासीनता में डूब गई।

इतने सब निश्चयों के बावजूद भी गजाधर बाबू एक दिन बीच में दखल दे बैठे। पत्नी स्वभावानुसार नौकर की शिकायत कर रही थी, 'कितना कामचोर है, बाजार की हर चीज में पैसा बनाता है, खाने बैठता है तो खाना ही चला जाता है। "गजाधर बाबू को बराबर यह महसूस होता रहता था कि उनके रहन-सहन और खर्च उनकी हैसियत से कहीं ज्यादा है छोटा-मोटा काम है, घर में तीन मर्द हैं, कोई-न-कोई कर ही देगा। उन्होंने उसी दिन नौकर का हिसाब कर दिया। अमर दफ्तर से आया तो नौकरी को पुकारने लगा।

अमर की बहू बोली, बाबूजी ने नौकर को छुड़ा दिया हैं" ।

"क्यों?"

"वे कहते हैं, खर्च बहुत है"।

यह वार्तालाप बहुत सीधा-सा था, पर जिस टोन में बहू बोली, गजाधर बाबू टहलने नहीं गए। आलस्य में उठ कर बत्ती भी नहीं जलाई – इस बात से बेखबर नरेंद्र माँ से कहने लगा, "अम्मा, तुम बाबूजी से कहती क्यों नहीं ? बैठे-बिठाये कुछ नहीं तो नौकर ही छुड़ा दिया। अगर बाबूजी यह समझे कि मैं साइकिल पर गेंहूं रख आटा पीसने जाऊँगा तो मुझसे यह नहीं होगा"। "हाँ अम्मा" – बसन्ती का स्वर था, "मैं कॉलेज भी जाऊँ और लौट कर घर में झाड़ू भी लगाऊँ, यह मेरे बस की बात नहीं है" ।

"बूढ़े आदमी हैं" अमर भुनभुनाया, "चुपचाप पड़े रहें। हर चीज में दखल क्यों देते हैं ?"। पत्नी ने बड़े व्यंग से कहा, "और कुछ नही सुझा तो तुम्हारी बहू को ही चौके में भेज दिया। वह गई तो पंद्रह दिन का राशन पाँच दिन में बना कर रख दिया"। बहू कुछ कहे, इससे पहले वह चौके में घुस गायीं। कुछ देर में अपनी कोठरी में आई और बिजली जलाई तो गजाधर बाबू को लेटे देख बड़ी सिटपिटाई। गजाधर बाबू की मुख-मुद्रा से वह उनके भावों का अनुमान न लगा सकी। वह चुप
आँखें बंद किये लेते रहे।

गजाधर बाबू चिट्ठी हाथ में लिए अंदर आये और पत्नी को पुकारा। वह भीगे हाथ लिये निकलीं और आंचल से पोंछती हुई पास आ खड़ी हुई। गजाधर बाबू ने बिना किसी भूमिका के कहा, "मुझे सेठ रामजीमल की चीनी-मिल गई है। खाली बैठे रहने से तो चार पैसे घर में आएं, वहीं अच्छा है। उन्होंने तो पहले ही कहा था, मैंने मना कर दिया था" । फिर कुछ रुक कर, जैसी बुझी हुई आग में एक चिनगारी चमक उठे, उन्होंने धीमे स्वर में कहा, "मैंने सोचा था, बरसों तुम सबसे अलग रहने के बाद, अवकाश पा कर परिवार के साथ रहूंगा। खैर, परसों जाना है। तुम भी चलोगी ?"

"मैं"? पत्नी ने सकपकाकर कहा "मैं चलूंगी तो यहाँ का क्या होगा ? इतनी बड़ी गृहस्थी, फिर सयानी लड़की"

बात बीच में काट कर गजाधर बाबू ने हताश स्वर में कहा, "ठीक है, तुम यहीं रहो। मैंने तो ऐसे ही कहा था" । और गहरे मौन में डूब गए।

नरेंद्र ने बड़ी तत्परता से बिस्तर बाँधा और रिक्शा बुला लाया। गजाधर बाबू का टीन का बक्सा उस पर रख दिया। नसते के लिए लड्डू और मठरी की डजलिया हाथ में लिए गजाधर बाबू रिक्शे में बैठ गए। एक दृष्टि उन्होंने अपने परिवार पर डाली और फिर दूसरी ओर देखने लगे और रिक्शा चल पड़ा। उनके जाने के बाद सब अन्दर लौट आये, बहू ने अमर से पूछा, "सिनेमा ले चलिएगा न ?" बसन्ती ने उछल कर कहा, "भैया, हमें भी" ।

गजाधर बाबू की पत्नी सीधे चौके में चली गई। बची हुई मठरियों को कटोरदान में रखकर अपने कमरे में लाई और कनस्तरों के पास रख दिया। फिर बाहर आ कर कहा –"अरे नरेंद्र, बाबूजी की चारपाई कमरे से निकाल दे, उसमें चल तक की जगह नहीं है" ।

* * *

6.5. कहानी की विशेषताएँ, समीक्षा

वापसी' कहानी में परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व है। आधुनिकता के इस दौर में दो पीढ़ियों के बीच हो रहे बदलाव व टकराव का लेखा जोखा प्रस्तुत है। कहानी में सेवानिवृत्त हो कर घर लौटे गजाधर बाबू को अपने ही घर में पराया कर दिए जाने के कटु अनुभवों को चित्रित किया गया है। 'वापसी' एक रिटायर्ड रेलवे कर्मचारी की कहानी के बारेमें है ।

कहानी का मूल भाव जब संक्षिप्त होते–होते एक शब्द या शब्द समूह में परिवर्तित हो जाये तो वहीं उसका सार्थक शीर्षक होता है। आलोच्य कहानी का शीर्षक कहानी की प्रमुख घटना पर आधारित एवं कथा की मूल संवेदना को अभिव्यक्त करने में सफल है। गजाधर बाबू पैंतीस वर्ष पश्चात् रेलवे में नौकरी करके रिटायर होते है।

अपनी नौकरी में अधिकतर उन्हें अपने परिवार से अलग रहना पड़ता। वह स्नेही व्यक्ति थे। जिस समय रिटायर होते है, तो उन्हें एक परिचित संसार को छोड़ने का दुख होता है, किन्तु उन्हें अपने परिवार के साथ रह सकने की प्रसन्नता भी बहुत होती है। लेकिन अपने घर में आकर व्यर्थता का अनुभव करते है। जैसे किसी मेहमान के लिए अस्थाई चारपाई का प्रबन्ध कर दिया जाता है वैसे ही उनके लिए बैठक में पतली–सी चारपाई डाल दी गयी। वे अपनी पत्नी से भी बातचीत में सहानुभूति का अभाव पाते है और अनुभव करते है कि उनकी लड़की, पुत्र, पुत्रवधू को किसी भी बात में उनका हस्तक्षेप सहनू नहीं है।

उनकी उपस्थिति उस घर में ऐसी लगने लगी जैसे बैठक में उनकी चारपाई थी। उन्होंने अनुभव किया कि वह अपनी पत्नी और बच्चों के लिए धनोपार्जन का साधन मात्र थे। इन सब बातों से क्षुब्ध होकर वे अन्यत्र नौकरी के लिए प्रार्थनापत्र देते है तथा नियुक्ति पत्र मिल जाने पर वहाँ से चले जाते है। उनकी घर से वापिस नौकरी पर लौटने की घटना ही इस कहानी का शीर्षक है। उनके जीवन की सारी कटुता, खिन्नता उनकी इस 'वापसी' में समाहित हो जाती है। इस प्रकार का शीर्षक अत्यन्त सार्थक सिद्ध होता है।

निष्कर्ष :- 'वापसी' आधुनिक युग के वास्तविक यथार्थ को प्रस्तुत करती है कहानी यह दर्शाती है कि आधुनिक पीढ़ी के लिए परिवार में पुराने मूल्यों की तरह पिता का भी कोई स्थान नहीं रह गया है। वह पत्नी व बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त पात्र मात्र बन गया है। पत्नी भी जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी मांग में सिंदूर डालने की अधिकारिणी है तथा समाज में प्रतिष्ठा पाती है। उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से ही अपने सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। गजाधर बाबू की परेशानी यह है कि वह जीवन यात्रा के अतीत के पन्नों को पुनः वैसे ही जीना चाहते हैं किन्तु अब ये संभव नहीं है। क्योंकि अब उनके लिए घरौर परिवार में कोई जगह नहीं है। इसप्रकार यह कहानी वर्तमान युग मे बिखरते मध्यवर्गीय परिवार की त्रासदी तथा मूल्यों के विघटन की समस्या पर प्रकाश डालती है। और निराश हो कर पुन: चीनी मील को नयी नौकरी खोज कर घर से चले जाने का फैसला ले लेते हैं ।

6.6. कहानी के प्रमुख पत्रों का चरित्र – चित्रण

गजाधर बाबू

'वापसी' कहानी में गजाधर बाबू एक निम्न मध्यमवर्गीय समाज के नौकरी पेशा व्यक्ति थे। जिन्होंने अपने घर परिवार से दूर रहकर 35 साल तक इसी आशा में अकेले गुजार दिए कि सेवानिवृत्ति के बाद वह अपने परिवार के साथ सुखी एवं संतोषी जीवन बताएंगे। लेकिन जब सेवानिवृत्ति के बाद वास्तविक स्थिति से उनका सामना पड़ा, तब उन्हें एहसास हुआ कि उनके परिवार में उनका अस्तित्व मात्र धन–उपार्जन करने वाले व्यक्ति तक का ही सीमित था यानि इसके अतिरिक्त परिवार में इनका कोई विशेष महत्व या अपनत्व नही था।

तब उन्हें अपने नौकरी में बिताए गए पल याद आने लगे। जब वे रेलवे क्वार्टर में रहते थे और गाड़ियों के आने–जाने पर स्टेशन की चहल–पहल और रेल के पहियों की खट–खट की आवाज उन्हे किसी मधुर संगीत की तरह प्रतीत होती थी। सेवानिवृत्ति के बाद अपने परिवार में अपनत्व न मिलने के कारण उन्हें नौकरी में बिताये पल अनमोल लगने लगे थे।

गजाधर बाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और स्नेह के आकांक्षी भी। जब परिवार साथ था, डयूटी से लौट कर बच्चों से हँसतेवह अपने परिवार से बेहद प्रेम करते थे, इसीलिए अपने रिटायरमेंट के बाद उन्होंने अपने पत्नी और बच्चों के साथ शेष जीवन बिताने का निश्चय किया था। नौकरी के कारण बरसों तक अकेले रहने की कारण उनके जीवन में एक सूनापन आ गया था और वह इस सूनेपन अपने अपने परिवार के साथ रहकर भरना चाहते थे. –खेलते, पत्नी से कुछ मनोविनोद करते – उन सबके चले जाने से उनके जीवन में गहन सूनापन भर उठा।

6.7. कहानी का उद्देश्य

स्टेशन मास्टर की नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद गजाधर बाबू बड़े उत्साह से अपने परिवार के साथ रहने की इच्छा लिए घर लौटते हैं। रेलवे क्वार्टर में रह कर नौकरी करते हुए गजाधर बाबू को पैंतीस सालों तक परिवार से दूर रहना पड़ा था ताकि उनका परिवार शहर में सुख- सुविधाओं के बीच रह सके। शहर में रहने से उन्हें किसी प्रकार की कमी का बोध न होने पाए। नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद उन्होंने सोचा कि अब जिंदगी के बचे दिन अपने परिजनों के साथ प्यार और आराम से बिताएंगे। एक सुंदर और सुखद घर का सपना संजोए वे घर लौटे तो उन्होंने पाया कि परिवार के लोग अपने - अपने ढंग से जी रहे हैं। बेटा घर का मालिक बना हुआ है। बेटी और बहू घर का कोई काम नहीं करतीं और यदि उन्हें रसोई बनाने को कहा जाए तो वे जानबूझ कर आवश्यकता से अधिक राशन खर्च कर देती हैं इसलिए उनकी पत्नी ने र्षक और रसोई की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है। घर के अन्य कामों के लिए नौकर रखा गया है, जिसकी कोई आवश्यकता ही नहीं है। जिस परिवार के लिए सालों छोटे - मोटे स्टेशन के क्वाटर में अकेले रहकर उन्होंने अपना जीवन गुजार दिया उसी परिवार के किसी सदस्य के मन में उनके प्रति कोई लगाव नहीं है। बच्चों के लिए वे केवल पैसा कमाने के साधन मात्र हैं। गजाधर बाबू की उपस्थिति व किसी कार्य में

उनका हस्तक्षेप बेटे बहू को स्वीकार नहीं हो पाती। उनके होने से उन्हें अपने मन से जीने की स्वतंत्रता नहीं मिल पाती। उनकी अपनी बेटी भी एक छोटी सी डांट पर मुँह फुला देती है तथा उसने कटकर रहने लगती है। उनकी पत्नी उन्हें समझने की बजाय उलटे उन्हीं को बच्चों के फैसलों के बीच में न पड़ने की सलाह देती है।

परिवार में गजाधर बाबू की वापसी आधुनिक परिवार में टूटते पारिवारिक संबंधों के साथ परिवार के बूढ़े व्यक्ति की लाचारी की झांकी प्रस्तुत करती है। गजाधर बाबू अपने बच्चों के साथ उनके मनोविनोद में वह शरीक होना चाहते हैं लेकिन बच्चे उन्हें देखते ही गंभीर हो जाते हैं। घर के सभी सदस्य गजाधर बाबू के फैसले का निरादर कर देते हैं। कुछ समय बाद घर में उनकी उपस्थिति बच्चो को अखरने लगती है। घरेलू मामले में उनके किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप को उनकी पत्नी तथा बच्चे स्वीकार नहीं करते उलटे उनके फैसले का विरोध करने लगते हैं। उनके कारण घर में दोस्तों के बीच चलने वाली चाय पार्टी में अवरोध न हो इसलिए बैठक से उनकी चारपाई हटाकर माँ के कमरे में लगा दी जाती है। उनके लिए सबसे दु:खद बात यह होती है कि जिस पत्नी का स्नेह और सौहार्द नौकरी के समय निरंतर उनके स्मरण में रहा करता था, अब वही पत्नी घर की रसोई सम्हालने में ही संतोष का अनुभव करती है तथा पति से अधिक बच्चों के बीच रहने में अपने जीवन की सार्थकता समझती है। कुलमिलाकर गजाधर बाबू अपने परिजनों के बीच पराया हो जाना बर्दाश नहीं कर पाते। अपनी पत्नी और बच्चों से निराश हो कर पुन; चीनी मील को नयी नौकरी खोज कर घर से चले जाने का फैसला ले लेते हैं।

6.8. कुछ मुख्य स्मरण रखने योग्य बातें

1) वापसी' आधुनिक युग के वास्तविक यथार्थ को प्रस्तुत करती है ।

2) आधुनिक पीढ़ी के लिए परिवार में पुराने मूल्यों की तरह पिता का भी कोई स्थान नहीं रह गया है। वह पत्नी व बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त पात्र मात्र बन गया है।

3) उषा प्रियवंदा ने अपनी कहानियों में पारिवारिक जीवन की परिवर्तित व्यवस्था एवं प्रेम सम्बन्धों के बदलते स्वरूप को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

4) आधुनिक परिवारों में बदलते मानवीय सम्बन्धों की व्याख्या बहुत सुन्दर और स्वाभाविक ढंग से की गयी है।

5) कहानी में सेवानिवृत्त हो कर घर लौटे गजाधर बाबू को अपने ही घर में पराया कर दिए जाने के कटु अनुभवों को चित्रित किया गया है ।

6) 'वापसी' कहानी में परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व है।

7) आधुनिकता के इस दौर में दो पीढ़ियों के बीच हो रहे बदलाव व टकराव का लेखा जोखा प्रस्तुतहै।

6.9. बोध प्रश्न

1) 'वापसी' कहानी के माध्यम से गजाधर बाबू का चरित्र – चित्रण कीजिये।

2) 'वापसी' कहानी के माध्यम से मध्यमवर्गीय परिवार की विवशताओं पर प्रकाश डालिए।

3) वापसी कहानी का सारांश लिखिए।

4) 'वापसी' कहानी में आधुनिक जीवन का प्रकाश डालिए।

5) गजाधर बाबू की मानसिक स्थिति पर प्रकाश डालिए।

6) "वापसी" कहानी के शीर्षक पर प्रकाश डिलिए

6.10. कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) आधुनिक हिन्दी निबंध - सुरेशचन्द्र गुप्ता

2) आधुनिक हिन्दी निबंध - भुवनेश्वरी चरण सक्सेना

3) साहित्य मुखी - रामधारी सिंह "दिनकर"

4) निर्मला उपन्यास - प्रेमचंद

5) चर्चित कहानियाँ - गुलाम यम खान शबनम पुस्तक

*****

Dr.A. Sarala Devi,
I/c Department of Hindi,
S.S.& N College, Narasaraopet,
Cell No: 9248906047.
Mail.ID: saraladevi202@gmail.com

Lesson - 7

तीसरा विभाग

हिन्दी व्याकरण

7.1. शुद्ध कीजिए, संधि, समास

7.2. वचन

7.3. लिंग

7.4. वाच्य

7.5. कारक

7.6. काल

7.7. वाक्य प्रयोग

7.8. कार्यालयी हिन्दी

7.9. पत्र लेखन

वाक्यों का शुद्ध प्रयोग, संधि और समास

इकाई की रुपरेखा :-

1. उद्धेश्य
2. प्रस्तावना
3. शुद्ध कीजिए - अभ्यास
   - (अ) लिंग और वचन संबंधी
   - (आ) ने प्रप्यय संबंधी
   - (इ) अपना प्रयोग
   - (ई) चाहिए प्रयोग
   - (उ) विधि क्रिया संबंधी
   - (ऊ) क्रिया संबंधी
   - (ऋ) विभक्ति - प्रत्यय संबंधी
   - (ए) कृदंत सबंधी
   - (ऐ) वर्तिनी संबंधी
   - (ओ) अभ्यास
4. संधि
   - (अ) स्वर संधि
   - (आ) व्यंजन संधि
   - (इ) विसर्ग संधि
   - (ई) संधिविच्छेद - अभ्यास
5. समास
   - (आ) समास के लक्षण
   - (आ) समास के भेद
   - (इ) विग्रह वाक्य - समास का नाम - अभ्यास
6. कुछ स्मरण रखने योग्य बातें
7. बोध प्रश्न
8. सहायक ग्रन्ध सूची

7.1 उद्धेश्य :-

इस इकाई में आप व्याकरण संबंधी कुछ विषयों की जानकारी प्राप्त करेंगे। व्याकरण की आवश्यकता के बारे में जान लेंगे। व्याकरण वह शास्त्र है जिसमें शब्दों के शुद्ध रुप और प्रयोग के नियमों का निरुपण होता है। व्याकरण (वि + आ + करण) शब्द का अर्थ है भली भाँति समझना।

व्याकरण पढ़ने से लाभ ये हैं।

1. हम अपनी भाषा के नियम जान सकते है और भूलों का कारण समझ सकते हैं। क्या अशुद्ध हुई और क्यों यह अशुद्ध हुई ? व्याकरण पढ़े बिना इस प्रश्न का उत्तर नही मिलता।
2. कभी - कभी कठिन भाषा का अर्थ केवल व्याकरण की सहायता से जाना जा सकता है, अर्थात् व्याकरण जाने बिना भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नही होता। व्याकरण के ज्ञान से विदेशी भाषा को सीखना भी सरल होजाता है

इस प्रकार छात्रों को व्याकरण की जानकारी देना इस इकाई का उद्धेश्य है।

7.2 प्रस्तावना :-

आप इस इकाई में हिन्दी भाषा के व्याकरण नियमों के बारे में जान लेंगे। भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिए और प्रभावशाली वाक्यों के प्रयोग के लिए सुन्दर वाक्यों के प्रयोग के लिए हमें व्याकरण के परिज्ञान की जरुरत होती है। इस इकाई में आप अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करने की जानकारी प्राप्त करेंगे। इसके साथ - साथ संधि के बारे में संधि के प्रकार और उनके नियमों के बारे में जानलेंगे। कुछ शब्दों के संधि विच्छेद का अभ्यास भी करेंगे।

व्याकरण में समासिक शब्दों का भी एक विशिष्ट स्थान होता है। इस लिए इस इकाई में समास, समास के भेदों के बारे में जान लेंगे और साथ साथ कुछ इने गिने समासों के विग्रह वाक्य और समासों के नामों का परिचय भी प्राप्त करेंगे।

7.3 शुद्ध कीजिए :-

अशुद्ध वाक्य को शुद्ध करने के लिये व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। इसलिए आवश्यकतानुसार व्याकरण के संकेत दिये गये है। परीक्षा में लिखने की व्याकरण नहीं है।

(अ) लिंग और वचन संबंधी :

1. कमला अच्छी घी लाती है। (अशुद्ध)
   कमला अच्छा घी लाती है। (शुद्ध)
   (घी = पुंलिंग)
2. यह दुध अच्छी है। (अशुद्ध)
   यह दूध अच्छा है। (शुद्ध)
   (दूध = पुंलिंग)
3. गोदावरी की पानी मीठी है। (आशुद्ध)
   गोदावरी का पानी मीठा है। (शुद्ध)
   (पानी = पुंलिंग)
4. आज का निथि पंचमी है। (अशुद्ध)
   आज की निथि पंचमी है। (शुद्ध)
   (निथि = स्त्रीलिंग)
5. यह तुलसीदास का रामायण है। (अशुद्ध)
   यह तुलसीदास की रामायण है। (शुद्ध)
   (रामायण = स्त्रीलिंग)

6. वह पुस्तक मेरा हैं। (अशुद्ध)
वह पुस्तक मेरी है। (शुद्ध)
(पुस्तक = स्त्रीलिंग)

7. मैं आपका दर्शन करने आया हूँ। (अशुद्ध)
मैं आपके दर्शन करने आया हूँ। (शुद्ध)
(दर्शन = बहुवचन)

8. उसका प्राण चला गया। (अशुद्ध)
उसके प्राण चले गये। (शुद्ध)
(प्राण = बहुवचन)

9. इस वर्ष देश में गेहूँ खूब हुए। (अशुद्ध)
इस वर्ष देश में गेहूँ खूब हुआ। (शुद्ध)
(गेहूँ = एकवचन)

10. चीन से बहुत प्लासित्क माल आये हैं। (अशुद्ध)
चीन से बहुत प्लास्टिक माल आया हैं। (शुद्ध)
(माल = एकवचन)

11. बैल एवं गायें आदि गये। (अशुद्ध)
बैल एवं गायें आदि गयीं। (शुद्ध)
(बैल = पुंलिंग एकवचन, गायें = स्त्रीलिंग बहुवचन
ऐसे वाक्यों में क्रिया बहुवचन में और उसका लिंग अंतिम कर्ता के अनुसार होगी)

12. बाघ और बकरी एक घाट पानी पीती है। (अशुद्ध)
बाघ और बकरी एक घाट पीते है। (शुद्ध)
(बाघ = पुंलिंग एक वचन, बकरी = स्त्रीलिंग एक वचन
दोनों कर्ता एक वचन में हैं। किन्तु उनके लिंग अलग है। ये दानों कतो और से जोडे गये है। ऐसे वाक्यों में क्रिया प्रायः बहुचचनौर पुंलिंग में होगी)

(आ) 'ने' प्रत्यय सम्बन्धी :

1. मोहन आम खाया। (अशुद्ध)
मोहन ने आम खाया। (शुद्ध)
(खाया = सकर्मक क्रिया)

2. राकेश ने चिट्ठी लिखा। (अशुद्ध)
   राकेश ने चिट्ठी लिखी। (शुद्ध)
   (चिट्ठी = स्त्रीलिंग, एक वचन)
3. प्रेमचन्द ने उपन्यास और कहानियाँ लिखा। (अशुद्ध)
   प्रेमचन्द ने उपन्यास और कहानियाँ लिखीं। (शुद्ध)
   (उपन्यास = पुंलिंग बहुवचन, कहानियाँ = स्त्रीलिंग बहुवचन)
4. सरला ने राधा को पुस्तक दी। (अशुद्ध)
   सरला ने राधा को पुस्तक दिया। (शुद्ध)
5. मैं ने कल गाँव गया। (अशुद्ध)
   मैं कल गाँव गया। (शुद्ध)
   (गया = अकर्मक क्रिया)
6. गाँधी जी ने बोले। (अशुद्ध)
   गाँधी जी बोले। (शुद्ध)
7. उसने दिखायी दिया। (अशुद्ध)
   वह दिखायी दिया। (शुद्ध)
   (दिखायी दिया = संयुक्त क्रिया। इस क्रिया का प्रयोग करने पर कर्त्ता के साथ 'ने' प्रत्यय नहीं जुडता)
8. उसने काम कर चुका। (अशुद्ध)
   वह काम कर चुका। (शुद्ध)
9. हमने सडक डालने लगे। (अशुद्ध)
   हम सडक डालने लगे। (शुद्ध)
10. राम रावण को मारा। (अशुद्ध)
    राम ने रावण को मारा। (शुद्ध)

(इ) 'अपना' प्रयोग :-

1. मैं मेरे भाई को प्यार करता हूँ। (अशुद्ध)
   मैं अपने भाई को प्यार करता हूँ। (शुद्ध)
   (मैं के बाद तत्सम्बन्धी सम्बन्ध कारक (मेरे) का प्रयोग नहीं किया जाता। उसके बदले 'अपने' का प्रयोग होता है।)

2. मैं मेरी कहानी सुनाऊँगा। (अशुद्ध)
   मैं अपनी कहानी सुनाऊँगा। (शुद्ध)
3. तुम तुम्हारा नाम लिखो। (अशुद्ध)
   तुम अपना नाम लिखो। (शुद्ध)
4. हम हमारे देश को प्यार करते है। (अशुद्ध)
   हम अपने देश को प्यार करते हैं। (शुद्ध)
5. आप आपका काम कीजिये। (अशुद्ध)
   आप अपना काम कीजिये। (शुद्ध)
6. राजेश उसका पाठ पढ़ना है। (अशुद्ध)
   राजेश अपना पाठ पढ़ता है। (शुद्ध)

(ई) 'चाहिए' प्रयोग :-

1. अंग्रेजी में Must, Ought to शब्द जिस अर्थ को सूचित करते है, उन्हें हिन्दी में प्रकट करने के लिए 'चाहिए' का प्रयोग किया जाता है।
2. जब वाक्य में चाहिए का प्रयोग होता है, तब कर्त्ता के साथ को प्रत्यय जुडता है।
3. क्रिया सामान्य रुप में रहती है। जैसे : जाना, करना, लिखना आदि।
4. क्रिया के लिंग - वचन कर्म के अनुसार रहते है। कर्म के न होने पर क्रिया पुंलिंग एकवचन तथा अन्य पुरुष मे रहती है।

उपर्युक्त नियमों को दृष्टि में रखकर निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :-

1. हम हिन्दी बोलना चाहिए। (अशुद्ध)
   हमें हिन्दी बोलनी चाहिए। (शुद्ध)
   (हम + को = हमें ; कर्म = हिन्दी (स्त्रीलिंग एकवचन))
2. प्रमीला गाना चाहिए। (अशुद्ध)
   प्रमीला को गाना चाहिए। (शुद्ध)
3. मैं पिताजी की सेवा करना चाहिए। (अशुद्ध)
   मुझे पिताजी की सेवा करनी चाहिए। (शुद्ध)
   (मैं + को = मुझे, कर्म = सेवा (स्त्रीलिंग एकवचन))

4. विधार्थी खूब पढ़ना चाहिए। (अशुद्ध)
   विधार्थी को खूब पढ़ना चाहिए। (शुद्ध)
   (या)
   विधार्यियों को खूब पढ़ना चाहिए। (शुद्ध)

(उ) विधि - क्रिया - संबंधी :-

1. क्रिया के जिस रुप से आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश और प्रश्न का बोध हो, उसे विधि - क्रिया कहते हैं।
   उदाः तू पढ। तुम पढो। आप पढिये।
   यहाँ रेखंकित शब्द विधि क्रियायें हैं।
2. जब विधि - क्रिया का प्रयोग होता है। तब मध्यम पुरुष में कर्ता का लोप होता है। उदाः जाओ। बैठा।
3. विधि - क्रिया कर्त्ता के अनुसार बदलती है। दिखिये -

कर्त्ता	विधि - क्रिया
तू	धातू (उदाः जा, आ, बोल)
तुम	धातु + ओ (उदाः जाओ, आओ, बोलो)
आप	धातु + इये (उदाः जाइये, आइये, बोलिये)

4. विधि वाचक में निषेध प्रकट करने के लिए 'मत' का प्रयोग होता है।
   उदाः तुम मत जाओ। आप मत जाइये।
5. अपवाद : दे - दो , दीजिए। ले - लो, लीजिए। कर - करो, कीजिए।

उपर्युक्त नियमों को दृष्टि में रखकर नीचे लिखे गये वाक्यों को शुद्ध कीजिए।

1. तू मुझे मिठाई दो। (अशुद्ध)
   तुम मुझे मिठाई दो। (शुद्ध)
2. आप कल जरुर मेरे घर आओ। (अशुद्ध)
   आप कल जरुर मेरे घर आइये। (शुद्ध)
3. तुम दूध पीजिये। (अशुद्ध)
   आप दूध पीजिये। (शुद्ध)

4. आप वहाँ मत जाओ। (अशुद्ध)
   आप वहाँ मत जाइये। (शुद्ध)
5. तू बैठो। (अशुद्ध)
   तू बैठ। (शुद्ध)

(ऊ) क्रिया संबंधी :-

1. मैं घर जाता है। (अशुद्ध)
   मैं घर जाता हूँ। (शुद्ध)
2. वे करते है। (अशुद्ध)
   वे करते हैं। (शुद्ध)
3. उसका यह कहना मेरे लिए बडी बात होगी। (अशुद्ध)
   उसका यह कहना मेरे लिए बडी बात होगी। (शुद्ध)
   (यहाँ कहना कर्ता है। यह पुंलिंग एकंवचन में है। इसलिए क्रिया भी पुंलिंग एकवचन मे होनी चाहिए)
4. राम और सीता जंगल गयी। (अशुद्ध)
   राम और सीता जंगल गये। (शुद्ध)
5. मोहन का लडका और गोपाल की लडकियाँ खेलते हैं। (अशुद्ध)
   मोहन का लडका और गोपाल की लडकियाँ खेलती हैं। (शुद्ध)

(ऋ) विभक्ति - प्रत्यय संबंधी :-

1. कल मैं गाँव को जाती हूँ। (अशुद्ध)
   कल मैं गाँव जाती हूँ। (शुद्ध)
   (अप्राणिवाचक कर्म (गाँव) के साथ प्रा:य विभक्ति - प्रत्य (को) नहीं जोडते।)
2. महेश का सिर्फ एक हाथ है। (अशुद्ध)
   महेश के सिर्फ एक हाथ है। (शुद्ध)
   (सम्बन्ध, स्वामित्व, शरीर के अवयव, अचल सम्पति और सम्प्रदान के अर्थ में सम्बन्धकारक का सम्बन्ध क्रिया के साथ होता है। उसकी के विभक्ति है, चाहे वह स्त्रीलिंग और एकवचन का शब्द क्यों न हो।)
3. दशरथ की तीन रानियाँ हैं। (अशुद्ध)
   दशरथ के तीन रानियाँ हैं। (शुद्ध)

4. लडका का नाम क्या है ? (अशुद्ध)
   लडके का नाम क्या है ? (शुद्ध)
   (का विभक्ति के कारण लडका शब्द लडके के रुप में बदल गया है।)
5. वृक्षों पर पक्षी बैठा था। (अशुद्ध)
   वृक्ष पर पक्षी बैठा था। (शुद्ध)
   (एक पक्षी अनेक वृक्षों पर नहीं बैठ सकता)

(ए) कृदन्त :-

1. प्रिन्सिपाल आते ही विद्यार्थी चले गये।
   प्रिन्सिपाल के आते ही विधार्थी चले गये।
   (आतें कृदन्त है। कृदन्त के पहले रहनेवाला कर्त्ता सादा के विभक्ति प्रयुक्त होती है।)
2. वह मद्रास जाकर पाँच दिन हुआ।
   उसके मद्रास जाकर पाँच दिन हुए।
   (पाँच दिन = बहुवचन)
3. रामाराव स्टेशन पहुँचते ही गाडी चली गयी।
   रामाराव के स्टेशन पहुँचते ही गाडी चली गयी।

(ऐ) वर्तनी - सम्बंधी :-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
गुरु	गुरु	बकरि	बकरी
नर्क	नरक	मेग	मेघ
सहस्त्र	सहस्त्र	विधार्यि	विद्यार्थी
नदि	नदी	उन्नती	उन्नति
सक्ति	शक्ति	कुछु	कुछ
क्षेष्ट	श्रेष्ठ	विध्या	विधा
पुन्य	पुण्य	जंजट	झंझट
चिन्ह	चिहन	म्लेक्ष	म्लेच्छ
आर्शीवाद	आर्शीर्वाद	शंसोधन	संशोधन

(ओ) अभ्यास :-

नीचे कुछ वाक्य शुद्ध करके लिखा गया है। पहले अशुद्ध वाक्य दिया गया है। उसके नीचे ही शुद्ध वाक्य भी दिया गया है। दोनो को ध्यान से देखने पर पहला वाक्य गलत है - यह बात खुद मालुम हो जाती है।

1. आपका पिता का नाम बताओ। (गलत)
   अपने पिता का नाम बताओ। (सही)
2. हम वह कहानी पढ़े हैं। (गलत)
   हमने वह कहानी पढ़ी हैं। (सही)
3. वह शाम नहीं खेलते हूँ। (गलत)
   वह शाम को नहीं खेलता है। (सही)
4. वह उससे रुपया पूछा। (गलत)
   उसने उनसे रुपया मांगा। (सही)
5. सीता आम खाई। (गलत)
   सीता ने आम खाया। (सही)
6. मैं कल चार फल खाई। (गलत)
   मैं ने कल चार फल खाये। (सही)
7. मैं मद्रास आ को तीन साल हूई। (गलत)
   मेरे मद्रास आये तीन साल हुए। (सही)
8. क्या तुम मनुष्य का जन्म लिये। (गलत)
   क्या तुमने मनुष्य का जन्म लिया। (सही)
9. मैं बाजर जाना चाहिये। (गलत)
   मुझे बाजार जाना चाहिये। (सही)
10. राम राम का काम करता है। (गलत)
    राम अपना काम करता है। (सही)
11. अब हम स्वतन्त्रता हो गये। (गलत)
    अब हम स्वतन्त्र हो गये। (सही)
12. रहीम को दो किताबें जरुर है। (गलत)
    रहीम को दो किताबों की जरुरत है। (सही)

13. मैं चार गायें देखा। (गलत)
मैंने चार गाय देखी। (सही)
14. दशरथ के तीन रानियाँ ये। (गलत)
दशरथ के तीन रानियाँ थीं। (सही)
15. मुझ से यह काम करना नहीं सकता। (गलत)
मुझ से यह काम नहीं हो सकता। (सही)
16. मैं परीक्षा की अच्छा तैयारी किया है। (गलत)
मैं ने परीक्षा की अच्छी तैयारी की है। (सही)
17. कालेज के पास दो घरे हैं। (गलत)
कालेज के पास दो घर हैं। (सही)
18. कल सीता की भाई की विवाह थी। (गलत)
कल सीता के भाई का विवाह था। (सही)
19. पुलिस आते ही चोर भागी। (गलत)
पुलिस कें आते ही चोर भागा। (सही)
20. तुम अपने माता से एक रुपया पूछो। (गलत)
तुम अपनी माता से एक रुपया माँगो। (सही)
21. मै यह काम नहीं की। (गलत)
मैंने यह काम नहीं किया। (सही)
22. वह उसका काम करेगा। (गलत)
वह अपना काम करेगा। (सही)
23. उस लडकी गा सकी। (गलत)
वह लडकी गा सकी। (सही)
24. उन्होंने क्या बोला ? (गलत)
वे क्या बोले ? (सही)
25. राजा नल ने दमयंती को भूला। (गलत)
राजा नल दमयंती को भूला (सही)
26. उसने काम करने लगा। (गलत)
वह काम करने लगा। (सही)

27. मैं नहीं सुन्दर हूँ और नहीं धनी। (गलत)
मैं न सुन्दर हूँ और न धनी। (सही)

28. वह आते नही मैं जाऊँगा। (गलत)
उसके आते ही मै जाऊँगा। (सही)

29. आप अभी यहाँ से जा। (गलत)
आप अभी यहाँ से जाइये। (सही)

30. सेना तुद्ध - क्षेत्र से दौड खडी हुई। (गलत)
सेना युद्ध - क्षेत्र से भाग खडी हुई। (सही)

31. मैं तुम्हें अच्छी कहानी बताऊँगा। (गलत)
मैं तुम्हें अच्छी कहानी सुनाऊँगा। (सही)

32. कई कालेज के विधार्यियों की गिरफतारी हुई। (गलत)
कालेज के कई विधार्यियों की गिरफतारी हुई। (सही)

33. रामने ग्रन्थ पढ़ना था। (गलत)
राम ग्रन्थ पढ़ता था। (सही)

34. पुलिस कहने लगे, घर खाली करे। (गलत)
पुलिस कहने लगे, कि घर खाली करो। (सही)

35. गौतमी पुस्तक लाई हैं। (गलत)
गौतमी पुस्तक लाई है। (सही)

36. मोहन अच्छा तरह लिखी है। (गलत)
मोहन ने अच्छी तरह लिखा है। (सही)

37. राम ने पाठ पढ चुका है। (गलत)
राम पाठ पढ चुका है। (सही)

38. आप सेलम जाना है। (गलत)
आप को सेलम जाना है। (सही)

39. राम को बहन चालाकी लडकी हैं। (गलत)
राम की बहन चालाक लडकी है। (सही)

40. वह काशी जरुरी जाना है। (गलत)
उसको काशी जरुर जाना है। (सही)

41. राधा मयुरा जरुरी जाना चाहिये। (गलत)
राधा को मथुरा जरुर जाना चाहिये। (सही)
42. स्त्रीयाँ पुराना जमाना में बहुत पढता था। (गलत)
स्त्रीयाँ पुराने जमाने में बहुत पढ़ती थी। (सही)
43. मैं चार घोडा देखी था। (गलत)
मैंने चार घोंडों को देखा था। (सही)
44. रामगोपाल मे किताब पड चुका। (गलत)
रामगोपाल किताब पढ चुका। (सही)
45. तुम वहाँ नहीं जाओ। (गलत)
तुम वहाँ मत जाओ। (सही)
46. उनका बहुत भारी सम्मान हुआ। (गलत)
उनका बहुत सम्मान हुआ। (सही)
47. मेरा नाम श्री. रामगोपाल जी है। (गलत)
मेरा नाम रामगोपाल है। (सही)
48. उन्होंने हाथ जोडा। (गलत)
उन्होंने हाथ जोडे। (सही)
49. राम नावों पर सवार था। (गलत)
राम नाव पर सवार था। (सही)
50. वह भगवान की भक्ति व श्रद्धा करता है। (गलत)
वह भगवान पर भक्ति व श्रद्धा रखता है। (सही)

7.4 संधि :-

संधि का अर्थ है जोड या मेल। संधि में दो वणों या अक्षरों के मेल से नयी शब्द रचना होती है। इसी तरह दो निरर्थक वर्ण या अक्षर मिलकर सार्थक शब्द में परिवर्तित हो जाते है। इसमें वाक्यों का मेल न होकर केवल वर्णों या अक्षरों का मेल होता है। दो अक्षर मिलकर तीसरे अक्षर में बदल जाते है।

संधि तीन प्रकार की होती है -

(अ) स्वर संधि (आ) व्यंजन संधि (इ) विसर्ग संधि

(अ) स्वर संधि :-

दो स्वरों के मेल से होनेवाले परिवर्तन या विकार को स्वर संधि कहते है। स्वर संधि के पाँच भेद हैं -

(1) **दीर्घ संधि :-**

दो सजातीय या सवर्ण स्वर पास - पास आते, तो उनके बदले सवर्ण दीर्घ स्वर आता है। अर्थत्

अ + अः आ ; आ + अ = आ ; इ + ई = ई ; इ + ई = ई ; उ + ऊ = ऊ ; ऊ + उ = ऊ ; ऋ + ऋ = ॠ आदि

रवि + इंद्र = रवींद्र

भानु + उदय = भानुदय

पितृ + ऋण = पितृण

(2) **गुण संधि :-**

गुण का अर्थ है बढोत्तरी जो विशेष रुप से हो। अ या आ के आगे 'इ या ई' रहे तो दोनों मिलकर 'ए' और ''उ या ऊ' रहे तो 'ओ' और ऋ रहे तो अर् हो जाता है।

उदा: नर + इन्द्र = नरेंद्र

सूर्य + उदय = सूर्योदय

देव + ऋषि = देवर्षि आदि

(3) **वृद्धि संधि :-**

वृद्धि का अर्थ है बढ़ने की क्रिया। इस संधि के फल स्वरुप स्वर की मात्रा या संख्या बढ जाती है। अ के साथ ए या ऐ का मेल होने पर ए बढ़कर ऐ हो जाता है। और अ के साथ ओ या ओ का मेल होने पर औ हो जाना है।

उदा : एक + एक = एकैक

नव + ऐखर्य = नवैश्वर्य

परम + औषध = परमौषध

परम + ओ जस्वी = परिमौजस्वी

(4) **यण संधि :-**

संस्कृत व्याकरण में य, र, ल, व वर्णों को यण् कहते है। इस संधि में स्वरों का मेल यण अर्थात य, र, ल, व मे परिवार्तन हो जाना है। अर्थात् इ, ई, उ, ऊ, ऋ के आगे कोई असवर्ण स्वर आवे तो इ ई के बदले य आत है। उ, ऊ के बदले 'व' आता है। ऋ के बदले 'र' आता है.

उदा : यदि + अपि = यद्यपि

अनु + अय = अन्वय

मातृ + ऐश्वर्य = मात्रैश्वर्य

(5) **अयादि संधि :-**

स्वरों का मेल जब अय, आय, अया, आयि जैसे रुपों में बदलता है तो उसे अयादि संधि कहते हैं। अर्थात् ए, ऐ, ओ के आगे कोई भिन्न स्वर आवे तो इसके बदले क्रमशः अय, आय, आव आता है।

उदा : ने + अन = नयन

नै + इका = नायिका

श्रो + अन = श्रवण

गै + अक = गायक

पो + अन = पवन

नौ + इक = नाविक

(आ) व्यंजन संधि :-

व्यंजन वर्ण के बाद स्वर या व्यंजन वर्ण के आने से उस मेल से जो परिवर्तन या विकार होता है, उसे व्यंजन सांधि कहते है। ये परिवर्तन कुछ निशिचत नियमों के अनुसार होते है।

(1) **पहला नियम :-**

क, च, ट, त, प के आगे कोई स्वर वर्ण या य, र, ल, व में से कोई वर्ण आये, तो उनके मेल के फल स्वरुप व्यंजन वर्ण अपने ही वर्ण के तीसरे वर्ण में बदल जाता है। (अर्थात्) क > गं ; च > ज, ट > ड ; त > द प > ब)

उदा : वाक् + ईश = वागीश

अच् + अंत = अजंत

तत् + रुप = तद्रूप

दिक् + गज = दिग्गज

षट् + आनन = षडानन

अप + इधन = अभिन्धन

(2) **दूसरा नियम :-**

किसी वर्ग के पंहले वर्ण के बाद (क, च, ट, त, प) उन्हीं वणों का तीसरा या चौथा वर्ण आये तो पहला वर्ण तीसरे वर्ण मे बदल जाता है।

(क, च, ट, त, प > ग, ज, ड, द, ब)

उदः वाक् + जाल = वाग्जाल

सत् + गति = सद्गति

(3) **तीसरा नियम :-**

किसी वर्ग के पहले वर्ण के बाद न या म व्यंजन आये, तो वह पहला वर्ण (अर्यात् क, च, ट, त, प) अपने वर्ण के पाँचवें वर्ण (ड, अ, ण, न, य) में बदले है।

उदः वाक् + मय = वाङ्मय

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

षट् + मास = षणमास

अत् + मत्त = उन्मत्त

(4) **चौथा नियम :-**

यदि 'म' वर्ण के बाद कोई स्पर्श व्यंजन (क से थ तक) आये तो म के बाद वाले स्पर्श व्यंजन के पाँचवे वर्ण (ड, ञ, ष, न, म) में या अनुस्वार में बदल जाता है।

उदः किम् + चित् = किंचित या किञ्चिन

सम् + पूर्ण = संपूर्ण था सम्पूर्ण

(5) **पाँचवाँ नियम :-**

म के बाद य, र, ल, व, श, ष, स, ह आदि वर्णों के आने से म् अनुस्वार बन जाना है।

उदाः सम् + विधान = संविधान

सम् + लाप = संलाप

अपवाद : सम् + राट = सम्राट (यहाँ अनुस्वर नहीं होता)

(6) **छठा नियम :-**

यदि स्वर के बाद छ वर्ण आये तो वह च्छा हो जाता है।

उदः स्व + छंद = स्वच्छंद

परि + छेद = परिच्छेद

(7) **सातवाँ नियम :-**

यदि त् या द् के बाद ल आये तो त या द 'ल' में बदल जोते हैं।

उदाः उत् + लास = उल्लास

उत् + लेख = उल्लेख

(8) **आठवाँ नियम :-**

त या द के बाद ज या झ के आने से त या द का ज हो जाता है।

उदा : विपत् + जाल = विपज्जाल

सत् + जन = सज्जन

(9) **नौवाँ नियम :-**

न या द के बाद च या छ आने से त या द च में बदल जाता है।

उदा: उत् + छेद = उच्छेद

शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र

(10) **दसवाँ नियम :-**

त या द के बाद श वर्ण के आने पर त् या द् बदलकर च और श बदल कर छ हो जाता है।

उदा : उत् + श्वास = अच्छावास

उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

(11) **ग्यारहवाँ नियम :-**

च् के पश्चात् 'क' वर्ग त वर्ग प वर्ग के तीसरे और चौथे वर्ण का कोई अक्षर (ग, घ, द, ध, ब, भ) य, र, ल, व या कोई स्वर वर्ण आने पर बदलकर द हो जाता है। त के बाद च होने पर च, ज या झ होनेपर ज, ट या ठ होने पर ट् ड् था ढ होने पर ड तथा ल होने पर ल् हो जाता है।

उदः जगत् + ईश = जगदीश

सत् + भावना = सद्भावना

सत् + जन = सज्जन

उत् + लास = उल्लास

(इ) विसर्ग संधि :-

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मिलने से होनेवाला विकार या परिवर्तन विसर्ग संधि कहलाता है। इसके भी कुछ नियम है।

(1) **पहला नियम :-**

यादि विसर्ग के पहले इ या उ हो और विसर्ग के आगे र हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और विसर्ग के पहलेवाला ह्रस्व स्वर दीर्घ बन जाता है।

उदा : निः + रस = नीरस

निः + रज = नीरज

(2) **दूसरा नियम :-**

विसर्ग के आगे च, छ, ट, ठ, त, थ, स आने पर विसर्ग क्रमशः श, ष, स बन जाता है।

उदाः निः + चेष्ट = निश्चेष्ट

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

दुः + तर = दुस्तर

नमः + ते = नमस्ते

(3) **तीसरा नियम :-**

विसर्ग के पहले अ हो और विसर्ग के बाद क, ख, प, या, फ हो तो विसर्ग ज्यों का त्यों बन रहता है।

उदाः अन्तः + करण = अन्तःकरण

अन्तः + पुर = अन्तःपुर

(4) **चौथा नियम :-**

विसर्ग के पूर्व इ कार या उ कार हो और विसर्ग के बाद क, ख, प, था, फ रहे तो विसर्ग ष में परिवर्तित होता है।

उदाः निः + कपट = निष्कपट

चतु + पाद = चतुष्पाद

(5) **पाँचवाँ नियम :-**

यदि विसर्ग लुप्त हो जाता है तो अध्वनि ओ बन जाती है।

उदा : मनः + योग = मनोयोग

पुरः + हित = पुरोहित

(6) **छठा नियम :-**

अ ध्वनि के बाद विसर्ग हो और विसर्ग के बाद अ और क, च, ट, त, प वर्ग के तीसरा चौथा और पाँचवाँ वर्ण (ग, ध, ड, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म) हो तो अ का ओ हो जाना है साथ ही विसर्ग का लोप हो

जाता है।

उदाः मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

सरः + ज = सरोज

पयः + धर = पयोधर

(7) **सानवाँ नियम :-**

यदि विसर्ग के पहले अ, आ को छोडकर कोई स्वर हो तो विसर्ग के बाद कोई स्वर हो, तो विसर्ग 'र' में बदल जाता है।

उदाः निः + आहार = निराहार

दुः + आचार = दुराचार

निः + उपाय = निरुपाय

(8) **आठवाँ नियम :-**

थादि विसर्ग के पहले अ, आ को छोडकर कोई स्वर हो और विसर्ग के बाद य, र, ल, व, ह, था किसी वर्ग का तीसर, चौथा, पाँचवा वर्ण हो तो विसर्ग 'रेफ' अर्यात् र में बदल जाता है।

उदाः निः + गुण = निर्गुण

निः + झर = निर्झर

निः + मल = निर्मल

(9) **नौवाँ नियम :-**

विसर्ग के आगे - पीछे अ हो, तो विसर्ग लुप्त होकर ओ उच्चारण में बदल जाता है।

उदाः यशः + अभिलाषी = यशोभिलाषी

प्रथमः + अध्याय = प्रथमोध्याय

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

(10) **दसवाँ नियम :-**

विसर्ग के पूर्व अ, आ हो और बाद में कोई अन्य हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

उदाः अतः + एव = अतएव

(ई) संधि विच्छेद - अभ्यास :-

निम्न लिखित शब्दों के संधि विच्छेद कीजिए

1. अत्यधिक = अति + अधिक
2. अभ्युदय = अभि + उदय
3. अधीश्वर = अधि + ईश्वर
4. अत्यंत = अति + अंत
5. अन्तर्निहित = अंत + निहित
6. आद्यंत = अदि + अंत
7. उच्चारण = उत् + चारण
8. उल्लेख = उत् + लेख
9. तपोवन = तपः + वन
10. तेजोराशि = तेजः + राशि
11. तथापि = तथा + अपि
12. दिग्गज = दिक् + गज
13. देवेश = देव + ईश
14. दावानल = दाव + अनल
15. नारीश्वर = नारि + ईश्वर
16. निष्पाप = निः + पाप, निस् + पाप
17. निर्विवाद = निः + विवाद
18. निरुद्देश्य = निः + उद्देश्य
19. निर्भर = निः + भर
20. पुरुषोत्तम = पुरुष + उत्तम
21. महोत्सव = महा + उत्सव
22. यथोचित = यथा + उचित
23. लोकोक्ति = लोक + उक्ति
24. व्याकुल = वि + आकुल
25. वयोवृद्ध = वयः + वृद्ध
26. सज्जन = सत् + जन
27. सर्वोदय = सर्व + उदय
28. सदैव = सदा + एव

29. सदानंद = सत् + आनंद
30. अनुपभुक्त = न + उपयुक्त
31. कवींद्र = कवि + इन्द्र
32. सुरेश = सुर + ईश
33. प्रत्युपकार = प्रति + उपकार
34. सदैव = सदा + एव
35. दुश्चरित्र = दुः + चरित्र

7.5 समास :-

संक्षिप्त :-

समास शब्द सम + आस इन दो शब्दों से बना हो सम् का अर्थ "संक्षिप्त और सुंदर" तथा आस का अर्थ कथन। अर्तात् सुंदर और संक्षिप्त शब्द (कयन) को समास कहते है। समास दो या दो से अधिक पदों के योग से बनता है। अर्थात् वे पद एक बन जाते हैं। इसीलिए कहा गया है कि "एक पडी भावः समासः" यह भी कहा गया है कि "समसनम् इति समासः" शब्दों को सुंदर - संक्षिप्त रुप देना ही समास है।

संधि में निरर्थक वर्णो के मेल परिवर्तन होता है। लेकिन समास में निरर्थक शब्द अगर हो, तो छोड दिये जाते हैं। शब्दों के बीच से उनकी विभक्तियों के हट जाने पर शंब्द रखनेवाले दो था दो से अधिक शब्दों के मिल जाने से समास बनते है।

(अ) समास के लक्षण :-

1. दो या दो से अदिंक पदों का थोग।
2. वे पद मिलकर एक हो जाते है।
3. समास में पदों की विभक्ति या प्रत्यय लुप्त हो जाते है।
4. विशेषकर संस्कृत शब्दों में संधि की स्थिति में संधि होती है।

(आ) समास के भेद :-

पूर्व पद और उत्तर पद या इन दोनों पदों की प्रधानता के आधार पर समास के चार भेद है।

(1) तत्पुरुष समास (2) बहुव्रीहि समास (3) द्वंद्व समास (4) अव्ययी भाव समास

(1) **तत्पुरुष :-**

अर्थ की दृष्टि में तत्पुरुष समास में पूर्व पद की अपेक्षा उत्तरपद प्रधान होता है। तत्पुरुष समास दो प्रकार से बनते है।

1. संज्ञा + विभक्ति + संज्ञा = सूर्य का उदय (सूर्योदय)
2. संज्ञा + विभक्ति + विशेषण = अकाल से पीडित (अकाल पीडित)

अर्थात् कारक की विभक्तियों के लोप होने से समास बनते है। अतः विभक्तियों के आधार पर तत्पुरुष के अभेद है।

(1) **कर्म या द्वितीय तत्पुरुष :-**

इस समास में कर्म कारक चिह्न 'को' लुप्त हो जाता है।

परलोक गमन - परलोक को गमन

गगन चुम्बी - गगन को चूमनेवाला

(2) **करण या तृतीय तत्पुरुष :-**

इस समास में करण कारक चिह्न 'से' लुप्त हो जाता है।

तुलसी कृत - तुलसी से कृत

मदान्ध - मद से अंध

(3) **संप्रदान या चतुर्थी तत्पुरुष :-**

इसमें संप्रदान कारक चिह्न "के लिए" लुप्त हो जाता है।

सत्याग्रह - सत्य के लिए आग्रह

रणभूमि - रण के लिए भूमि

(4) **अपादान या पंचमी तत्पुरुष :-**

इसमें अपादान कारक 'से' का लोप हो जाता है।

भयभीत - भय से भीत

पापमुक्त - पाप से मुक्त

(5) **संबंध या षष्ठी तत्पुरुष :-**

इसमें संबंध कारक चिह्न का, के, की का लोप हो जाता है।

गंगाजल - गंगा का जल

गुरु सेवा - गुरु की सेवा

(6) **अधिकरण या सप्तमी तत्पुरुष :-**

इसमें अधिकरण कारण चिह्न में और पर का लोप हो जाता है।

गृह प्रवेश - गृह में प्रवेश

शरणागत - शरण में आगत

(आ) कर्मधारय समास :-

इस समास के दोनों पद आपस में विशेषण विशेष्य अथवा उपमान - अपमेय का संबंध रखते है।

पीतांबर - पीत अंबर

नीलगाय - नील गाय

(इ) द्विगु समास :-

इस समास के पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण होता है तथा अंतिम पद संज्ञा।

त्रिवेंणी - तीन वेणियों का समूह

शताब्दी - एक सौ वर्षों का समूह

(ई) नञ् समास :-

इस समास में प्रयम पद अ, ना, या अन तथा अंतिम पद संज्ञा होता है।

अनादि - न आदि

अयोग्य - न योग्य

(उ) मध्यम पद लोपी समास :-

तत्पुरुष समास के इस भेद में पदों के बीच से कारक की विभक्तियों का लोप हो जाता है। विभक्तियों के साथ बीच का कुछ अंश भी लुप्त हो जाते हैं। इसी से यह मध्यम पद लोपी समास कहा जाता है।

दही वडा - दहीमें डूबा हुआ वडा

घृतान्न - घृत से मिश्रित या पकाया हुआ अन्न

इस प्रकार कर्मधारय, द्विगु, नञ्, मध्यम पद लोपी समास को तत्पुरुष समास के भेदं ही मानत है। क्योंकि इन समासो में उत्तर पद को प्रधानता है।

(2) बहुव्रीहि समास :-

इस समास के दोनों पद अपने समान्य अर्थ छोडकर, साथ मिलने से विशेष अर्थ देते है। अर्थात् इनके दोनों पद से अलग अन्य पद प्रधान हो जाता है।

पंकज - पंक में जन्म लेनेवाला , कमल

नीलकंठ - जिसका कंठ नील है, शिव

(3) द्वंद्व समास :-

इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। उनके बीच का और शब्द लुप्त हो जाता है।

माता - पिता - माता और पिता

अन्न - जल - अन्न और जल

(4) अव्ययीभाव समास :-

इस समास का पहला पद अव्यय होता है, और दूसरे पद के मिल जाने से समस्त पद अव्यय हो जाता है। ऐसे शब्द लिंग या वचन के कारण परिवर्तित नहीं होते।

प्रतिदिन - दिन - दिन

पलपल - हरपल

आजन्म - जन्म से लेकर

यथा शक्ति - शक्ति के अनुसार

(इ) विग्रह वाक्य - समास का नाम - अभ्यास :-

		विग्रह वाक्य	समास का नाम
1.	महाकवि	महान हो जो कवि	कर्मधारय
2.	पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम	अधिकरण तत्पुरुष
3.	चरित्र - चित्रण	चरित्र का चित्रण	सबंध तत्पुरुष
4.	ईश्वर विमुख	ईश्वर से विमुख	अपादान तत्पुरुष
5.	विधान सभा	विधान बनाने वाली सभा	मध्यम पद लोपी
6.	आत्मनिर्भर	आत्मा पर निर्भर	अधिकरण कारक तत्पुरुष
7.	नीलोत्पल	जो उत्पल नील हो	कर्मधारय
8.	मृगनयन	जिसको मृग के नयनों की तरह सुंदर नयन हो	बहुव्रीहि
9.	सन्मार्ग	जो मार्ग, सत् हो	कर्मधारय
10.	घनश्याम	घन के समान श्याम	कर्मधारय
11.	भवसागर	भव (संसार) रुपी सागर	कर्मधाय

12.	श्रमजीवी	श्रम से जीनेवाला जो है	वह - बहुव्रीहि
13.	स्नानघर	स्नान के लिए घर	संप्रदान कारक तत्पुरुष
14.	सेनापति	सेना का पति	संबंध कारक तत्पुरुष
15.	अनाचार	न आचार	नञ् तत्पुरुष
16.	चरणकमल	कमल के समान चरण	कर्मधारय
17.	त्रिभुवन	तीन भुवन	द्विगु
18.	चतुर्भुज	चतुर (चार) भुजाएँ जिसकी वह	बहुव्रीहि
19.	देवासुर	देवता और असुर	द्वंद्व
20.	घर - द्वार	धर का द्वार	रांबंध तत्पुरुष
21.	यथाविधि	विधि के अनुसार	अव्ययीभाव
22.	पंचवटी	पांच प्रकार के वट वृक्ष जहाँ वध्यस्थान	बहुव्रीहि
23.	राम - लक्ष्मण	राम और लक्षमण	द्वंद्व
24.	नील कंठ	जिस का कंठ नील हो वह शिव	बहुव्रीहि
25.	राजपुत्र	राजा का पुत्र	संबंध तत्पुरुष
26.	पीताम्बर	पीत वस्त्र	कर्मधारय

7.6 कुछ स्मरण रखने योग्य बाते :-

1. वाक्य को शुध्द करने केलिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।
2. पहले हमको यह देखना है - वाक्य में अशुद्धता क्या है ? और क्यों।
3. वाक्य में प्रयुक्त अशुद्धता जानकर उसके शुध्द रुप को प्रस्तुत करना है।
4. जोड या मेल को संधि कहते है।
5. संधि में दो वर्णों या अक्षरों की मेल से नई सब्द रचना होती है।
6. संधि तीन प्रकार की होती है

   (अ) स्वर संधि (आ) व्यंजन संधि (इ) विसर्ग संधि
7. सुन्दर और संक्षिप्त शब्द को समास कहते है।

8. समास दो या दो से अधिक पदों के योग से बनता है।
9. संधिमें निरर्थक वर्णों के मेल परिवर्तन होता है, लेकिन समास में निरर्थक शब्द अगर हो, तो छोड दिये जाते है।
10. समास में पदों की विभक्ति या प्रत्यय लुप्त हो जाते है।

7.7 बोध - प्रश्न :-

1. लिंग और वचन संबंधी अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके दिखाइये।
2. ने प्रत्यय के नियमों को प्रस्तुत कीजिए।
3. अपना और चाहिए का प्रयोग कीजिए।
4. वर्तिनी संबंधी कुछ अशुद्ध शब्दों को प्रस्तुत करके उनको शुद्ध कीजिए।
5. संधि किसे कहते है उसके कितने भेद है सोदाहरण समझाइये।
6. स्वर संधि के कितने भेद है सोदाहरण बताइये।
7. व्यंजन संधिके कितने भेद हैं सोदाहरण समझाइये।
8. विसर्ग संधि किसे कहते हैं और उसके नियमों के बारे में बताइये।
9. समास किसे कहते है और उसके लक्षण क्या है ?
10. समास के भेदों को सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

7.8 सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - डॉ. हरदेव बाहरी
2. हिन्दी का मौलिक व्याकरण - (सं) निगमानन्द परमहंस
3. व्यावहारिक हिन्दी - यन. नागप्पा

Lesson - 8

वचन

ईकाई की रुपरेखा :-

उद्धेश्य

प्रस्तावना

बहुवचन बनाने का नियम

विभक्मियों के प्रयोग में बहुवचन के रुप में

वचन - विषयक कुछ टिप्पणियाँ

स्मरण रखने योग्य बातें

बोध - प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

1. संज्ञा और विकारी शब्दें के जिस रुप से वस्तु की संख्या का बोध हो ; उसे वचन कहते हैं। मुख्यत संज्ञा के एक वचन से एक वस्तु का और बहुवचन से बहुत सी बस्तुओं का बोध होता है।

2. लेकिन आदर केलिए एक व्यक्ति केलिए भी बहुवचन का प्रयोग किया जा सकता हैं।

   जैसे - बाबाजी आए।

   आप बडे विद्वान है।

   शब्दों के वचन पहचानने बिना वचन बदल कर वाक्यों को फिर से लिखना मुश्किल होगा। किन सूत्रों के आधार पर वचन बदलते हैं यह प्रधान वस्तु नहीं। शब्द एक वचन है या बहुवचन है यह बात प्रधान है।

प्रस्तावना :-

संज्ञा या विकारी शब्दों के जिस रुप से वस्तु की संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते है। हिन्दी में दो वचन है - एक वचन और बहु वचन।

1. शब्दके जिस रुप से एक ही व्यक्ति या पर्दाथ का बोध हो उसे एक वचन कहते हैं।

   जैसे - लडका, कलम, पुस्तक, तोता आदि।

2. शब्द के जिस रुप से अधिक व्यक्तियों अथवा पदार्थों का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे - लडके, कलमें, पुस्तकें, तोते आदि।

वचन के कारण संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रुप विकृत अथवा परिवर्तित होते हैं। किंतु ध्यान देने की बात यह कि सर्वनाम विशेषण और क्रिया के रुप मूलतः संज्ञाओं पर आश्रित हैं अतः वचन में संज्ञा शब्दों का रुपांतर होता है।

हुवचन बनाने का नियम :-

1. **आकारांत** :- शब्द एकारांत करने से बहु वचन में बदल जाते हैं।

   जैसे - घोडा - घोडे ; कपडा - कपडे

   अपवाद - नाना - नाना, पिता - पिता

2. **आकारान्त** :- शब्दों को छोडकर बाकी पुलिंग शब्द बहु वचन में भी वैसे ही रहते हैं।

   जैसे - भाई - भाई

   पेड - पेड

3. अकारन्त और आकारंत स्त्री लिंग शब्दों को बहुवचन मे परिवर्तित करना है तो शब्द के अंत में या, ये जोडना है।

   जैसे - बात - बातें

   माला -मालायें

4. इकारान्त या ईकारन्त स्त्री लिंग शब्दों के अंत में याँ जोडने से बहुवचन में परिवर्तित होते है।

   जैसे - तिथि - तिथियाँ

   नदी - नदियाँ

5. याकारान्त स्त्री लिंग शब्द 'याँ' जोडने से बहु वचन होते है।

   जैसे - बुढ़िया - बुढ़ियाँ

   चिडिया - चिडियाँ

6. अकारन्त या ऊकारान्त स्त्री लिंग शब्द 'एँ' जोडने से बहु वचन में परिवर्तित होते हैं।

   जैसे - वस्तु - वस्तुएँ

   बहु - बहुएँ

कुछ शब्दों के अंत में वर्ग या गण या लोग जोडने से बहु वचन होते है।

जैसे - मित्र - मित्रगण

बन्धु - बंधुगण

नेता - नेता लोग

8. कारक चिह्न जोडने पर प्रप्येक शब्द बहु वचन में ओंकारांत में रहता है।

जैसे - बस्तु को - बस्तुओं के

आँख से - आँखों से

इस प्रकार ऊपर बताये गये विवेचन से यह - स्पष्ट होता है कि एक वचन से बहु वचन किस प्रकार बनाया जाता। ऊपर के नियमों में विभक्तियों का प्रयोग नहीं किया गया है। अब इन विभक्तियों के साथ बहु वचन का प्रयोग भी जानना आवश्यकता है।

विभक्तियों के प्रयोग से बहु वचन के रुप :-

अब हमें देखना है कि हिन्दी की आठ विभक्तियों के प्रयोग से बहु वचन में एक शब्द के कई रुप बन जाते है।

जैसे - स्त्रियाँ, स्त्रियों

स्त्रियों को

स्त्रियों के साथ (के द्वारा)

स्त्रियों केलिए

स्त्रियों से

स्त्रियों का (के, की)

स्त्रियों में (पर)

वचन विषयक कुछ टिप्पपियाँ :-

किसी प्यक्ति के प्रति आदर का भाव दिखाने केलिए उसके साथ बहुवचन विशेषणों और क्रियाओं का प्रयोग होता है।

जैसे - अम्बेदकर एक बार हमारे नगर मे पधारे थे।

पिताजी दिल्ली गए हैं।

निम्न प्रसंग में वह सर्वनामक के स्थान पर वें का ही प्रयोग होता है।

युधिष्ठिर बडे धर्मात्मा थे

वे कभी असत्य नहीं बोलते थे।

स्मरण रखनेयोग्य बातें :-

1. हिन्दी अधिकतर शब्द पुंलिंग पाए जाते हैं। उन्हीं में कुछ परिवर्तन करके उन्हें स्त्री लिंग बना दिया जाता है।
2. लिंग परिवर्तन के मुख्य तीन प्रकार हैं
    1. शब्द के अंत में स्त्री प्रत्यय लगाकर
    2. स्त्री वाचक भिन्न शब्द प्रयुक्त करके
    3. पुंलिंग शब्द के पहले कोई वाचक या पुरुषवाचक शब्द लगाकर।
    4. आदर केलिए एक व्यक्ति केलिए भी बहुवचन का प्रयोग किया जा सकता है।

बोध - प्रश्न :-

रेखांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य को फिर से लिखिए।

1. रमेश ने कई पुस्तकें पढ़ी।
2. उमा की आँख अति सुंदर है।
3. आपका दर्शन करने आया हूँ।
4. उसका प्राण चला गया।
5. वह शिक्षित महिला पढ़ रही है।
6. सीता ने कहानी लिखी।
7. राक्षस मुनि को सताने लगा।
8. बगीचे में गौ चर रहें हैं।
9. इसकी बात मत मानो।
10. मेज पर पुस्तक है।
11. आकाश में चिडियाँ है।

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी - डां. नागप्पा
2. हिन्दी का मौखिक व्याकरण - सं. निगम नन्द परम हंस
3. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - एं हरदेवबाहरी

Lesson - 9

लिंग

ईकाई की रुपरेखा :-

उद्धेश्य

प्रस्तावना

पुंलिंग शब्द स्त्री लिंग बनाने के कुछ नियम

स्त्री लिंग संबधी कुछ साधारण नियम

लिंग - परिवतंन के नियम और अभ्यास

शब्द के अंत में स्त्री प्रप्यय लगाकर

स्त्री वाचक भिन्न शब्दों के प्रयोग से

पुलिंग या स्त्री लिंग शब्द के पहले

वाचक या पुरुष वाचक शब्द लगाकर

स्मरण रखने योग्य बातें

बोध - प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

संज्ञा के जिस रुप से वस्तु की जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। हिन्दी भाषा में दो ही लिंग है -

1. पुंलिग और स्त्री लिंग

पुरुष जाति का बोध करानेवाले शब्द पुलिंग और स्त्री जाति का बोध करनेवाले शब्द स्त्री लिंग कहलाते है। नपुंसक लिंग का प्रयोग हिन्दी में नहीं है। सजीव वस्तुओं में लिंग का निर्णय आसान है। क्यों कि उसका जोडा होता है और नर व नारी बतलानेवाले शब्दों का प्रयोग भाषा में होता है। लेकिन अन्य वस्तुओं या अप्राणिकायक शब्दों का लिंग भेद कल्पित है, यह केवल प्रयोग के द्वारा जाना जा सकता है। कभी कभी क्रिया या विशेषण के साथ शब्द का प्रयोग करने से लिंग का निश्चय होता हैं। यों संज्ञा शब्दों के लिंग - भेद का ज्ञान प्राप्त करना हिन्दी विधा केलिए आवश्यक है। इस इकाई को पढ कर आप लिंग के स्वरुप और लिंग - निर्णय के कुछ नियमों को अच्छी तरह जान सकेंगे।

प्रस्तावना :-

वास्तव में हिन्दी भाषा में अनेक भाषाओं के शब्द सम्मिलित होने के कारण एक नियम निश्चित नहीं किया जा सकता

कि किस शब्द का कौन - सा लिंग है ? यह बात न समझने के कारण कोई भाई शब्द का स्त्री लिंग भौजाई बताते है, क्योंकि वह भाई का पत्नी है। यह अशुद्ध है। भाई शब्द का स्त्री लिंग बहिन है। अतः लिंग के भेद को पहचानने केलिए मोटे तौर पर निर्धारित कुछ नियमों को जानना अत्यंत आवश्यक है।

पुंलिंग संबंधी कुछ साधारण नियम इस प्रकार है :-

1. देशों, पहाडों, समुद्रों और समय के भागों और ग्रहों के नाम (पृथ्वी को छोडकर)

   जैसे - भूमध्य सागर, हिमालय, विन्धयाचल, चैत्र, वैशाख सप्ताह, पक्ष दिन, पल, क्षण सूर्य, चंद्र, बुध

2. जिन हिन्दी शब्दों के अंत में अ या आं दो और दिन भाववाचक संज्ञाओं के अंत में पन आव या पा आता है, वे पुंलिंग हैं।

   जैसे - लडका, घडा, लोटा, मोटा, चमडा, पैसा, कपडा, धन, बल, सिर, अनाज, चावल, बचपन, मनुष्यत्व धैर्य गैरव।

3. वर्णमाला के सभी - अक्षर (इ, ई, ऋ को छोडकर) और मौनश्री, इमली आदि कुछ एक को छोडकर सभी वृक्षवाचक शब्द -

   जैसे - अ, आ, उ, ऊ, क, ख, आदि

   आम, कीकर, केला, नारियल आदि

4. आर आप व आस से अन्त होनेवाले और तं, त्र और इत और न से अंत होनेवाले संस्कृत के शब्द।

   जैसे - विकार, विस्तार, परिस्ताप, उल्लास, स्वागत गीत चरित्र, गणित, चित्र, चरित्र नेत्र, क्षेत्र, पात्र पालन पोषण, नयन, वचन, शासन, दमन आदि।

5. धातुओं के नाम (चांदी को छोडकर) और अनाजों के नाम (अरहर, मूंग, मसूर, दाल को छोडकर)

   जैसे - सोना, पीतल, कांसा, मोती नीलम, गेहूँ, चावल मटर, चना आदि

6. द्रव - पदार्थी के नाम (छाछ - लस्सी को छोडकर)

   जैसे - घी, दूध, तेल, दही, पानी आदि

7. उर्दू की जिन संज्ञाओं के अंत में आब आता हो (किताब, शराब को छोडकर) और आर, आत, आन, आता हो। (दुकान, सरकार को छोडकर) पुलिंग है।

   जैसे - गुलाब, जुलाब, हिसाब, जवाब, और बाजार, हाल, सवाल, मकान, सामान, निशान आदि

स्त्री लिंग संबधी कुछ साधारण नियम :-

1. नदियों, झीलों के नाम, तिथियों, न क्षत्रों के नाम स्त्री लिंग है।

   जैसे - गंगा, यमुना गोदावरी (सिंधु - ब्रह्मापुत्र को छोडकर)

2. अंतिम आ को इया करने से पुंलिंग से स्त्री लिंग बना सकते हैं।

जैसे - कुत्ता - कुत्तिया, बूढा - बुढिया

3. पुंलिंग शब्द के अंत में इन या आइन जोडने से स्त्री लिंग में परिवर्तित होते है।

जैसे - भिखआरी - भिखारिन

माली - मालिन

बाबू - बबुआइन

4. कुछ अकारांत पुंलिग शब्द आकारान्त करने से स्त्री लिंग में परिवर्तित होने है -

अध्यक्ष - अध्यक्षा

छात्र - छात्रा

5. कुछ पुंलिंग शब्द में नी या आनी जोडने से स्त्री लिंग में पडिवर्तित होते है।

सिंह - सिंहनी

मैहतर - मैहतरानी

6. कुछ पुंलिंग शब्द अंत में अर्थात् कुछ अकारांत शब्दों में अ को इका में परिवर्तित करने से पुंलिंग स्त्री लिंग में परिवर्तित होते है।

जैसे - रक्षक रक्षिका, अध्यापक - अध्यापिका, गायक - गायिका

7. कुछ शब्द इन नियमों से परे रहकर पूर्ण रुप से शब्द परिवर्तित करने से पुंलिंग - स्त्री लिंग में परिवर्तित होते है।

जैसे - आदमी - औरत, भाई - बहन

8. कुछ शब्दों के पहले मादा जोडने से वह शब्द स्त्री लिंग बन जाते हैं।

जैसे - नर कौआ - मादा कौआ

नर भेडिया - मादा भेदिया आदि

9. उर्दु की आकारान्त संज्ञाएँ

जैसे - हवा, दवा, सजा

10. संस्कृत की आकारंत नाकारंत, उकारांत संज्ञाएँ -

• जैसे - प्रार्थना, माया, लीला, लज्जा, दया, कृपा, वायु, ऋतु, मृत्यु वस्तु (तरु, तालु, मधु आदि को छोडकर) महिमा, लालिमा, कालिमा, सुन्दरता, मूर्खता, मनुष्यता आदि।

11. तकारांत, सकारांत, तथा - हट, वट, ट से अंत होनेवाली भाववाचक संज्ञाएँ

जैसे - रात, बात, छत, वचन, ताकत लात (भात खेत को छोडकर)

(यास, मिठास, सांस, बकवास आदि (निकास బయటి మార్గం)

(निवास, **उपवास, विलास** आदि को छोडकर) सजावट, झंझट, बनावट आदि।

लिंग परिवर्तन के नियम और अभ्यास :-

हिन्दी में अधिकतर शब्द पुंलिंग पाये जाते हैं। उन्हीं में कुछ परिवर्तन करके उन्हें स्त्री लिंग बना दिया जाता है। लिंग परिवर्तन इस प्रकार है -

(क) संबंधवाचक और प्राणिवाचक अकारन्त पुंलिंग संज्ञाओं के अंतिम 'अ' या 'आ' के स्थान में ई. प्रात्यय लगाने से स्त्री लिंग शब्द बन जाता है, जैसे -

पुंलिंग		**स्त्री लिंग**
हरिण	-	हरिणी
कबूतर	-	कबूतरी
लडका	-	लडकी
बेटा	-	बेटी
बकरा	-	बकरी

(ख) व्यवसायवाचक संज्ञाओं में इन प्रत्यय लगाने से जैसे -

धोनी	-	धोबिन
माली	-	मालिन
लुहार	-	लुहारिन
तेली	-	तेलिन
जोगी	-	जोगिन

(ग) कई इकारान्त, उकारान्त और एकारंत शब्दों को स्त्री लिंग बनाने केलिए ई, उ और ए को आइन प्रत्यय से बदल देते है जैसे

गुरु	-	गुरुआइन
पंडा	-	पंडाइन
चौधरी	-	चौधराइन

(घ) कई प्राणिवाचक संज्ञाओं के अंत में नी प्रप्यय लगाने से स्त्री लिंग बन जाता है। जौसे -

सिंह	-	सिंहनी
हाथी	-	हाथिन
मोर	-	मोरनी
ऊँट	-	ऊँटनी

(ङ) कई वर्णवाचक और संबंध वाचक संज्ञाओं के अंत में आनी प्रत्यय लगाया जाता है।

जैसे नौकर - नौकरानी

देवर - देवरानी

जेठ - जेठानी

चौधरी - चौधरानी

स्त्री वाचक भिन्न शब्दों के प्रयोग से लिंग परिवर्तन :-

कई ऐसे शब्द है जिन के स्त्री लिंग बनाने का कोई विशेष स्त्री वाचक नियम नहीं। इनके दोनों में भिन्न शब्द होते हैं।

जैसे: राजा - रानी

भाई - बहन

पुरुष - स्त्री

बैल - गाय

पिता - माता

सुलतान - सुलताना

पुंलिंग या स्त्री लिंग शब्द के पहले :-

कई स्त्री वाचक या पुरुषवाचक शब्द लगाकर लिंग परिवर्तन होते हैं। जैसे

पुरुष कवि - स्त्री कवि

नर चील - मादाचील

पुरुष छात्र - स्त्री छात्र

पुरुष सदस्य - स्त्री सदस्य

इस प्रकार हिन्दी भाषा में संज्ञा के लिंग - भेद के नियमों को ठीक से पढने से हिन्दी भाषा की शुद्धता और स्पष्टता का परिचय होता है।

लिंग संबधी भूले :-

रेखांकित शब्द का लिंग बदलकर वाक्य फिर से लिखिए :-

1. नौकर आज छुट्टी पर है। - नौकरानी आज छुट्टी पर है।

2. यह अच्छा विद्वान है। - यह अच्छी विदुषी है।
3. अध्यापक ने पाठ पढ़ा - अध्यापिका ने पाठ पढ़ा।
4. बालक पुस्तक पढ़ता है - बालिका पुस्तक पढ़ती है।
5. यह मोर नाचता हैं - यह मोरनी नाचती है।
6. उसका पति अब नहीं रहा - उसकी पत्नी अब नही रही।
7. राम का नौकर बाजार जाता हैं - राम की नौकरानी बाजार जाती हैं।
8. मेरी माता रोटी बनाती हैं - मेरे पिताजी रोटी बनाते हैं।
9. हाथी जंगल में रहते हैं - हाथिनें जंगल में रहती हैं।
10. हंस पानी में तैर रहा है - हंसनी पानी में तैर रही है।
11. धोबी कपडे धोता है - धोबिन कपडे धाती है।
12. आज पंडितजी ने भाषण दिया है - आज पंडिताइन ने भाषण दिया है।
13. आपका मालिक कौन है ? - आपकी मालकिन कौन है ?

स्मरण रखनेयोग्य बातें :-

1. हिन्दी में केवल दो लिंग है - (अ) पुंलिंग, (आ) स्त्री लिंग।
2. नर प्राणियों के सूचित करनेवॉली सभी शब्द पुलिंग है, तो मादा प्राणियों सूचित करनेवाली सभी शब्द स्त्री लिंग हैं।
3. प्राय : आकारन्त शब्द पुंलिंग है परंतु इनमे कुछ अपवाद हैं।
4. प्रायः ई कारान्त शब्द स्त्री लिंग हैं। परन्तु इनमें कुछ अपवाद है।
5. अप्राणिवाचक शब्द उनके परिणाम, स्थिति, गुण के अनुसार या तो पुलिंग होते हैं या स्त्री लिंग।

बोध - प्रश्न :-

1. सिंह तेज दैडता है।
2. पंडा पूजा करता है।
3. गुरु पाठ सिखाता है।
4. देवर मुस्कराता है।
5. नौकर काम करता है।

6. बादशाह युद्ध करता है।
7. लेखक लिखता है।
8. धोबी कपडा लाता है।
9. हरिण दौडता है।

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. मानक व्यावहारिक हिन्दी व्याकरणा तथा रचना - श्याम जी गोकुल वर्मा
2. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - डॉ. हरदेवबाहरी
3. व्यावहारिक संरचना और अभ्यास प्रधान संपादक - बाल गोविन्द मिश्रा

Sri N. Venkateswarlu

Lesson - 10

वाच्य

ईकाई की रुपरेखा :-

उद्धेश्य

प्रस्तावना

वाच्य (Voice)

- कर्तृ वाच्य
- कर्म वाच्य
- भाव वाच्य

कर्तृ वाच्य, कर्मवाच्य और भाव वाच्य बनाने की पद्धति

स्मरण रखने योग्य बातें

बोध - प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

हिन्दी में भाव की प्रधानता को दृष्टि में रखकर कभी कर्तृ वाच्य का प्रयोग होता है, तो कभी कर्मवाच्य का प्रयोग, कभी भाव वाच्य का प्रयोग किया जाता है।

आवश्यकतानुसार कर्तृवाच्य क्रिया को कर्मवाच्य या भाव वाच्य क्रिया में बदल देते हैं तथा कर्म वाच्य या भाव वाच्य क्रिया को कर्तृवाच्य क्रिया में बदल सतते है। अतः इकाई में आप वाच्य के अर्थ भाव की प्रधानता के अनुसार वाच्य परिवर्तन के नियम सीख सकेंगे।

प्रस्तावना :-

हिन्दी में तीन प्रकार के वाच्य (Voice) है।

1. कर्तृवाच्य (Active Voice)
2. कर्म वाच्य (Passive Voice)
3. भाव वाच्य (Imperative Voice)

इन तीनों वाच्यों को ठीक से पढने, समझने और प्रयोग करने से भाव की प्रधानता स्पष्ठ रुप से मालूम होती है। अतः इनके बारे में ज्ञान रखना हिन्दी विद्यार्थी केलिए आवश्यक है।

वाच्य (Voice) :-

वाच्य की परिभाषा :- क्रिया के जिस रुपांतर से यह ज्ञात हो कि वाक्य में क्रिया के विधान का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है, अथवा भाव है। उसे वाच्य कहते है।

1. **कर्तृ वाच्य :-** कर्तृवाच्य वह है जिस में लिंग, वचन आदि कर्ता के अनुसार होते हैं। अर्थात् कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है।

   उदा : गोविन्द फल खाता है। इस वाक्य में गोविंद कर्ता है। उसके अनुसार क्रिया पुंलिंग एक वचन में आती है। याने कर्तृवाच्य में कर्ता प्रधान होता है। वैसे ही कर्म वाच्य में कर्म प्रधान होता है। वैसे ही भाव वाच्य में भाव प्रधान होता है।

2. **कर्म वाच्य :-** कर्म वाच्य में लिंग वचन आदि कर्म के अनुसार बदलते है।

   उदा : गोविंद से फल खाया गया। इस वाक्य में फल कर्म है। कर्म पुलिंग एक वचन में रहने के कारण क्रिया भी पुलिंग एक वचन में रहती है। यहाँ कर्म वाच्य में कर्ता के बाद से लगता है। तब क्रिया कर्म के लिंग वचन के अनुसार बदलती है।

3. **भाव वाच्य :-** क्रिया का मुख्य संबंध कर्ता कर्म से न होकर भाव से है उसे भाव वाच्य कहते हैं।

   उदा : गोविंद से दौडा नही जाता। इस वाक्य में दौडा नही जाता। यहाँ क्रिया का मुख्य संबंध भाव से हैं। भाव वाच्य हमेशा अकर्मक क्रिया में ही होता है।

   (सूचना) : सकर्मक क्रियायें कर्म वाच्य में और अकर्मक क्रियायें भाव वाच्य में बदलती है।

कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाव वाच्य बनाने की पद्धति :-

कर्तृ वाच्य की क्रिया को सामान्य भूतकाल के रुप में लाकर उसके साथ काल, पुरुष, वचन और लिंग के अनुसार जो क्रिया के रुप लगाने से कर्मवाच्य क्रिया बन जाती है।

जैसे -	**सर्कमक कर्तृवाच्य**	-	**कर्म वाच्य**
	राम रोटी खाता है	-	राम से रोटी खाई जाती है।
	लक्ष्मण ने मेघनाथ को मारा	-	लक्ष्मण से मेघनाथ मारा गया।
	अकर्मक कर्तृवाच्य	-	**भाव वाच्य**
	मै नही जाता	-	मुझ से जाया नहीं जाता
	घोडा नहीं चलता	-	घोडे से नहीं चला जाता

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य और भाव वाच्य में बदलने की कुछ और प्रयोग :-

1. उदा: गोविन्द ने फल खाया। (कर्तृ)
   गोविन्द से फल खाया गया। (कर्म)
   रमेश दौड़ता है। (कर्तृ)
   रमाश से दौडा जाता है। (भाव)
2. कर्मवाच्य में क्रिया के भूतकालिक रुप के पद "जाता है" (वर्तमानकाल)
   गया (भूतकाल) जायेगा (भविष्यत्काल) आता है।
   उदा : उससे सिनेमा देखा जाता है। (वर्तमानकाल)
   वह सिनेमा देखा गया। (भूतकाल)
   उससे सिनेमा देखा जायेगा। (भविष्यत् काल)
3. कर्म वाच्य में लिखते समय काल, लिंग, वचन पर ध्यान रखना होता
4. कर्म के बाद "को आने से क्रिया पुंलिंग एक वचन में होता है।

कर्तृ वाच्य से कर्म वाच्य में बदलिये :-

1. मैं रोटी खाता हूँ। (कर्तृ)
   मुझ से रोटी खायी जाती हैं। (कर्म)
2. वे पानी पी रहे हैं। (कर्तृ)
   उनसे पानी पिया जा रहा है। (कर्म)
3. हम फल खायेंगे। (कर्तृ)
   हम से फल खाये जायेंगे। (कर्म)
4. वह दूध पीता होगा। (कर्तृ)
   उससे दूध पिया जाता होगा। (कर्म)
5. लक्ष्मी हिन्दी सीखती है। (कर्तृ)
   लक्ष्मी से हिन्दी सीखी जाती है। (कर्म)
6. लदके पानी लाये। (कर्तृ)
   लडकों से पानी लाया गया। (कर्म)

7. रमेश ने पत्र लिखा। (कर्तृ)

   रमेश के द्वारा पत्र लिखा गया। (कर्म)

8. गोपाल ने यह चिट्ठी लिखी। (कर्तृ)

   गोपाल से यह चिट्ठी लिखी गयी। (कर्म)

9. आज हम रोटी नही बनायेंगे। (कर्तृ)

   आज हम से रोटी नहीं बनायी जायेगी। (कर्म)

10. ये सूखी रोटियाँ वे नहीं खायेंगे। (कर्तृ)

    ये सूखी रोटियाँ उनसे नहीं खाई जायेंगी। (कर्म)

11. दक्षिण में चावल ज्यादा खाते हैं। (कर्तृ)

    दक्षिण में चावल ज्यादा खाया जाता है। (कर्म)

12. हम अंग्रेजी नहीं बोल सकते । (कर्तृ)

    हम से अंग्रेजी नहीं बोली जाती। (कर्म)

13. रावण ने सीता को चुराया। (कर्तृ)

    रावण से सीता चुरायी गयी। (कर्म)

14. ईश्वर ने यह दुनिया बनायी। (कर्तृ)

    ईश्वर से यह दुनिया बनायी गयी। (कर्म)

स्मरण रखनेयोग्य बातें :-

1. हिन्दी में भाव प्रधानता को दृष्टि में रखकर कभी कर्तृवाच्य का प्रयोग हो तो कभी - कर्म वाच्य का, कभी - कभी भाव वाच्य का प्रयोग किया जाता है।
2. कर्तृ वाच्य में क्रिया द्वारा कर्ता प्रबल दिया जाता अतः क्रिया का प्रधान विषय कर्ता होता है।
3. कर्मवाच्य मे उसी क्रिया का बल कर्म पर विशेष रुप से दिया जाता है। अतः क्रिया का प्रधान विषय कर्म बन जाता हैं।
4. भाववाच्य में क्रिया मुख्य विषय न तो कर्ता है और न कर्म अपितु क्रिया का अपना अर्थ ही मुख्य विषय है। इस में क्रिया सदा पुंलिंग प्रथम पुरुष और एक वचन में रहती हैं और वह निषेधार्थ का प्रतिपादन करती है।

बोध - प्रश्न :-

वाच्य बदलकर लिखिए :-

1. राम ने रावण को मारा।
2. सिपाही ने चोर को पकडा।
3. लक्ष्मी ने पत्र लिखा।
4. सरला ने भोजन किया होगा।
5. गोविन्द ने रोटी खायी है।
6. रमेश ने पुस्तक पढ़ी।
7. मोहन सोया।
8. मैं जाता हूँ।
9. वह नहीं खाता।
10. राधा नहीं बैठती।
11. घोडा नहीं चलता।
12. मैं नहीं जाता।

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - डॉ. हरदेव बाहरी, लोक सभा प्रकाशन, इलाहाबाद
2. व्यावहारिक संरचना और अभ्यास - प्रधान रुंपादक -बालगोविन्द मिश्रा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

Sri N. Venkateswarlu

Lesson - 11

कारक

ईकाई की रुपरेखा :-

उद्धेश्य

कारक प्रस्तावना

कारक के भेद - कर्त्ता कारक

कर्म कारक

करण कारक

संप्रदान कारक

अपादान कारक

संबंध कारक

अधिकरण कारक

संबोधन कारक

कर्म और सम्प्रदान कारक में भेद

करण और अपादान कारक में भेद

का, के, की नियम - 'का' का प्रयोग

'की' का प्रयोग

'के' का प्रयोग

बोध - प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

इस इकाई में आप कारक संबंधी विषयों की जानकारी प्राप्त करेंगे। हिन्दी भाषा में इसका महत्व आप जान लेंगे, कारक के बारे में जानने के बिना हम अपनी भावनाओं को दूसरों तक अर्थवत् पहुँच नहीं सकते व्याकरण के अंतर्गत इसका महत्व ज्यादा है। कारकों के बारे में सठीक जानकारी देना इस इकाई का उद्धेश्य है।

प्रस्तावना :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। कारकों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता, हिन्दी में कारकों का प्रयोग बहुत महत्व पूर्ण है। हिन्दी में कारकों का प्रयोग शब्द के बाद में किया

जाता है। अतः इन्हें परसर्ग भी कहते हैं। इन में 'ने' केवल भूतकाल में ही आता है। इसलिए इस पर ध्यान देना आवश्यक है। इन सब का परिचय इस इकाई में प्राप्त करेंगे।

कारक परिभाषा :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका संबंध सूचित हो, उसे कारक कहते हैं।

कारक के भेद :-

हिन्दी में आठ कारक हैं। कारकों का बोध कराने केलिए संज्ञा के आगे जो प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें विभक्तियाँ कहते हैं।

हिन्दी के कारक और उनकी विभक्तियाँ इस प्रकार है।

कारक का नाम	**विभक्तियाँ**
कर्त्ता कारक	ने
कर्म कारक	को
करण कारक	के साथ, के द्वारा, से
सम्प्रदान कारक	केलिए
अपादान कारक	से
सम्बंध कारक	का, के, की
अधि करण कारक	में, पर
सम्बोधन कारक	हे, अरे

1. **कर्त्ता कारक :-**

संज्ञा के जिस रुप से काम करने वाले का बोध होता है, उसे कर्त्ताकारक कहते हैं।

उदा : गोपाल ने फल खाया

यहाँ खानेवाला गोपाल है। अतः गोपाल ने कर्त्ता कारक है।

2. **कर्म कारक :-**

जिस वस्तु पर कर्त्ता या कर्म का फल पडता है, उसे कर्मकारक कहते हैं।

उदा : राम ने रावण को मारा।

यहाँ रावण पर मार पडी है।

अर्थात् मारने की क्रिया का फल रावण (कर्म) पर पडा है।

अतः रावण को कर्मकारक है।

3. **करण कारक :-**

क्रिया के साधन का बोध करानेवाले संज्ञा या सर्वनाम के रुप को "करण कारक" कहते हैं। इसकी विभक्तियाँ से, के द्वारा के साथ है।

जैसे : राम ने श्याम को छडी से मारा

किताबें वी. पी. पी. के द्वारा भेजिए

मैं उसके साथ जाता हूँ

यहाँ छडी से, वी. पी. पी. के द्वारा, के साथ 'करण कारक' हैं।

4. **संप्रदान कारक :-**

जिस केलिए काम निकलता है, जिसकेलिए कुछ किया जाय या जिसको कुछ दिया जाय उसका बोंध कराने वाला रुप 'संप्रदान कारक' कहलाता है, इसकी विभक्तियाँ को और केलिए हैं।

जैसे : गीता को मैं ने सौ रुपये दियें।

माँ बच्चों केलिए खाना बना रही है।

यहाँ गीता को, बच्चें केलिए संम्प्रदान कारक है।

5. **अपादान कारक :-**

संज्ञा के जिस रुप से अलग होने का बोंध होता है - उसे अपादान कारक कहने हैं। इसकी विभक्ति से है।

जैसे : वृक्ष से फल गिरता है।

गीता बजार से आयी।

इन उदाहरणों में वृक्ष से, बाजार से अपादान कारक है।

6. **संबंध कारक :-**

जिससे एक वस्तु या व्यक्ति का दूसरी वस्तु या व्यक्ति से सम्बन्ध ज्ञात हो, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसर्क विभक्तियाँ का, के, की है।

उदा : कृष्ण का भाई बलराम है।

राम के लडके कालेज गये हैं।

विनोद की बहन माधवी है।

यहाँ कृष्ण का, राम के, विनोद की संबंध कारक है।

7. **अधिकरण कारक :-**

संज्ञा के जिस रुप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। में और पर इसकी विभक्तियाँ है,

उदा : (अ) प्रमोद मेज पर बैठा है।

(आ) किताब में चित्र हैं।

किताब में , मेज पर अधिकरण कारक है।

8. **संबोधन कारक :-**

जिस संज्ञा द्वारा किसी को पुकारा जाए, उसे संबोधन कारक कहते हैं।

उदा : हे राम! श्याम को मत मारो।

हे भगवान! मेरी रक्षा करों।

यहाँ हे राम, हे भगवान सम्बोधन कारक हैं।

कर्म और सम्प्रदान कारक में भेद :-

द्विकर्मक क्रियाओं के मुख्य कर्म के साथ कर्म कारक की विभक्ति को और गौण (अप्रधान) कर्म के साथ सम्प्रदान कारक की विभक्ति को का प्रयोग होता है।

उदा : नौकर ने बैल को डंडे से मारा। (कर्म कारक)

नौकर ने पानी बैल को पिलाया। (सम्प्रदान कारक)

करण कारक और अपादान कारक में भेद :-

करण कारक की से विभक्ति साधन को सूचित करती है, किन्तु अपादान की से विभक्ति अलग होना सूचित करती है।

उदा : सीता सुई से सीती है। (करण कारक)

उसने पानी से मछली को निकाला (अपादन कारक)

का, के, की नियम :-

ये तीनों सम्बन्ध कारक के चिह्न हैं। इन तीनों विभक्तियों का एक ही अर्थ होता है, अंग्रेजी में 'of' शब्द का जो अर्थ होता है, वही अर्थ इन तीनों विभक्तियों का है।

'का' का प्रयोग :-

यदि पुंलिंग एक वचन संज्ञा का सम्बन्ध सूचित करना है तो उसके पहले 'का' विभक्ति का प्रयोग किया जात है।

जैसे - गोविंद का कपडा

यहाँ कपडा संज्ञा पुंलिंग एक वचन शब्द है। इसलिए उसके पहले 'का' विभक्ति - प्रत्यय का प्रयोग किया गय है।

'की' का प्रयोग :-

यदि स्त्रीलिंग एक वचन / बहुवचन संज्ञा का संबंध सूचित करना है तो उसके पहले 'की' विभक्ति का प्रयोग किय जाता है।

जैसे - मोहन की लडकी (लडकी = स्त्री लिंग एक वचन)

गोपाल की लडकियाँ (लडकियाँ = स्त्री लिंग बहुवचन)

'के' का प्रयोग :-

1. यदि पुंलिंग बहुवचन संज्ञा का संबंध सूचित करना है तो उसके पहले के विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

   जैसे - मोहन के लडके (लडके - पुंलिंग बहु वचन)

2. यदि "का" के बाद विभक्ति युक्त संज्ञा हो तो 'का' के रुप में बदल जाता है, राम का घर के बाद में प्रत्यय जोडते हैं तो 'का', 'के', के रुप में बदला जाता है।

   राम का घर + में = राम के घर में

3. सम्बन्धियों (Relatives), शरीर के अंगों (parts of the body) और स्थिर सम्पत्ति (immovable property) को सूचित करने के लिए हमेशा 'के' प्रयुक्त होता है चाहे वह एक वचन या स्त्रीलिंग की संज्ञा क्यों न हो, 'का' या 'की' का प्रयोग नहीं होता।

जैसे -	दशरथ के तीन रानियाँ थी।	(सम्बन्धी)
	नरेश के एक आँख हैं।	(शरीर का अवयव)
	गोपाल के एक मकान है।	(स्थिर सम्पत्ति)

बोध - प्रश्न :-

रिक्त स्थान में कारक चिह्न लगाइए :-

1.	सरोवर	-	पाती है।	(में)
2.	आप	-	बहन क्या करती है।	(की)
3.	कलम	-	स्याही है	(में)
4.	सीता के पति	-	नाम राम है।	(का)
5.	मोहन	-	पुस्तक कहाँ हैं ?	(की)
6.	मंदिर	-	निकट तालाब है	(के)
7.	देश	-	सेवा करनी चाहिए	(की)
8.	- गोपाल, यहाँ मत आओ	-		(हे)
9.	पिता पुत्र	-	समझाता है	(को)
10.	दाल	-	कुछ काला जरुर है	(में)
11.	राजा कवियों	-	प्रोत्साहन देते थे।	(को)

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1.	व्यावहारिक हिन्दी	-	ओंम प्रकाश सिंहल
2.	व्यावहारिक हिन्दी	-	यन. नागप्या
3.	व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण	-	डॉ. हरदेव बाहरी

Lesson - 12

काल

ईकाई की रुपरेखा :-

- उद्धेश्य
- प्रस्तावना
- काल
  - भूतकाल
    - सामान्य भूतकाल
    - आसन्न भूतकाल
    - पूर्ण भूतकाल
    - संदिग्ध भूतकाल
    - अपूर्ण भूतकाल
    - हेतु - हेतु मद भूतकाल
  - वर्तमान काल
    - सामान्य वर्तमान काल
    - संदिग्ध वर्तमान काल
    - अपूर्ण वर्तमान काल
    - हेतु हेतुमद वर्तमान काल
  - भविष्यत् काल
    - सामान्य भविष्यत् काल
    - संदिग्ध भविष्यतं काल
    - हेतु - हेतु मद भविष्यत् काल
- स्मरण रखने योग्य बातें
- बोध - प्रश्न
- सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

हिन्दी में कर्ता, कर्म और क्रिया के रुप को समझने के साथ ही काल भी समझना होगा।

तभी वाक्य रचना ठीक हो सकेगी। नहीं तो जिस काल के वाक्य की माँग होगी, विद्यार्थी इसी काल में वाक्य लिख सकेंगे। काल के भेद को पहचानने से यह पता चलता है कि अमुक विषय या कार्य बीते हुए समय (भूतकाल) में घटित हुआ है या वर्तमान क समय में हो रहा है (वर्तमान काल में) या आनेवाले समय में (भविष्यत्काल) में होनेवाला है। अतः हिन्दी विदयार्थी को काल के भेद को जानना आवश्यक है। इसी इकाई में आप काल के अर्थ तथा हिन्दी के तीन मुख्य काल -

(अ) भूतकाल (आ) वर्तमानकाल (इ) भविष्यत्काल

के बारे में फिर उनसे बननेवाले अन्य काल भेदों के बारे में सीख सकेंगे।

प्रस्तावना :-

काल के भेद से क्रिया भेद का पता चलता है जैसे - जवहरलाल नेहरु नेता थे।

वाजपाई नेता है। न जाने कौन नेता होगा। इस प्रकार होना क्रिया भिन्न - भिन्न रुपों में आई है। जैसे थे, हैं होगा। क्योंकि थे से बीते हुए समय का पता चलता है, है से वर्तमान समय का अर्थ प्रकट होता है और होगा से आनेवाले समय का अर्थ प्रकट होता है।

काल :-

हिन्दी में तीन काल है (अ) भूतकाल (आ) वर्तमानकाल (इ) भविष्यत्काल

1. **भूतकाल :-** क्रिया के जिस रुप से बीते हुए समय का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के छ भेद हैं।

   जैसे :-
   1. सामान्य भूतकाल (Past Indefinite)
   2. आसन्न भूतकाल (Past Indefinite)
   3. पूर्ण भूतकाल (Past Perfect)
   4. संदिग्ध भूतकाल (Doubtful Past)
   5. अपूर्ण भूतकाल (Past Continuous Tense)
   6. हेतु - हेतु मद् भूतकाल (Past Conditional)

   1. **सामान्य भूतकाल** (Past Indefinite) :- यह बीते हुए समय का ज्ञान कराता है। इससे यह पता नही चलता कि क्रिया कब समाप्त हुई या उसे समाप्त हुए कितना समय बीत चुका है।

      जैसे :- चिडियाँ उडीं।

      भूकंप आया।

      मैं ने पुस्तक लिखीं।

इन उदाहरणों से यह पता नहीं चलता कि भूकंप आए या चिडिया को उडे बहुत समय बीत चुका है या अभी अभी ये कार्य हुए हैं। सामान्य धातु के अंतिम स्वर को दीर्घ कर देने या ईकारान्त स्वर देने से धातु का सामान्य भूतकाल में रुप बनता है। जैसे - पक्षी उडा, तितली उडीं।

2. **आसन्न भूतकाल** (Past Indefinite) :- जिस भूतकाल में ये पता चले कि क्रिया को समाप्त हुए अभी बहुत काल नहीं हुआ। अतः उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं। यह भूतकाल वर्तमान काल के समीप पडता हैं। अतः इसकी क्रिया के भूतकालिक रुप के साथ वर्तमान काल का चिह्न है भी जाडे देते हैं। जैसे - लडकी गई है। लडका गया है। विमला किताब लाना भूली हैं। गोपाल किताब लाया हैं।

3. **पूर्ण भूतकाल** (Past Perfect) :- यह क्रिया का यह रुप है जिससे यह प्रतीत होता है कि क्रिया को पूर्ण हुए बहुत काल बीच चुका है। सामान्य भूतकाल की क्रिया में लिंगानुसार था, थी, थे जोडने से पूर्ण भूतकाल को क्रिया बनती है।

जैसे :- लडकी गई थी। लडका गया था। विमला किताब लाना भूली थी। रमेश किताब लाया था। आप क्या बोली थी ? आप क्या बोले थे ? आदि।

संदिग्ध भूतकाल (Doubtful Past) :- यह क्रिया का वह रुप है जिस से क्रिया के भूतकाल में होने में संदेह पाया जाए।

जैसे :- लडकी गई होगी। लडका गया होगा।

लडकियाँ गई होंगी। लडके गए होंगे।

ऊपर के वाक्यों को देखने से यह पता चलता है कि सामान्य भूतकाल की क्रिया पर लिंग - वचनानुसार होगी, होगा, होंगी, होंगे आदि जोडने से संदिग्ध भूतकाल की क्रिया बनती है।

अपूर्ण भूतकाल (Past Continuous Tense) :- यह किया का वह रुप है जिस से यह पता चले कि क्रिया का ध्यापार भूतकाल में हो रहा था। लेकिन यह ज्ञान न हो कि वह पूर्ण हुआ था नहीं।

जैसे :- लडका जाता था। लडकी जाती थी।

लडका जा रहा था। नडकी जा रही थी।

ऊपर के वाक्यों को देखने से यह पता चलता है कि धातु पर लिंग - वचनानुसार "ता था ती थी रहा था, रही थी आदि लगाने से अपूर्ण भूतकाल की बनती है।

हेतु हेतु मद् भूतकाल (Past Conditional) :-

जैसे :- (अ) यदि विधार्थी परिश्रम किया होता तो वह अवश्य उत्तीर्ण हुआ होता।

(आ) यदि अच्छी वर्षा हुई होती तो अच्छा अनाज हआ होता।

(इ) अगर तुम वहाँ आते तो मुझे नहीं पाते।

ऊपर की वाक्यों को देखने से यह पता चलता है कि धातु पर लिंग - वचनानुसार **होता,** होती, अथवा "ता, ती, ते" लगाने से हेतु हेतुमद् भूतकाल का रुप बनता है।

वर्तमान काल (Present Tense) :-

क्रिया के जिस रुप से वर्तमान काल का बोध होता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। फिर वर्तमान काल के चार भेद **बनते**

जैसे :-
1. सामान्य वर्तमान काल (Present Indefinte)
2. संदिग्ध वर्तमान काल (Doubtful Present)
3. अपूर्ण वर्तमानकाल (Present Continous)
4. हेतु - हेतु मद् वर्तमानकाल (Present Conditional)

1. सामान्य वर्तमान काल (Present Indefinte) :-

जिस में कार्य करे सामान्य रुप से होने का पता चले, वह सामान्य वर्तमानकाल हैं।

जैसे :- मैं जाता हूँ। तुम खाते हो।

लडका जाता है। लडकी जाती है।

धातु के साथ ता है, ते है, ती है - जोडने क्रिया वर्तमानकाल में परिवर्तित होती है।

कर्ता पुलिंग एक वचन में है तो "ता" है धातु के साथ जोडना है।

जैसे :- रमेश सिनेमा देखता है।

कर्ता स्त्री लिंग एक वचन है तो ती है धातु के साथ जोडना है।

जैसे :- सीता राम के साथ जंगल जाती है।

कर्ता पुलिंग बहुवचन मे है तो धातु के साथ ते है जोडना है।

जैसे :- हम पाठशाला जाते हैं।

कर्ता स्त्री लिंग बहुवचन मे है तो धातु के साथ ती है जोडना है

जैसे :- स्त्रियाँ पानी लाती हैं।

2. संदिग्ध वर्तमान काल (Doubtful Present) :-

जिसमे वर्तमान काल की क्रिया होने में संदेह पाया जाता है, वह संदिग्ध वर्तमान काल है। **धातु के सा** कर्ता के अनुसार

"ता होगा (पुं. ए. व.) ती होगी (स्त्री. ए. व.)"

"ते होगे (पुं. ब. व.) ती होंगी (स्त्री. ब. व.)

जोड देते तो वह संदिग्ध वर्तमान काल की क्रिया के रुप में परिवर्तित होती है -

जैसे :- मैं जाता हूँगा।

गोपाल बाजार जाता होगा।

सरला घर में काम करती होगी।

लडके पाठ पढते होंगे।

लडकियाँ पाठ पढनी होंगी।

ऊपर के वाक्यों को ध्यान से देखने से यह पता चलता है कि सामान्य क्रिया पर पुरुष - लिंग वचनानुसार "ता हुँगा", "ता होगा", ती होगी, ते होंगी आदि लगाने से संदिग्ध वर्तमानकाल की क्रिया बनती है।

3. **अपूर्ण वर्तमान काल** (Present Continous) :-

यह क्रिया का वह रुप है जिस से वर्तमानकाल में क्रिया का होना पाया जाए।

जैसे :- मैं जा रहा हूँ। लडकी जा रही है।

लडका जा रहा है। लडके जा रहे हैं।

ऊपर के वाक्यों तो देखने से यह पता चलता है कि सामान्य क्रिया पर पुरुष लिंग वचनानुसार किसी दूसरी क्रिया के समान होने पर निर्भर हैं।

जैसे :- यदि वह हमें जानता होते, उसे यहाँ आने दो।

भविश्यत्काल :-

क्रिया के जिस रुप से आनेवाले काल का बोध हो, उसे भविष्यत्काल कहते हैं। इसके तीन भेद है - वे हैं

(अ) सामान्य भविष्यत्काल (आ) संदिग्ध भविष्यत्काल (इ) हेतु - हेतु मद् भविष्यत्काल

1. **सामान्य भविष्यतकाल :-**

यह क्रिया का वह रुप है जिसके द्वारा आनेवाले समय में किसी क्रिया के होने का पता चले।

जैसे :- मैं जाऊँगा। लडकी जाएगी।

लडका जाएगा। लडके जाएंगे।

ऊपर के वाक्यों को देखने से यह पता चलता है कि धातु पर "ऊँगा" एगी एगा, एगे आदि लगाने से सामान्य भविष्यतकाल की क्रिया बनती है।

2. **संभाव्य भविष्यतकाल :-**

क्रिया का वह रुप है जिसके द्वारा आनेवाले समय में क्रिया की संभावना पाई जाए।

जैसे :- मैं जाऊँ। लडकी जाए। लडके जाएँ।

ऊपर के वाक्यों को देखने से यह पता चलता है कि धातु के अंत में पुरुष - लिंग वचनानुसार - ऊँ, ए, और एँ लगाने से संभाव्य भविष्यत् काल की क्रिया बनती हैं।

3. **हेतु - हेतु मद् भविष्यतकाल :-**

यह क्रिया का वह रुप है जिससे भविष्यत्काल में एक क्रिया का दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर पाया जाए।

जैसे :- मैं जाँऊ तो वह आए।

लडकी जाए तो लडका आए।

इस प्रकार हिन्दी विध्यार्थी को काल के भेद को पहचानना है जिससे यह पता चलेगा कि अमुक विषय या कार्य भूतकाल मे घटिन हुआ है।

स्मरण रखने योग्य बातें :-

1. क्रिया के जिस रुप से उसके होने या करने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते है।
2. हिन्दी में मुख्य तीन काल हैं - भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यत्काल।
3. भूतकाल के छः भेद हैं - आसन्न भूतकाल, सामान्य, पूर्ण, संदिग्ध भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, हेतु - हेतु भूतकाल।
4. वैसे ही वर्तमानकाल के भी फिर चार भेद है।
5. यों भविष्यत्काल के भी फिर तीन भेद है।

बोध - प्रश्न :-

1. गोपाल ने रोटी खाई (वर्तमानकाल मे लिखिए)
2. राधा आयगी (वर्तमानकाल में लिखिए)
3. मैं जाऊँगा (भूतकाल में लिखिए)
4. मै रोटी खाता हूँ (भूतकाल में लिखिए)

5. सीता दूध पीती है। (भऊतकाल में लिखिा)

6. राम ने रावण को मारा। (भविष्यत्काल मे लिखिए)

7. राम पढ़ता है। (भविष्तकाल में लिखिए)

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - डॉ. हरदेव बाहरी
2. हिन्दी का मौलिक व्याकरण - (सं) निगमानन्द परमहंस
3. मानक व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - श्याम जी गोकुल वर्मा

Sri N. Venkateswarlu

Lesson · 12

वाक्य प्रयोग

काई की रुपरेखा :-

उद्धेश्य

प्रस्तावना

शब्दों का वाक्यों में प्रयोग

बोध - प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

द्धेश्य :-

वाक्यं रसात्मकं काव्यं - रस रुप वाक्य ही काव्य है। इस से स्पष्ट है वाक्य का महत्व स्वयं सिद्ध है, इस पाठ के अतंर्गत ठिन शब्दों का अर्थ जानकार, उन शब्दों का सही अर्थ में वाक्यों में कैसे प्रयोग किया जाए - विद्यार्थी स्पष्ट समझ सकेंगे। स पाठ में यही काम्य है।

स्तावना :-

हिन्दी राष्ट्रभाषा है, देश भर में हर एक प्रबुद्ध नागरिक हिन्दी जानते हैं, बोलते हैं, समझते है। हिन्दी संपर्क भाषा है, हेन्दी जानते हैं, बोलते हैं, समझते हैं। हिन्दी संपर्क भाषा है, समृद्ध भाषा है, हिन्दी वाङ्मयम में कई ऐसे शब्द है जो संस्कृत र्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं से लिया गया है। इन का सही अर्थ जानने के बिना उसका प्रयोग नहीं कर सकेंगे। कठिन शब्दों का र्थ जानकर इनका वाक्यों में सठीक डंग से प्रयोग दृङ्ग करें।

ाक्य प्रयोग (Usage of words into sentences) :-

शब्दों का वाक्यों के प्रयोग :-

1. ईश्वर दत्त = भगवान से दिया गया, भगवान से प्रदत्त

   ईश्वर दत्त प्रतिभा से साधारण व्यक्ति भी महान बन सकता है।

2. क्रान्तिकारी = भारी परिवर्तन करने वाला

   नेताजी सुभाषचन्द्रबोस क्रान्तिकारी थे।

3. आकाश - कुसुम = अनहोनी बात, आकाशों में विकसित पुष्प

   मूर्ख लोग आकाश - कुसुमों की आशा से अपने जीवन को बरबाद कर डालते हैं।

4. ख्याति = प्रसिद्धि

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की ख्याति प्राप्त रचना 'गीतांजली' है।

5. वे सिर - पैर की बातें सुनना = बे मतलब की बातें सुनना

मूर्ख बे सिर - पैर की बातें सुनते हैं और उन्हें सत्य मानकर भ्रमित होते हैं।

6. उदीयमान = जिसका उदय हो रहा हो

उदीयमान सूरज को देखने से दिल खुश होता है।

7. पुरानी लकीर पीटना = पुरानी परंपराओं और व्यर्थ आचारों को दोहराना

कुछ कवि अपनी कविताओं में पुरानी लकीर ही पीटते हैं।

8. छान बीन = गहरी खोज

छान - बीन करने पर भी चोरों का पता नहीं चला।

9. काफूर होना = अदृश्य होना

गोपल भीड में काफूर होगया।

10. चित्ताकर्षक = मन को आकर्षित करनेवाला

ताजमहल की शोभा चित्ताकर्षक है।

11. आविष्कार = किसी बात का पहले - पहल पता लगाना

विज्ञान ने असंख्य आविष्कार किये हैं।

12. खतम होना = समाप्त होना

वक्त के पहले ही वह काम खतम होना चाहिए।

13. धक्का लगना = आघात लगना, चोटलगना

बुरे आचरण से उन्नति में धक्का लगता है।

14. संशोधन = सुधार

इस प्रति में मैं ने कई संशोधन किये।

15. अर्सालयत = वास्तविकता

असलियत से रचना सजीव बनती है।

16. जुटना = एकत्र करता

अमूल्य वस्तुओं को जुटाने का प्रयत्न करो।

17. बहस करमा = चर्चा करना, तर्क करना

बडे लोगों से धृष्ट पुरुष ही बहस करते है।

18. फूट फूट कर रोना = बहुत रोना

बुढिया फूट फूट कर रो रही है।

19. भृकुटियाँ तनना = क्रोधित होना

शिष्य के अविनय को देखकर अध्यापक जी की भृकुटियाँ तन गयी।

20. जँचना = अच्छा लगना

मुझे यह साडी जँची है।

21. अजीब = विचित्र

यह अजीब काम है।

22. हस्तामलक = हाथ में रखा हुआ आँवला सारे विषय स्पष्ट मालुम होना

गुरु कृपा से दर्शन के गहन विषय भी हस्तामलक के समान ज्ञात हुए।

23. हँसी खेल = आसान काम

जिलाधीश बनना हँसी खेल नहीं है।

24. डकट्ठा करना = जमा करना

वह एक एक पैसा इकट्ठा करके, आज करोडपति बन गया।

25. आलसी = सुस्त

घीसू आलसी और काम चोर भी है।

26. बाट जोहना = प्रतीक्षा करना

आफत के समय लोग मदद केलिए बाट जोहते हैं।

27. बेहोश होना = मूर्छित होना

चोट लगते ही वह लडका बेहोश होगया।

28. अंगद का पैर बनकर रहना= टस से मस नहीं होना

आलसी आदमी अपने घर में अंगद का पैर बनकर रहते हैं, पर कोई काम नहीं करते।

29. वंचित रह जाना = खो जाना

गरीबी लोग आवश्यक सुविधाओं से भी वंचित रह जाते हैं।

30. उदासीनता = खिन्नता, त्याग, विरक्ति

युद्धभूमि में उदासीनता दिखाना कायरों का काम है।

31. निठल्ल = व्यर्थ, बेकार

गोपाल निठल्ल बना है जिस से उस के पिता दुखी है।

32. शिष्टता = शालीनता

बडों के प्रति शिष्टता दिखाना सब का कर्तव्य है।

33. ठिकाना = स्थान, स्थिरता

आज पढे लिखे युवक भी ठिकाने की खोज में हैं।

34. हँसोड = सदा हँसी की बातें करने वाला

सरकस में हँसोड अपनी बातों से दर्शकों के मन को रंजित करता हैं।

35. अकस्र = प्रायः

अकस्र राम बेहोश होता रहता है।

36. सबूत = प्रमाण

अदालत मुकदमा सबूतों पर ही चलती है।

37. अचरज = आश्चर्य

हंपी विरुपाक्ष देवालय की शिल्प कौशल देखकर मुझे बडा अचरज हुआ।

38. सिलसिले = क्रम में

इस सिलसिले में मुझे अब यह काम करना है।

39. आपस में = परस्पर, एक दूसरे से

आपस में झगडा अच्छी बात नहीं है।

40. टिकाऊ = मजबूत

वह अपनी बातें पर टिकाऊ है।

41. पछाड खाता = मूर्छित होना

दुख के मारे वह बूढी औरत पछाड खाती है।

42. उजागर करना = प्रकाशित करना

सुपुत्र वंश को अव

श्य उजागर करता है।

43. बोड़ा पार लगाना = संकट से मुख्त होना

जो व्यक्ति बेडा पार लगाने में सहयता देता है, वही सच्चा मित्र है।

44. ढ़िंढ़ोरा - पीटना = धोषणा करना

कुछ लोग मामूली बातों को भी गली गली में ढिंढोरा पीटते है।

45. आराम मतलब = आलसी, सुखकांक्षी

आराम मतलब व्यक्ति किसी काम का नहीं होता।

46. शामिल होना = मिल जाना

रहीम की जन्मगाँठ पर सभी मित्र शामिल हुँए।

47. किफायत = कम खर्च, मित व्याय

किफायत से जीवन सुख से बीतता है,

48. खुशामद = प्रशंसा

सच्चाई का खुशामद सर्वत्र होती है।

49. ड़ींना मारना = झूठी बातों या आडंबर से भरी बातों कहता

जो डींग मारता है, वह कभी कोई काम नहीं कर पाता।

50. पियक्कड = पीनेवाला, मदिरा पीनेवाला

पियक्कडों पर कोई विश्वास नही रखता।

51. खिलाफ = विरुद्ध

अन्याय के प्रति खिलाफ बोलना नागरिक का कर्तव्य है।

52. फूट = वैमनस्य के कारण होनेवाला भेद

स्वार्थीनेता लोगों में फूट डालते हैं।

53. तकलीफ = कष्ट

तकलीफों के समय में धीरता के साथ जीवन गुजारना है।

54. जलवायु = वातावरण

गर्मी में ऊटी की जलवायु बहुत अच्छी होती है।

55. मुलाकात = मिलना

प्रधानमंत्री से कल मेरी मुलाकात हुई।

56. विरासत = उत्तराधिकार में मिला हुआ।

विद्या, विनय, गुण संपत्ति उसे विरासत में मिली है।

57. आर - पार = यह और वह किनारा

यमुना नदी के आर - पार वृन्दावन है।

58. समाश्रयता = आधारित, आश्रय लेता

भारतीय काव्यों में पौराणिक काथाओं की समाश्रयता सर्वत्र प्राप्त होती है।

59. अनन्य परता = भिन्नता

इतिहास की अनन्यपरता से लाभ के बदले में हानि होती है।

60. उल्लेखनीय = लिखने योग्य वर्णनीय

देश के नेताओं में अटलबिहारी वाजपेयी जी उल्लेखनीय महापुरुष है।

61. स्थायी = स्थिर, शाश्वत

रामायण, महाभारत और गीता भारत की स्थायी संपत्ति है।

62. प्रस्तुत करना = तैय्यार करना, उपयुक्त करना

नौकर मालिक केलिए सारी चीजें समय पर प्रस्तुत करते हैं।

63. आप्यायित = आनंदित, वर्धित

मधुर गीतों को सुनकर सब के हृदय आप्यायित होते हैं।

64. प्रशस्ति = कीर्ति, श्रेष्ठता

चंदबरदाई ने अपने काव्य में पृथ्वीराज चौहान की प्रशस्ति का गान किया।

65. विभाजित करना = बाँटना

साहित्य लोगों के दिलों को विभाजित नहीं करता।

66. पृथकता = अलगाव, भिन्नता

पृथकता के प्रचार करनेवाले व्यक्तियों से देश की एकता कमजोर बनती है।

67. अनोरवा = विचित्र

यह संसार बडा अनोरवा है।

68. तडक - भडक = चमक - दमक

वंचक तडक - भडक दिखाकर दगा देते हैं।

69. लाचार होना = विवश होना

आवश्यकता के कारण बराई भी करने आदमी लाचार होता है।

70. उद्यम करना = प्रयत्न करना

मंजिल तक पहुँचने केलिए हर एक को उद्यम करना चाहिए।

71. ह्रास होना = नाश होना

आलसीपन से संपदाएँ ह्रास होती है।

72. संकीर्ण = संकुचित

संकीर्ण विचार प्रगति केलिए रुकावट सिद्ध होती है।

73. प्रति द्वंद्वी = बराबरी का लडनेवाला, शतृ

वीर पुरुष युद्ध भूमि में प्रतिद्वंद्वी को पराजित करके प्रसन्न होते हैं।

74. महसूस करना = अनुभव करना

अनुभव से ही गरीबों की यातनाएँ हम महसूस करते हैं।

75. सजा देना = दंड देना

राजा ने दोषी को कडी सजा दी।

76. भलमानसाहत = सज्जनता

भलमानसाहत से मान्यता प्राप्त होती है।

77. चालढाल = आचरण

व्यकित्व का सही परिचय व्यक्तियों को चाल ढाल पर ही निर्भर रहता है।

78. बसर करना = बिताना

जंगल में एक रात बसर करना भी बडी मुश्किल है।

79. गागर में सागर भरता = संक्षेप में संपूर्ण बात कहना

बिहारी लाल गागर में सागर भरनेवाले हैं।

80. घास काटना = बेवकूफी का काम करना

धीसू जीवनभर घास काटता ही रहा है।

81. चूडियाँ पहनना = कायर होना

युद्ध में वीरता दिखाने के बजाय वह चूडियाँ पहनकर घर में बैठा है।

82. फूलों न समाना = अधिक खुश होना

परीक्षाओं में अच्छे अंक मिलने से सुनीता फूलों न समायी।

83. बाट देखना = प्रतीक्षा करना

मैं अपने मित्र की बाट देख रहा हूँ।

84. आग बबुला होना = अत्यन्त क्रोधित होना

गलत काम करने से पिताजी मुझ पर आग बबुला होगये।

85. दाँत तले ऊँगली दबाना = आश्तर्य में पड जाना

ताजमहल की कारीगरी देखकर विदेशी पाँत ऊँगली दबाते हैं।

86. काँटा बोना = हानि पहुँचाना

जो उपकार करता है, उसके मार्ग में काँटा बोना कृत घ्नता है।

87. आकाश पाताल का अंतर= बडा अन्तर

गोपाल और विनोद के स्वभाव में आकाश पाताल का अंतर है।

88. ऊँट के मुँह में जीरा = बहुत कम वस्तु

चार रोटियाँ मेरे दोस्त केलिए ऊँट के मुँह में जीरा है।

89. समेटना = जमा करना

साँप ने चूहे को अपने मुह में समेट लिया।

90. ठोकर खाना = नुकसान उठाना, कष्ट पाना

बिना सोचे विचारे काम करने से ठोकर खाना पडता है।

91. खटकना = बुरा लगना, डर लगता

अनीति सब को खटकती है।

92. चिरस्थायिनी = चिरकाल रहने वाली, शाश्वत

कवियों की कीर्ति चिरस्थायिनी होती है।

93. निरीक्षण करना = देखना, जाँचकरना

अधिकारी गण कार्यालय के काम काज का निरीक्षण करते हैं।

94. आभारी = कृतज्ञ

जो हमारी मदद करता है, उसके प्रति आभारी रहना है।

95. अनिर्वचनीय = बताने अशक्त

सरकस देखने से मुझे अनिर्वचनीय आनन्द मिला।

96. आश्वस्थ होना = सांत्वना पाना

नेता की बातों से पीडित प्रजा आश्वस्थ हुई।

97. अड़िग = स्थिर

तपस्वी नियमों के पालन में अड़िग होते हैं।

98. सरोकार = संबन्ध

दुष्टों से सरोकार कभी वांछनीय नहीं है।

99. ठगना = दगा देना

दुष्ट कपटत्व रखकर सदा दूसरों को ठगता है।

100. बिडंबना = परिहास, कठिनाई

विधि की बिडंबना से गरीब कष्ट सहते हैं।

101. भद्दी = कुरुप

यह बडी भद्दी कविता है।

102. खौफ = चिंता

उसे न जवाबदेही का खौफ था, न बदनामी की फिक्र

103. पाक = पवित्र

मैं तो पाक - साफ हूँ, मुझ में किसी भी व्यक्ति केलिए दुर्भावना नहीं है।

104. उद्‌भावना = प्रेरणा

उद्‌भावना के बिना कविता लिखना कठिन है।

105. विस्मृति = विस्मरण

विस्मृति एक वरदान है क्यों कि जिससे दुख को भूल सकते हैं।

बोध - प्रश्न :-

इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करे :-

1. ईश्वर दत्त
2. उदीयमान
3. आविष्कार
4. असलियत
5. अजीब
6. इकट्ठा करना
7. निठल्ला
8. बेहोश होना
9. टिकाऊ
10. बोडा पार लगाना
11. खिलाफ
12. विरासत

13. चालढाल
14. बाट देखना
15. अनिर्वचनीय

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी - ओम प्रकाश सिंहल
2. हिन्दी मुहावरे विश्लेषणात्मक विवेचन - प्रतिभआ अग्रवाल
3. व्यावहारिक हिन्दी - यन. नागप्पा
4. हिन्दी व्याकरण - (सं) डॉ. लीला ज्योति, पी. ओबय्या

Dr. P. Prema Kumar

Lesson - 13

कार्यालयी हिन्दी - प्रशासनिक शब्दावली
(Administrative Terminology)

ईकाई की रुपरेखा :-

उद्धेश्य

प्रस्तावना

कार्यालयों के नाम

पद नाम

अधिक उपयोगी एवं सामान्य शब्दावली

कार्यालयी सामान

बोध - प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

इस इकाई में आप अंग्रजी से हिन्दी में अनुवाद करने केलिए उपयुक्त प्रशासनिक शब्दावली का भली भाँति परिचित होगे। यह विद्यार्थियों केलिए जरुरी है। देश की भाषा हिन्दी है। फिर भी देश भर में अंग्रेजी का प्रभाव भी कम नहीं। दोनो भाषाओं को जानना आज हर एक केलिए आवश्यकं बन गया है। इस उद्धेश्य से यहाँ इस इकाई में कार्यालयों के नाम, पद नाम, अधिक उपयोगी एवं सामान्य शब्दावली, कार्यालयी सामान आदि शीर्षकों के अंतर्गत अंग्रेजी से हिन्दी में कुछ प्रशासहनिक शब्दों को अनुवाद रखा है। इसका सठीक जानकारी विद्यार्थियों को देना इस इकाई का उद्धेश्य हैं।

प्रस्तावना :-

इस इकाई में विधार्थी प्रशासनिक शब्दावली का भली भाँति परिचित होंगे, जिससे कार्यालयों में काम करने कराने वालों को आसान होगा। विद्यार्थियों केलिए इस इकाई अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी -

कार्यालयों का नाम :-

All India Radio	=	आकाशवाणी
Accounts Section	=	लेखा अनुभावा
Administrative Reforms Commission	=	प्रशासनिक सुधार आयोग

Administration Section	=	लेखा अनुभाग
Anti - Corruption Branch	=	भ्रष्टाचार निरोध शाखा
Branch Office	=	शाखा कार्यालय
Board of Higher Secondary Education	=	उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
Broad Casting Station	=	पॅसारण केन्द्र
Budget Section	=	बजट अनुभाग
Building Division	=	निर्माण प्रभाग
Cabinet Secratariate	=	मंत्रिमंडल सचिवालय
Camp Office	=	सिबिर कार्यालय
Cardiology Department	=	हृदय - रोग विभाग
Cash Section	=	रोकड अनुभाग
Cental Hindi Directorate	=	केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
Central Institute of Education	=	केन्द्रीय शिक्षा संस्थान
Central Jail	=	केन्द्रीय जेल
Central Secretariat	=	केन्द्रीय सचिवालय
Civil Court	=	सिविल न्यायालय
Cellectorate	=	कलक्टरी
Committee Room	=	समिति कक्ष
Community Centre	=	समुदाय केन्द्र
Complaint Office	=	शिकायत कार्यालय
Computer Centre	=	कंप्यूटर केन्द्र
Court	=	न्यायालय, कोर्ट
Criminal Court	=	दंडन्यायालय
Customs House	=	सीमा शुल्कालय
Defemce Division	=	रक्षा प्रभाग
District Board	=	जिला बोर्ड
Election Commission	=	निर्वाचन आयोग
Embassy	=	राजदूतावास

Employees Provident Fund Organisation	=	कर्मचारी भविष्य निधि संगठन
Employement Exchange	=	रोजगार कार्यालय
Enquiry Office	=	पूछताछ कार्यालय
External Affairs Ministry	=	विदेश मंत्रालय
Family Planning Centre	=	परिवार नियोजन केन्द्र
Finance Commission	=	वित्त आयोग
First Aid Centre	=	प्रथमउपचार केन्द्र
Flying Squad	=	उडन दस्ता
Food Corporation of India	=	भारतीय खाद्य नियम
Forest Department	=	वन विभाग
Geological Survey of India	=	भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षष
Guest House	=	अतिथि गृह
Head Office	=	प्रधान कार्यालय
High Commission	=	उच्चायोग
High Department	=	गृह विभाग
Hospital	=	अस्पताल
Indian Administative Service	=	भारतीय प्रशासन सेवा
Indian Agricultural Research Institute	=	भरतीय कृषि अनुसंधान संस्थात
Indian Foreign Service	=	भारतीय विदेशी सेवा
Intelligence Bureau	=	आ सूचनांब्यूरो
Laboratory	=	प्रयोग शाला
Labour Office	=	श्रम कार्यालय
Law Commission	=	विधि आयोग
Library	=	पुस्तकालय
Legislative Council	=	विधान परिषद्
Mail Office	=	डाक कार्यालय
Maternity Centre	=	प्रसूति केन्द्र

Mental Hospital	=	मानसिक चिकित्सालय
Municipal Corporation	=	नगर निगम
Municipality	=	नगर पालिका
National Cadet Corps	=	राष्ट्रीय कैडेट कोर
News Services Division	=	समाचार सेवा प्रभाग
Operation Theatre	=	शल्यशाला
Pension Payment Office	=	पेंशन भुगतान कार्यालय
Planning Commission	=	योजना आयोग
Police Station	=	थाना
Post Office	=	डाकघर
Power House	=	बिजलीघर
Primary Health Centre	=	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
Public Works Department	=	लोक निर्माण विभाग
Regional Office	=	आदेशिक कार्यालय
Scheduled Caste and Scheduled Tribe Commission	=	अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आयोग
Secondary Education Board	=	माध्यमिक शिक्षाबोर्ड
Secretariat	=	सचिवालय
State Government	=	राज्य सरकार
Supreme Court	=	उच्चतमन्यायालय
Surgical Department	=	शल्यविभाग
Tourist Office	=	पर्यटक कार्यालय
Union Public Service Commission	=	संघलोक सेवा आयोग
University Grants Commission	=	विश्वविद्यालय अनुदान
Vigilance Section	=	सतर्कत अनुभाग
Water Works	=	जल कल विभाग
Welfare Section	=	कल्याण अनुभाग
Zonal Office	=	आंचलिक कार्यालय
Zone	=	आंचल

पद नाम (Designations) :-

सरकारी कार्यालयों में काम करनेवालों को, वहाँ काम करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के पदनामों की जानकारी आवश्यक है। वैसे असंख्य पदनाम होते हैं। यहाँ कुछ विशेष प्रचालित पदनाम दिये गये हैं। जैसे -

Accountant	=	लेखाकार
Accountant General	=	महालेखाकार
Accounts Officer	=	लेखा अधिकारी
Administrative Office	=	प्रशासन अधिकारी
Administrator	=	प्रशासक
Advocate	=	अधिक्ता
Agriculture Officer	=	कृषि अधिकारी
Announcer	=	आख्यापक
Appointment Clerk	=	नियुक्ति लिपिक
Appraiser	=	मूल्य निरुपक
Armoury Officer	=	शस्त्रगार अधिकारी
Associate Professor	=	सह आचार्य
Attesting Officer	=	अनु प्रमाणन अधिकारी
Audit Officer	=	लेखा - परीक्षा अधिकारी
Auditor	=	लेखा परीक्षक
Ballot Officer	=	मतमत्र अधिकारी
Book Binder	=	जिल्द साज
Booking Clerk	=	टिकट बाबू
Bus Driver	=	बस चालक / ड्राईवर
Business Manager	=	व्यवसाय प्रवंधक
Cabinet Secretary	=	मंत्रिमंडल सचिव
Cash Clerk	=	रोकद लिपिक
Cashier	=	रोकडिया
Central Vigilance Commissioner	=	केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त
Chairman	=	अध्यक्ष, सभापति

Dental Surgeon	=	दंत - सर्जन
Dentist	=	दंत चिकित्सक
Deputy Minister	=	उपमंत्री
Despatch Clerk	=	प्रेषण क्लर्क
Director	=	निदेशक
Distributor	=	वितरक
District Development Officer	=	जिला विकास अधिकारी
District Judge	=	जिला न्यायाधीश
Drug Inspector	=	औषध निरीक्षक
Economic Advisor	=	आर्थिक सलाहकार
Editor	=	संयादक
Educational Advisor	=	सिक्षा सलाहकार
Election Commissioner	=	निर्वाचन आयुक्त
Electrical Engineer	=	बिजली इंजनीयर
Employment Officer	=	रोजगार अधिकारी
Examiner	=	परीक्षक
Executive Engineer	=	कार्यपालक इंजीनियर
Family Welfare Officer	=	परिवार कल्याण अधिकारी
Financial Adviser	=	वित्त सलाहकार
Fire Inspector	=	अग्निशमन निरीक्षक
Foreign Secretary	=	विदेश सचिव
Forest Guard	=	वन रक्षक
General Secretary	=	महा सचिव
Geologist	=	भू विज्ञानी
Governor	=	राज्यपाल
Hand Writting Expert	=	हस्तलेख विशेषज्ञ
Head Accountant	=	प्रधान लेखाकार
Head Master	=	प्रधान अध्यापक

Hindi Officer	=	हिन्दी अधिकारी
Home Secretary	=	गृह सचिव
Incharge	=	प्रभारी
Incom Tax Officer	=	अयकर अधिकारी
Inspector	=	निरीक्षक अनुदेशक
Instructor	=	अनुदेशक
Insurance Officer	=	बीमा अधिकारी
Investigator	=	अन्वेषक
Issue Clerk	=	निर्गम लिपिक
Joint Director	=	संयुक्त निर्देशक
Journalist	=	पत्रकार
Judge	=	न्यायाधीश
Junior Lecturer	=	कनिष्ठ प्राध्यापक
Justice	=	न्यायमूर्ति
Labour Officer	=	श्रम अधिकारी
Lorry Driver	=	लौरी चालक
Male Nurse	=	पुरुष नर्स
Managing Director	=	प्रबंध निदेशक
Mayor	=	महापौर
Medical officer	=	चिकित्सा अधिकारी
Meteorologist	=	मौसम विज्ञानी
Militaary Officer	=	सैनिक अधिकारी
Minister	=	मंत्री
News Editor	=	समाचार संपादक
Officer Incharge	=	प्रभारी अधिकारी
Operator	=	प्रचालक
Opposition Leader	=	विरोधीदल का नेता
Patents Officer	=	वेतन मास्टर

Payment Clerk	=	बेतन बिल सहायक
Peon	=	चपरासी
Physician	=	चिकित्सक
Pilot	=	विमान चालक
Postman	=	डाकिया
Registarar	=	कुलसचिव
Rent Controller	=	किराया नियंत्रक
Relieving Clerk	=	एवजी कलर्क
Reporter	=	प्रतिवेदक
Rural Development Officer	=	ग्रामविकास अधिकारी
Salesman	=	बिक्रीकर्ता
Sales Tax Officer	=	बिक्री - कर - अधिकारी
Sanitary Inspector	=	सफाई निरीक्षक
Scientific Officer	=	वैज्ञानिक आधिकारी
Senior Assistant	=	वरिष्ठ सहायक
Senior Translator	=	वरिष्ठ अनुवादक
Superintendent	=	अधीक्षक
Supervisor	=	पर्यवेक्षक
Sweeper	=	सफाई वाला
Teacher	=	शिक्षक, अध्यापक
Telecommunication Engineer	=	दूर संचार आभियंता
Upper Division Clerk	=	उच्च श्रेणी लिपिक
Veterinary Doctor	=	पशु चिकित्सक
Vice Chairman	=	उपाध्यक्ष
Vice Chancellor	=	उपराष्ट्रपति, अपाध्यक्ष
Vice President	=	उप सभापति
Visiting Professor	=	अभ्यागत आचार्य
Watch Man	=	चौकीदार, प्रहरी

Welfare Officer	=	कल्याण अधिकारी
Wild Life Preservation Officer	=	वन्य जीव परिक्षण अधिकारी
Wireless Operator	=	बेतार प्रचालक
Youth Welfare Officer	=	युवक कल्याण अधिकारी
Zoo Supervisor	=	चिडियाघर पर्यवेक्षक
Deputy Sales Manager	=	उप विक्रय प्रबधक
Store Keepar	=	भण्डारी
Typiest	=	टंकक
Steno Graffer	=	आसुलिपिक
Legal Advisor	=	कानूनी सलाहकार

अधिक उपयोगी एवं सामान्य शब्दावली :-

Accept	=	स्वीकार करना
Account	=	लेखा, खाता, हिसाबा
Acknowledgement Due	=	पावती सहित
Act	=	अधिनियम्
Agree	=	सहमति
Appoint	=	नियुक्त करना
Approve	=	अनुमोदित
Abbreviation	=	संक्षेपाक्षर
Abolition	=	अन्मूलन
Absence	=	अनुपस्थिति
Abstract	=	सार
Academic	=	अकादमिक
Academic Year	=	शिक्षा वर्ष
Accident	=	दुर्घटना, संयोग
Accommodation	=	आवास
Achievement	=	उपलब्धि
Acknowledgement Card	=	प्राप्ति पत्र

Address	=	संबोधन
Administration	=	प्रशासन
Admission	=	प्रवेश
Allegation	=	आभिकथन
Applicant	=	आवेदक
Application	=	आवेदन
Article	=	अनुच्छेद, वस्तु
Back Ground	=	पृष्ठभूमि
Balance	=	शेष, बाकी
Behaviour	=	आचरण
Cash	=	नकद, रोकड
Claim	=	दावा
Claint	=	दावादार
Co - Ordinating Officer	=	समन्वय अधिकारी
Copy	=	प्रतिलिपि
Cancel	=	रद्द करना
Character Certificate	=	चरित्र प्रमाण पत्र
Charge	=	कार्य - भार
Charge - Sheet	=	आरोप पत्र
Citizen	=	नागरिक
Criticism	=	आलोचना
Deduction	=	कटौती
Defact	=	त्रटि, दोष
Document	=	दस्तावेज
Duty	=	कर्तव्य
Deputation	=	प्रतिनियुक्त
Dividend	=	लाभांश
Document	=	दस्तावेज

Earn	=	कमाना
Efficiency	=	दक्षता
Explanation	=	व्याख्या, स्पष्टीकरण
Eye Witness	=	प्रत्यक्ष साक्षी
Fact	=	वास्तविकता
Family Allowance	=	कुटुंब भत्ता
Fitness Certificate	=	आरोग्य प्रमाण पत्र
Hard	=	कठोर
Hindi Version	=	हिन्दी अनुवाद
Identity Card	=	पहचान पत्र
Industrialist	=	उद्योग पति
License	=	अनुज्ञप्ति
Literacy	=	साक्षरता
Movement	=	आंदोलन
Native Language	=	देशीय भाषा
Party	=	दल, पक्ष
Straight	=	सीधा
Straight Forward	=	स्पष्ट वादी
Support	=	समर्थन
Ultimate	=	अंतिम, चरम
Unemployment	=	बेरोजगारी
Vacation	=	अवकाश
Victory	=	विजय
Vulgar	=	अश्लील
Yield	=	पैदावर
Zeal	=	उत्साह
Abovecited	=	ऊपर दिया हुंआ
As Before	=	यथा पूर्व

As Directed	=	निदेशानुसार
As May be necessary	=	यथावश्यक
By order	=	के आदेश से
Come into Force	=	लागू होना
Copy Enclosed	=	प्रतिलिपि संलग्न
During the Period	=	इस अवधि में
So for as possiable	=	यथा संभव
Under consaltation	=	विचाराधीन
Actual Cost	=	वास्तविक मूल्य
Advance Payment	=	अग्रिम राशि, पेशगी
Audit Report	=	लेखा परीक्षा रिपोर्ट
Pay Bill	=	वेतन बिल
Book Value	=	अंकित मूल्य
Section	=	अनुभाग
As Follows	=	निम्न लिखित
As Soon as	=	यथाशीघ्र
Above said	=	ऊपर कहा गया
Over time	=	समयोपरि
President	=	राष्ट्रपति
Vice President	=	उपराष्ट्रपति
Prime Minister	=	प्रधानमंत्री
Deputy Prime Minister	=	उपप्रधानमंत्री
Govemor	=	राज्यपाल
Minister of State	=	राज्यमंत्री
Cabinet Secretary	=	सचिव मंत्रिमंडल
Chief of Air Staff	=	वायुसेनाध्यक्ष
Chief of Naval Staff	=	नौ सेनाध्यक्ष
Commissioner	=	आयुक्त

Dy. Commissioner	=	उपायुक्त
Office Supertintendent	=	कार्यालय अधीक्षक
Head of the Department	=	विभागीय अध्यक्ष
Implementation	=	कार्यान्वयन
Per Annum	=	प्रतिवर्ष
Review	=	समीक्षा
Record	=	अभिलेख
Pay Commission	=	वेतन आयोग
For Favour of Guidance	=	मार्गदर्शन केलिए
For Reminder	=	अनुस्मारकार्थ
For Approval	=	स्वीकृति केलिए
Examiner	=	परीक्षक
Educational	=	शैक्षणिक

कार्यालयी सामान (Office Stationary Etc) :-

Pin	=	आलपीन
Paper Culter	=	कागज तराश
Easy Chair	=	आराम कुर्सी
Paper Weight	=	कागज दाब
Black Ink	=	काली स्याही
Tag	=	कीलदार डोरी
Register	=	खाता
File	=	गड्डी, फाइल
Gum	=	गोंद
Clip	=	चिमटी
Punch	=	छोदने की सँडसी
Office Tray	=	तार की टोकरी
Ink Pot	=	दावात
Calling Bell	=	पुकारते की घंटी

Tape	=	फीता
Seal	=	मोहर
Sealing Wac	=	मोहर करने की लाह
Eraser	=	रबर
Packing Paper	=	लपेटन का कागज
Writting Pad	=	लिखने की पट्टी
Envelope	=	लिफाफा
Ledger	=	लेखाबाही

बोध - प्रश्न :-

निम्न लिखित अशासनिक शब्दों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

1.	Accountant	(लेखाकार)
2.	Clerk	(लिपिक)
3.	Officer	(अधिकारी)
4.	Reporter	(प्रतिवेदक)
5.	Assistant	(सहायक)
6.	Co - ordinator	(समन्वयकर्ता)
7.	Plumber	(नलसाज)
8.	Prime Minister	(उप प्रधानमंत्री)
9.	Allowance	(भत्ता)
10.	High Court	(उच्चन्यायालय)
11.	Chief minister	(मुख्यमंत्री)
12.	Democracy	(लोक तंत्र)

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. Hindi Grammer & Translation - C. Ramaswamy
2. मानविकी परिभाषिक कोश - सं. डा. नगेन्द्र
3. अखिल भारतीय शब्दावली - (प्र) मानव संसाधत विकास मंत्रालय, भारत सरकार

Dr. P. Prema Kumar

Lesson -

पत्र लेखन

(LETTER WRITING)

ईकाई की रुपरेखा :-

उद्धेश्य

प्रस्तावना

पत्र के भाग

सरनामा तालिका

व्यक्ति गत पत्र

बधाई पत्र

आदेश पत्र

नौकरी केलिए आवेदन पत्र

शिकायती पत्र

विविध पत्र

बोध - प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

पत्र लिखना एक कला है। आधुनिक युग में पत्र व्यवहार मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। प्रस्तुत पाठ के द्वारा पत्र कैसे लिखा जाए, पत्र लिखने में किन किन अंशों के प्रति ध्यान देना चाहिए, पत्र कितने प्रकांर के है इन सभी अंशों से विद्यार्थी सठीक ढंग से परिचय प्राप्त कर सकता है। इस पाठ का यही उद्देश्य है।

प्रस्तावना :-

एक समय था जब दूर रहनेवाले बन्धुओं, मित्रों आदि से संपर्क बनाये रखने का एक मात्र साधन पत्र था। व्यापारी लोग पत्रों के बिना व्यापार नहीं कर सकते थे। कार्यालयों को समाचार भेजने केलिए भी पत्र लिखना आवश्यक था। आजकल टेलिफोन, सेलफोन, इंटरनेट, फैक्स आदि के विस्तृत प्रचार से पत्रों के सामने एक नयी चुनौती खडी हुई है। फिर भी पत्रों के महत्व का नजर - अंदाज नहीं किया जा सकता।

पत्र लिखना एक कला है। आधुनिक युग में पत्र व्यवहार मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। यह व्यक्तिगत भेंट के अवकाशों को कम करके समय तथा धन की बचत करता है।

एक अच्छा पत्र तभी लिखा जा सकता है जब कि लेखक को पत्र के विषय का स्पष्ट तथा पूर्ण ज्ञान हो तथा जिस भाषा में पत्र लिखा जाने उसका अच्छा ज्ञान है। व उस भाषा में अपने भाव तथा विचार स्पष्ट तथा सफलता पूर्वक व्यक्त कर सकता हो

एक अच्छे पत्र में स्पष्टता, यथार्थता, पूर्णता, शालीनता, संक्षिप्तता, प्रभावशीलता, मौलिकता, स्वच्छता आदि गुण होने चाहिए।

पत्रों के कई प्रकार होते हैं - व्यक्तिगत, व्यावहारिक, प्रार्थना संबंधी, व्यापारी, पूछताछ के, शिकायती, सरकारी आदि

साधारणतः पत्र के ये भाग होते हैं :-

1. **स्थान** (Station) :- यह पत्र के ऊपरी भाग में दायी ओर लिखा जाता है।
2. **दिनांक** (Date) :- यह स्थान के नीचे लिखा जाता है।
3. **पत्र लिखने वाले का पता :-** स्थान तथा दिनांक लिखने के बाद पत्र के बायीं ओर पत्र लिखनेंवाले का पता 'प्रेषक' (Sender) के शीर्षक के अन्तर्गत दिया जाता है। कुछ कम्पनियों और कार्यालय कागज पर अपना पता मुद्रित करते हैं। ऐसे समय 'प्रेषक' का पता लिखने की जरुरत नहीं होती।
4. **पत्र पाने वाले का पता :-** यह प्रेषक के पते के नीचे ''सेवा में'' शीर्षक के अन्तर्गत लिखा जाता है।
5. **संबोधन :-** आदमी के साथ जो संबंध है, उसके अनुसार संबोधन होगा, कुछ संबोधन शब्द इस प्रकार हैं - पूज्य पिताजी ; पूज्य माताजी ; प्रिय भाई साहब, प्रिय मित्र, प्यारे दोस्त, प्रिय महोदय, माननीय महोदय, श्रीमान् जी, श्रीमती जी, प्रिय महोदया, माननीय महोदया आदि। पत्र पाने वाले के पते के नीचे संबोधन शब्द लिखे जाते हैं।
6. **पत्र का मुख्य भाग :-** पत्र के मुख्य भाग में भिन्न भिन्न विषयों को सुविधानुसार अनुच्छेदों (paragraphs) में विभक्त कर देना चाहिए।
7. **शिष्टाचार के शब्द :-** पत्र लिखने के तदुपरांत इन शब्दों को अंत में दाहिनी ओर लिखा जाता है, अधिक प्रचालित शब्द ''भवदीय''। इसके अतिरिक्त आप का, शुभाकांक्षी, कृपाभिलाषी, भवनिष्ठ शब्दों का भी प्रयोग किया जा सकता है।
8. **हस्ताक्षर** (Signature) :- इसके पश्चात् हस्ताक्षर किये जाते हैं। हस्ताक्षर टाईप अथवा रबर के मोहर नहीं होने चाहिए। वरन् हाथ से ही तथा स्याही से होने चाहिए। हस्ताक्षर के नीचे अपना पद (Designation) होतो लिख देना चाहिए।

9. **संलग्न** (Exclosures) :- मूलपत्र के साथ यदि अन्य कागज जैसे प्रमाण पत्र, चेक, बिल, बीजक आदि भेजे जाएँ तो उनका विवरण पत्र की बाई ओर "संलग्न" शीर्षक के नीचे दिया जाता है।

10. **पुनः या पुनश्च :-** पत्र लिखने तथा हस्ताक्षर होने के बाद यदि कोई आवश्यक बात ज्ञात हो आवे तोपुनः अथवा पुनश्च शब्द लिखकर यह बात लिख देनी चाहिए। इसके नीचे संक्षिप्त हस्ताक्षर (Initials) कर देनी चाहिए।

सर नामा तालिका :-

पद	सम्बोधन	अभिवादन	समापन / सिष्टाचार
बडे लोगों केलिए	पूजनीय, पूज्य, आदरणीय, मान्यवर	सादर प्रणाम, नमस्कार,	आज्ञाकारी विनीत आदिं
बराहर वालों को	प्रियवर, प्रिय भाई, प्रिय मित्र	सप्रेम नमस्ते	तुम्हारा
छोटों केलिए	प्रिय, चिरंजीवी	आशीर्वाद प्रसन्न हो	शुभ चिन्तक तुम्हारा हितैषी
परिचितों केलिए	प्रिय बन्धु	नमस्ते	भवदीय, आपका
अपरिचितों केलिए	महोदय, श्रीमान्	नमस्ते	भवदीय, आपका

MODEL - 1 : PERSONAL

व्यक्तिगत पत्र :-

1. **रुपये माँगते हूए पिता के नाम पर पत्र लिखिए।**

गुंटूर,

ता. 25-4-05।

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम,

मैं यहाँ कुशल हूँ आशा है कि आप सब वहाँ आनन्द से हैं। आज ही मेरी अर्धवर्षीय परीक्षाएँ पूरी हुई है। मैं ने सभी प्रश्न अच्छे किये हैं। आशा है कि मुझे अपने वर्ग में प्रथम स्थान अवश्य मिलेगा। यहाँ अच्छे प्राध्यापक हैं। वे हमारी पढाई पर विशेष श्रद्धा ले रहे हैं।

हमें इस महीने के अन्त तक कालेज की फीस भरनी है, इसलिए आप यथाशीघ्र दो हजार रुपये भेजने की कृपा करे। इतना ही नहीं यहाँ मैं दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास की ओर से 'प्रवीण' परीक्षा की तैय्यारी कर रहा हूँ। इसकी भी फीस भरनी है। अतः आप मेरा पत्र मिलते ही पैसे भेज दे। माता की याद सदा आती रहती है। दशहरे की छुट्टियों में मैं घर आऊँगा।

माताजी को सादर प्रणाम। भाई - बहन को आशीर्वाद।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,
आर. केशव कुमार।

पता :-
आर. विश्वनाथ,
प्राध्यापक,
हिन्दू कालेज - गुंटूर।

2. **आपने किसी स्थान की यात्रा की। उस स्थान की विशेषताओं का वर्णन करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए -**

गुंटूर,
ता 26 - 4 - 05।

प्रिय मित्र गोपाल,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा है कि तुम वहाँ प्रसन्न हो। मैं कल ही तिरुपति की यात्रा से लौट आया। इस पत्र में उस स्थान की विशेषताओं का वर्णन कर रहा हूँ।

तिरुपति चित्तूर जिले में हैं। तिरुमलै में श्री वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर है। उत्तर हिन्दुस्तान के लोग इसे बालाजी का मंदिर कहते हैं। देश - विदेश के हजारों यात्री आते हैं। इस मंदिर की यह विशेषता है कि हिन्दू ही नहीं मुसलमान, ईसाई भी बालाजी के दर्शनार्थ आते हैं। यहाँ की प्राकृतिक शोभा देखने लायक है। यात्री बालाजी की भूर्ति के दर्शन से विशेष आनन्द और शांति प्राप्त करते हैं। तिरुमलै में और एक प्रासिद्ध मंदिर है - वराह स्वामी जी का। भक्त गण पहले पहल वराह स्वामी जी का ही दर्शन करके बाद में बालाजी का दर्शन करते हैं। यहाँ यात्रियों को रहने केलिए धर्मशालाएँ और काटेज हैं। यहाँ एक बगीचा है। उसमें हजारों प्रकार के फूलों के पौधे हैं। यहाँ के फूलों से बालाजी की मूर्ति को अलंकृत किया जाता है।

तिरुपति में गोविंदराजुलु मंदिर और तिरुचानूर में पद्मावती का मंदिर मैं ने देखे। तिरुपति में विश्व - विद्यालय भी है। आकाश गंगा और पापनाशनम जल - प्रपात दर्शनीय है। तुम भी एक बार तिरुपति देख आओ।

तुम्हारा,

डी. गोपी नाथ

पता :-

आर. श्रीधर राव,

प्रथम. बी. काम,

शेल नंबर - 42,

जे. के. सी. कालेज,

गुंटूर - 522 002।

3. **विद्यालय के वार्षिकोत्सव का वर्णन करते हुए - अपने मित्र को पत्र लिखिए -**

गुंटूर,

ता 1 - 5 - 2005।

प्रिय मित्र विनोद,

मैं यहाँ कुशल हूँ, आशा है कि तुम भी वहाँ प्रसन्न रहे। बहुत दिनों के बाद पत्र लिख रहा हूँ। कारण यह है कि मैं अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव की तैयारियों में लगा हुआ था। आज मुझे उसका वर्णन करते हुए प्रसन्नता हो रही है।

यह उत्सव तीन दिन चला। पहले दिन भाषण प्रतियोगिता हुई। विषय था "सह शिक्षा", कई लडकों ने भाग लिया। मुझे प्रथम पुरस्कार मिला।

दूसरे दिन खेल - कूद स्पर्धा का कार्यक्रम रहा। उस दिन विभिन्न प्रकार के खेल खेले गये। मैं 200 मीटर की दौड में प्रथम आया।

तीसरे दिन वार्षिकोत्सव का अंतिम दिन था। शाम को विद्यालय रंग - बिरंगी रोशनी से जग मग उठा। लोग उत्साह और आनन्द से भाग लेने लगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया। नगर के प्रतिष्ठित लोगों का स्वागत किया गया। ज्योति - प्रज्वलन से कार्यक्रम का आरंभ हुआ। हमारे प्रधानाचार्य ने कालेज की प्रगति का वार्षिक विवरण प्रस्तुत किया। जिलाधीश मुख्य अतिथि के रुप में आये थे। उन्होंने विद्यार्थियों को मूल्यवान संदेश दिया। जिलाधीश की पत्नी ने परीक्षाओं में अधिक अंक पाये हुए विद्यार्थियों को तथा विविध प्रतियोगिताओं को पुरस्कार दिये। इसके बाद "महा राणा प्रताप" का एकांकी नाटक खेला गया। लडकियों ने नृत्य प्रदर्शन किया। अध्यक्ष के प्रासंगिक वचनों के बाद वन्दन समर्पण हुआ। अंत में "जनगणमन" के मधुर गुन्जन के साथ वार्षिकोत्सव समाप्त हुआ।

तुम्हारे माता - पिता को मेरे सविनय प्रणाम। तुम्हारी छोटी बहन को प्यार।

तुम्हारा प्रिय मित्र,

यम. केशव।

पता :-

यस. विनोद,

घर का नंबर : 6 - 3 - 71,

नाजर पेट,

तेनाली।

4. **हिन्दी सीखने की आवश्यकता बताते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए -**

विजयवाडा,

ता 12 - 8 - 2005

प्यारे भाई सुमन,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा है कि तुम भी वहाँ कुशल हेंगे। मैं यहाँ अच्छी तरह पढ़ रहा हूँ। मै ने द्वितीय भाषा के रुप में हिन्दी ली है। हमें आज कल हिन्दी पढ़ने की बडी आवश्यकता है। हमारे प्रधानाचार्य ने बताया है कि हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। उसका समृद्ध साहित्य है। श्रेष्ठ कविं, लेखक आदि है। देश में अधिक संख्या के लोग हिन्दी बोलते हैं। उत्तर भारत की प्रधान भाषा तो यही है। आज दक्षिण भारत में ही हर एक प्रसिद्ध नागरिक हिन्दी बोलते है, लिखते हैं और जानते हैं। हिन्दी सीखना हर एक नागरिक का कर्तव्य है। दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा का प्रचार जोरों पर है। इस प्रचार का श्रेय दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा - मद्रास की है। आज सैकडों विद्यार्थी द. भा. हि. प्रचार सभा - मद्रास से आयोजित परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर अच्छी तरह हिन्दी बोल रहे हैं, लिख रहे हैं। इसलिए तुम भी हिन्दी सीखो। तुम दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की किसी परीक्षा में बैठो।

माँ - बाप को प्रणाम। शांति को प्यार।

तुम्हारा प्रिय भाई,

किशोर।

पता :-

के. सुमन,

गृह का नंबर - 10 ,

नल्लकुंटा,

हैगदराबाद।

5. **हास्टल जीवन के अनुभव बताते हुए अपनी माता जी को एक पत्र लिखिए।**

नेल्लूर,

दि 6 - 9 - 2005।

पूज्य माता जी,

सादर प्रणाम।

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा है कि वहाँ तुम सब कुशल होंगे। मुझे तुम्हारा पत्र प्राप्त है। मैं यहाँ अच्छी तरह पढ़ रही हूँ। मुझे छात्रवास का नया अनुभव हो रहा है। आरम्भ में मुझे सब कुछ नया लगता था। अब यहाँ के लोगों और परिस्थितियों की आदी बन गयी।

वार्डेन बहुत अच्छी महिला है। वे छात्रवास में रहने वाली सब विद्यार्थिनियों के प्रति अच्छा व्यवहार करती है। वे हमारे सुख - दुख में भाग लेती है। हमें अच्छी सलाहें देती है। यहाँ स्वादिष्ट खाना बनता है बिलकुल तुम्हारे हाथों में पकाई जैसी। रात के भोजन के बाद एक केला दिया जाता है।

हमारे कमरे में पंखा, मेज, कुर्सियाँ आदि है। स्नान घर सुन्दर है। सादा पानी रहना है। कमरा विशाल है। चार विद्यार्थिनियाँ रहती हैं। मेरी सब सहेलियाँ मिलनसार हैं। वे मुझे अच्छा सहयोग देती हैं। यहाँ डाकटर की सुविधा भी है। मैं अच्छी तरह पढ़ रही हूँ। तुम मेरे स्वास्थ्य और पढाई के बारे में निश्चिन्त रहो।

पिताजी को प्रणाम। छोटे भाई को प्यार।

तुम्हारा,
अंजनी।

पता :-

श्रईमती यम. पद्मावती देवी,

स्टोन हाउस पेट,

घर का नंबर : 6 - 2 - 11,

कर्नूल।

6. व्यायाम का महत्व बताते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए।

गुंटूर,

ता 6 - 10 - 2005।

प्रिय भाई रवि,

तुम्हार पत्र मुझे आज ही मिला। तुम्हारी अस्वस्थता का समाचार पढ़कर दुःख हुआ।

यह तो ठीक ही है कि तुम अच्छी तरह से पढते हो। लेकिन इसके साथ स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना चाहिए। प्रतिदिन तुम को नियमानुसार व्यायाम करना चाहिए। मानव जीवन में व्यायाम का विशेष स्थान है। व्यायाम से सारा शरीर सुडौल, सुगठित एवं दृढ़ बन जाता है। रक्त संचार ठीक तरह तीव्र गति से होता हैं। व्यायाम द्वारा मस्तिष्क का विकास होता है। व्यायामशील पुरुष संयमी होता है और संयम चरित्र का भूषण है। व्यायम के द्वारा मनुष्य में धैर्य, सहनशीलता एवं क्षमा आदि गुण स्वाभाविक रुप से उप्रन्न हो जाते हैं।

एक बार व्यायाम की महत्ता बतलाते हुए स्वामी विवेकानन्द जी महराज ने कहा था - व्यायाम करने और गीता पढने - इन दोनों बातों में यदि तुम्हें एक ही चुनना हो तो मैं कहूँगा, व्यायाम को चुन लो । इन शब्दों में व्यायाम की महत्ता स्वयं ही प्रकट हो जाती है।

भारत वर्ष में व्यायाम के विभिन्न भेद हैं। भिन्न भिन्न प्रकार के आसन, दण्ड - बैठक, खुले मैदान में दौडना, घूमना, प्राणायाम करना, तैरना, हाकी, फुटबाल, क्रिकेट, कबड्डी खेलना आदि सभी को व्यायाम के अंतर्गत रख सकते हैं। बहुत से विद्वानों का कथन है कि प्रातः और सायंकाल के घूमने से बढ़कर कोई व्यायाम नहीं है। वैसे तो उपर्युक्त बताये सभी व्यायाम मानव - जीवन में महत्व पूर्ण है। स्वास्थ्य रक्षा की एक मात्र कुंजी व्यायाम है। सदा याद रखो कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है।

मैं आशा रखता हूँ कि अपना स्वास्थ्य सुधारने का अवश्य प्रयत्न करोगे।

तुम्हारा भाई,

ईश्वर।

पता :-

यम. रामाराव,

द्वितीय वर्ष - बी. एस. सी,

आन्ध्रा लयोला कालेज,

विजयवाडा।

7. ग्रीष्मावकाश अपने घर में बिताने केलिए मित्र को पत्र लिखिए।

नेल्लूर,

ता 1 - 3 - 2005।

प्रिय मित्र शेखर,

तुम अपने पत्र में लिखा था कि वार्षिक परीक्षायें सम्पन्न हो रही है। बाद में ग्रीष्मावकाश मिलेगा। तुम छुट्टियाँ मिलते ही यहाँ आ जाओ, यहाँ के दर्शनीय स्थल भी तुम को दिखायेंगे। यहाँ के पेन्ना नदी के तट पर विराजमान श्रीरंगनायक स्वामी मंदिर है जो सुप्रसिद्ध है। आसपास में जोन्नवाडा कामाक्षी मंदिर, नृसिंह पहाड पर नृसिंह मंदिर पेंचलकोना में विराजमान स्वामी लक्ष्मी नारासिंह मंदिर सुप्रसिद्ध हैं। यहाँ से सौ किलोमीटर दूरी पर "भैरव कोना" भी है। वहाँ तीसरी शताब्दी में निर्मित पुरातन शैव मंदिर है। इतना ही नहीं राजराजेश्वरी मंदिर, स्वामी अय्याप्पा मंदिर भी यहाँ देखने लायक है। इसलिए छुट्टियाँ मिलते ही तुम जरुर आओ।

आपके माता - पिता को मेरा नमस्कार कहना, छोटे भाइयों को शुभ कामनाएँ बताओ।

तुम्हारा,
फणि शंकर

पता :-
के. शेखर,
अरंडल पेट,
घर का नंबर : 6 - 27 - 16,
गुंटूर-2।

MODEL - 2 बधाई पत्र

8. अपने मित्र के परीक्षोत्तीर्ण होने पर बधाई पत्र लिखिए।

नरसराव पेट,

ता 25 - 5 - 2005।

प्रिय मित्र सलाम,

मैं यहाँ कुशल हूँ। कल मैं ने ईनाडु प्रत्रिका में तुम्हारे परीक्षा - फल देखे। मुझे यह जानकर बडी खुशी हुई कि तुम इन्टर में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो। तुम्हारा अगला कार्यक्रम क्या है ?

तुम्हारे माँ - बाप को मेरे प्रणाम। तुम्हारी बहन को मेरी शुभ कामनाएँ। तुम यथाशीघ्र पत्र लिखो।

तुम्हारा प्यारा,
खादर खान

पता :-
षेक सलाम,
घर का नंबर - 11 / 338,
सुलतान बाजार,
हैदराबाद।

9. **मानलीजिए आप का मित्र आपके जन्म दिन पर कोई उपहार भेजता है, उसे धन्यवाद देते हुए एक पत्र लिखिए।**

ऐलूरु,

ता 3 - 6 - 2005।

प्यारा मित्र कालिदास,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा है कि वहाँ तुम भी कुशल हो। मैं अच्छी तरह पढ़ रहा हूँ।

मेरा जन्म दिन 13 - 5 - 2005 को धूम धाम से मनाया गया, मेरे अध्यापक भी आये। मेरे कई मित्रों ने आकर समारोह की शोभा भी बढ़ायी। उन्होंने शुभ कामनाएँ प्रंकट की। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में था। मुझे खेद है कि तुम नहीं आ सके। परंतु तुम ने जा पेन - सेट का उपहार भेजा है उस केलिए मेरे धन्यवाद स्वीकार करो । वह पेन सेट बहुत सुन्दर है। जब कभी मैं उसका उपयोग करता तुम्हारी याद होती है। सौभाग्य वश मेरा जन्म दिन शंकर जयंति के पर्वदिन पर आया है। मैं ने तुम से भेजे गये पेन सेट को आचार्य शंकर के पदचिन्हों पर रखकर स्वीकार किया।

तुम्हारे माँ - बाप को मेरे प्रणाम। तुम्हारी बहन को मेरी शुभ कामनाएँ।

पत्र की प्रतीक्षा में -

तुम्हारा प्रियमित्र,
रवि किशोर।

पता :-
के. कालिदास,
घर का नंबर : 2/12 ,
नाजर पेट,
तेनाली।

MODEL - 3

[ORDERS - आदेश पत्र]

10. अपनी पाठ्य - पुस्तकों का आर्डर देते हुए किसी पुस्तक विक्रेता के नाम एक पत्र लिखिए।

तिरुपति,

ता 4 - 2 - 2005।

प्रेषक :-

के. सांबशिव राव,

प्रथम बी. काम,

घर का नंबर : 2 - 4 - 3

स्टेशन रोड,

तिरुपति।

सेवा में :-

व्यवस्थापक,

गणेश बुक डिपो,

पुस्तक विक्रेता,

सुलतान बाजार,

हैदराबाद।

प्रिय महोदय,

नीचे लिखी प्रथम बी. ए. की अंग्रेजी माध्यम की पाठ्य पुस्तकों को वी. पी. पी. के जरिए उपर्युक्त पते पर यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें। उचित कमीशन भी दें। मैं अग्रिम (Advance) तीन सौ रुपये एम. ओ. द्वारा भेज रहा हूँ।

संख्या	पुस्तक का नाम	प्रतियाँ
1.	गणित (प्रथम वर्ष)	2
2.	अर्थशास्त्र (प्रथम वर्ष)	2
3.	इतिहास (प्रथम वर्ष)	2
4.	हिन्दी - व्याकरण (प्रथम वर्ष)	2

सधन्यवाद,

आपका,

के. सांबशिव राव।

11. **दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (आंध्र) हैदराबाद - 500 004 को राष्ट्र भाषा परीक्षा में बैठने की इच्छा प्रकट करते हूए उक्त सभा की इस परीक्षा की पाठ्य पुस्तकें भेजने केलिए एक पत्र लिखिए -**

नायुडु पेट,

ता 6 - 6 - 2005।

सेवा में,

व्यवस्थापक,

पुस्तक बिक्री विभाग,

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (आन्ध्र)

हैदराबाद 500 004

प्रिय महोदय,

मैं आपकी राष्ट्र भाषा परीक्षा में अगस्त 2005 में बैठना चाहता हूँ। अतः आप राष्ट्रभआषा परीक्षा की सब पाठ्य पुस्तकों को यथाशीघ्र वी. पी. पी. के जरिए भेजने की कृपा करें। मैं अग्रिम एक सौ रुपये एम. ओ. द्वारा भेज रहा हूँ। मेरा पता नीचे दिया गया है।

भवदीय,

पी निर्मला।

मेरा पता :-

पी. निर्मला,

घर की संख्या : 2/1/12,

स्टेशन रोड,

नायुडु पेट।

12. **अपने ग्रंथालय केलिए आवश्यक पुस्तकों केलिए हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - 3 के नाम पत्र लिखिए।**

गुंटूर,

ता 3 - 3 - 2005।

प्रेषक :-

प्रिन्सिपाल,

हिन्दू कालेज,

गुंटूर - 2।

सेवा में :-

व्यवस्थापक

हिन्दी साहित्य भंडार,

लखनऊ - 3

प्रिय महाशय,

आप से निवेदन है कि निम्न लिखित पुस्तक रेल्वे पार्सल के द्वारा यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें ये पुस्तकें हमारे कालेज के ग्रंथालय के उपयोग केलिए हैं। अतः पर्याप्त कमीशन देने की कृपा करें। कमीशन काट कर बाकी रकम केलिए बीजक तथा रेल की रसीद वी. पी. पी. के जरिए भेजिए।

क्र. सं.	पुस्तक	लेखक	प्रतियाँ
1.	गोदान (उपन्यास)	प्रेमचन्द	4
2.	चन्द्रगुप्त (नाटक)	जयशंद्कर प्रसाद	4
3.	यामा (काव्य)	महादेवी वर्मा	4
4.	रामचरित मानस (काव्य)	तुलसीदास	4
5.	ऊर्वशी (काव्य)	दिनकर	4

भवदीय,

हस्तक्षर --------।

13. **मदन दफ कंपनी, दादा भाई नौरोजी रोड, बम्बई के नाम कमानी गद्दे को सवारी गाडी में भेजने की प्रार्थना करते हुए पत्र लिखिए।**

विजयवाडा,

ता 1 - 6 - 2005।

प्रेषक :-

यम. सुनीता देवी यम. यस. सी.

मेनेजर,

आंन्ध्र बैंक,

विजयवाडा।

सेवा में,

मेजर्स मदन दक एण्ड कंपनी,

दादाभाई नौरोजी रोड,

बंबई।

प्रिय महाशय,

आप का ता 12 - 5 - 2005 का पत्र तथा मूल्य - सूची प्राप्त हुए, जिस केलिए आप को धन्यवाद। कृपा करके आप सवारी - गाडी (Passenger Train) से सथाशीघ्र $12^{11} \times 12^{11}$ बाले कमानी (स्प्रिगं) गद्दे को भेजने का कष्ट करें।

माल का समावेष्टन उचित रुप में करावें ताकि मार्ग में माल को क्षति न पहुँचे, सम्बन्धित बीजक (Invoice) तथा रेल की बिल्टी (R. R.) आंन्ध्रा बैंक द्वारा भेजने का कष्ट करें।

मुझे आशा है कि आप मेरे क्रयादेश पर शीघ्र ध्यान देकर अनुग्रहीत करेंगे।

भवदीय,

यम. सुनीता देवी।

14. गीता प्रेस, गोरखपुर की पुस्तकों की एजन्सी की शर्तों केलिए पत्र लिखिए।

गुंटूर,

ता 2 - 5 - 2005।

प्रेषक :-

व्यवस्थापक,

कुमार बुकडिपो,

गुंटूर - 2

सेवा में,

व्यवस्थापक,

गीता प्रेस,

गोरख पुर।

प्रिय महोदय,

सादर प्रणाम।

सेवा में निवेदन है कि हम दस साल से गुंटूर में पुस्तकों की थोक और फुटकर बिक्री करते हैं। हम आप की पुस्तकों की ऐजेंसी भी लेना चाहते हैं। हम रोजाना एक हजार रुपयों की बिक्री करते हैं। हम अमानत भरने केलिए भी तैयार हैं।

हमारे सबंध में विशेष जानकारी केलिए आप निम्नलिखित से पूछ सकते हैं -

1. मारुती बुक डिपो, गुंन्दूर।
2. वेंकटेश्वरा बुक डिपो, गुंटूर।
3. आंध्रा ब्रदर्स, विजयवाडा।

यदि आप हमें अपना एजेंट नियुक्त करना चाहते हैं तो कृपया एजेंसी की शर्तें शीघ्र सूचित करें।

भवदीय,

व्यवस्थापक।

MODEL - 4 EMPLOYMENT

(नैकरी केलिए)

15. लिपिक (Clerk) पद केलिए आवेदन पत्र भजिए।

तिरुपति,

ता 8 - 6 - 2005 ।

प्रेषक :-

के. रमेश,

9 - 7 - 1314,

स्टेशन रोड,

तिरुपति,

सेवा में,

प्रधान आचार्य,

रवि ट्युटोरियल,

तिरुपति।

महोदय,

विषय - लिपिक पद केलिए आवेदन पत्र

संदर्भ - दैनिक ईनाडु 4 - 6 - 2005 के प्रकाशित विज्ञापन।

4 जून 2005 के दैनिक ईनाडु से पता चला कि आप के यहाँ एक लिपिक का पद रिक्त है। इस संदर्भ में मैं अपना आवेदन आप की सेवा में भेज रहा हूँ।

मेरी योग्यताएँ और अनुभव निम्न लिखित प्रकार से हैं -

योग्यता :-

(अ) बी.एस.सी. (कम्प्यूटर साइन्स) में प्रथम श्रेणी - (वेकटेश्वर विश्व विद्यालय)

(आ) हय्यार हाइपराइटिंग में उत्तीर्ण

(इ) संकेत लिपि में गति 120 शब्द प्रति मि निट

अनुभव :-

लिपिक, नव्या ट्रान्सपोर्ट, चित्तूर - एक वर्ष।

मैं तिरुपति वासी हूँ। मुझे बूढे माँ - बाप की देखभाल करनी है। इसलिए मैं आपके यहाँ काम करना चाहता हूँ। विश्वास है कि आप मेरे आवेदन पत्र पर सहानुभूति पूर्वक विचार करेंगे। यदि आप मुझे नौकरी देंगे तो मैं अपनी सेवा से आप को संतुष्ट करुँगा।

सधन्यवाद ।

भवदीय,

के. रमेश।

16. **अनुवादक की नौकरी केलिए प्रबन्धक के नाम पर पत्र लिखिए।**

विशाखपट्टणम्,

ता 7 - 3 - 2005।

प्रेषक :-

यम. भास्कर,

6 - 27 - 16,

सीतम्मधारा,

विशाखपट्टणम।

शिक्षा :-

(अ) एम. ए (अंग्रेजी)

(आ) एम. ए. (हिन्दी)

(इ) एम. ए. (तेलुगु)

अन्य :-

(1) मुझे अंग्रेजी, हिन्दी और तेलुगु भाषाओं का अच्छा ज्ञान है। मैं ने कई हिन्दी कहानियों का तेलुगुमें अनुवाद

किया। मैं ने अंग्रजी के अनेक निबन्धकारों के निबन्धों का हिन्दी तथा तेलुगु में अनुवाद किया। इनका विविधि साप्ताहित पत्रिकाओं में प्रकाशन हुआ है।

(2) स्वस्थ मत और प्रगतिशील प्रवृत्ति।

अनुभव :-

मैं समाचार पत्र में एक साल से अनुवादक का काम कर रहा हूँ।

एम. भास्कर

(आवेदक के हस्तगक्षर)

17. **बुक स्टाल के मेनेजर पद केलिए पास्ट बाक्स** 11/12 C/o हेराल्ड, बडे कुंज, वृन्दावन, मधुरा - 3 के नाम एक आवेदन पत्र भेजिए।

नेल्लूर,

ता 13 - 2 - 2005।

प्रेषक :-

बी. सुकुमार बी.ए,

एम. 37,

आनंदराव पेट,

नेल्लूर - 3।

सेवा में,

प्रबन्धक,

ईनाडु - दैनिकी,

सीतम्मधारा,

विशाखपट्टणम।

प्रिय महाशय,

ता 4 - 3 - 2005 की आपकी दैनिकी से मुझे मालुम हुआ कि आपकी पत्रिका केलिए एक अनुवादक की आवश्यकता है। मैं उक्त नौकरी केलिए आवेदन पत्र आप की सेवा में भेज रहा हूँ। आशा है कि आप मुझे अनुवादक की नौकरी देंगे। यदि आप मुझे वह नौकरी देंगे तो मैं अपने काम से आप को संतुष्ट करुँगा।

आपका,

यम. भास्कर

संलग्त :- आवेदन पत्र

अनुवादक के लिए आवेदन पत्र

नाम :- यम. भास्कर,

पता :- यम. भास्कर,
6 - 27 - 16,
सीतम्मधारा,
विशाखपट्टणम।

उम्र :- 25 वर्ष

सेवा में,

पी. बी 11/12 मार्फत (C/o)
हेराल्ड,
बडेकुंज,
वृन्दालन,
मथुरा - 3।

प्रिय महोदय,

मैं ने 10 - 2 - 2005 के हेराल्ड दैनिक समाचार पत्र में आपका विज्ञापन देखा। उससे मालुम हुआ कि एक नयी पुस्तक - शाला चलाने केलिए एक व्यवस्थापक की आवश्यकता है। मैं उस पद केलिए अपना आवेदन पत्र भेज रहा हूँ। मेरी योग्यताएँ इस प्रकार हैं -

1. मैं सन् 2001 आंन्ध्रा विश्वविधाल्य की बी. ए. परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हूँ।
2. मैं ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की प्रवीण परीक्षा पास की है।
3. मेरी मातृ भाषा तेलुगु है।
4. मैं दो वर्षों से स्टेशन रोड में स्थित एस. चंद अंड कंपनी में व्यवस्थापक के रुप में काम कर रहा हूँ।

अतः आप से निवेदन है कि आप मुझे उक्त पद पर नियुक्त करें तो मैं अपनी सेवा के द्वारा आप को संतुष्ट करुँगा।

भवदीय,
बी. सुकुमार।

18. **हिन्दी प्राध्यापक की नैकरी केलिए प्रधानाचार्य के नाम पर पत्र लिखिए।**

तेनालि,

ता 6 - 3 - 2005।

प्रेषक :-

पी. राधिका,

नाजर पेट,

घर. नं. 6 - 27 -160,

तेनालि - 500 721।

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

लयोलाकालेज,

विजयवाडा।

सन्दर्भ :- आपका विज्ञापन, दिनांक : 3 - 2 - 2005.

विषय :- हिन्दी प्राध्यापक पद केलिए आवेदन पत्र।

महोदय,

आपके उक्त विज्ञापन के उत्तर में मैं अपना आवेदन पत्र आप की सेवा में विचारार्थ भेज रही हूँ। मेरे सबंध में विवरण संलग्न हैं।

भवदिय,

पी. राधिका।

संलग्न :-

आवेदन पत्र

प्रमाण पत्रों की नाकलें सहित

हिन्दी आध्यापक पद केलिए आवेदन पत्र

नाम	:	जी. राधिका
पता	:	ऊपर दिया गया है।
अवस्था	:	24 वर्ष
शैक्षि की योग्यताएँ	:	(1) एम. ए. (आन्ध्रा विश्वविधालय)
		(2) राष्ट्र भाषा प्रवीण (द. भा. हि. प्र. सभा)

अनुभव : मैं स्थानीय नलंदा विद्यालय में तीन वर्ष से हिन्दी अध्यापिका का काम कर रही हूँ। आवश्यकता के अनुसार मैं हिन्दी पाठों को अंग्रजी में भी समझा सकती हूँ।

अन्य : उतत्म स्वास्थ्य तथा हसमुख प्रवृत्ति

आवेदक के हस्ताक्षर,

xxxxxxxx,

(पी. राधिका)।

MODEL - 5 COMPLAINT LETTER

शिकायती पत्र

19. **कल रात को आप के धर में चोरी हुई थी। विवरण देते हुए पुलिस इनत्स्पेक्टर के नाम शिकायती पत्र लिखिए -**

गुंटूर,

ता 22 - ९ - 2005।

प्रेषक :-

यस. रविकुमार,
घर का नंबर : 3 - 1 - 13,
अरंडेल पेट,
गुंटूर - 2।

सेवा में,

पुलिस इन्स्पेक्टर,
पुलिस थाना - 2,
अरंडेल पेट,
गुंटूर।

महाशय,

सेवा में निवेदन है कि कल रात के बारह बजे हमारे घर में चोरी हुइ। जब हम सिनेमा देखकर एक बजे घर लौटे तो देखा कि घर का दरवाजा खुला पडा है। अलमारी में से दो हजार रुपये और एक सोने की अंगूठी, एक सोने का हार चुराकर लेगये। आप से प्रार्थना है कि चोरों का पता लगावें और हमारी चीजों को वापस दिलाने की कृपा करें।

आपका,
यस. रविकुमार

20. **आपके मुहल्ले में सफाई का ठीक प्रबंध नहीं है। उसकी शिकायत करते हुए स्वास्थ अधिकारी के नाम पर पत्र लिखिए -**

विजयवाडा,

ता 18 - 1 - 2005।

प्रेषक :-

के. सुधीर कुमार,

12/1 गवर्नर पेट,

विजयवाडा।

सेवा में,

स्वास्थय व्यवस्थापक,

नगर पालिका,

विजयवाडा।

प्रिय महोदय,

सेवा में निवेदन है कि नगर पालिका के स्वास्थ्य कर्मचारी हमारे मुहल्ले में अच्छी तरह सफाई नहीं कर रहे हैं। नालों में गंदगी जमी हुई है। गंदा पानी सडकों पर बहता है। सडकों पर कूडा - करकट के ढेरे लगे हुए हैं। इसलिए मच्छर लोगों को तंग कर रहे हैं। मलेरिया, हैजा जैसी बीमारियाँ फैल जाने की संभावना है। इसलिए आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप यथाशीघ्र सफाई का उचित प्रबन्ध करें।

धन्यवाद।

भवदीय,

के. सुधीर कुमार

MODEL - विविध पत्र

21. **बहन की शादी में भाग लेने केलिए तीन दिन की छुट्टी माँगते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।**

गुंटूर,

ता 3 - 2 - 2005।

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

जे. के. सी. कालेज,

गुंटूर।

मान्य महोदय,

सेवा में निवेदन है कि मेरी बहन की शादी विशाखपट्टणम में 5 - 2 - 2005 को होने वाला है। हम परिवार सहित कल विशाखपट्टणम खाना हो रहे हैं। इसलिए आप से प्रार्थना है कि आप मुझे तीन दिन की छुट्टी (4 - 2 - 2005 से 6 - 2 - 2005 तक) देने की कृपा करें।

धन्यवाद सहित

आपका विनम्रछात्र,
यस. के. मूर्ति
यम. पी. सी.
बी.यस्.सी. प्रथम वर्ष,
क्रमांक - 118।

22. **छात्र वृत्ति हेतु अपने कालेज के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।**

भीमावरम,
ता 8 - 7 - 2005।

सेवा में,

प्रधानाचार्य,
ए. एन. आर. कालेज,
भीमवरम।

मान्यवर,

सादर प्रणाम।

सेवा में निवेदन है कि मैं इंटर मीडियेट प्रथम वर्ष का विद्यार्थी हूँ। मैं ने दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। मैं ने 570 अंक प्राप्त किया। मैं गरीब परिवार का हूँ। आर्थिक अभाव के कारण मैं पाठ्य - पुस्तकें भी नहीं खरीद सका। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे छात्र वृत्ति प्रदान करें। मेरे पिता जी एक प्रेस में काम करते हैं। महीने भर काम करने पर भी पेट भर खाना मिलना भी मुश्किल हो रहा है। आशाहै कि आप छात्रवृत्ति देकर मुझे पढाई जारी रखने में सहायता करेंगे।

धन्यवाद सहित,

आपका विनम्रछात्र,
आर. हैमातंद,
इंटर, प्रथम वर्ष,
बै. पी. सी. क्रमांक - 13

बोध - प्रश्न :-

1. हिन्दी सीखने की अवश्यकता के बारे में बताते हुए मित्र के नाम पर एक पत्र लिखिए।
2. अपने कालेज में मनाये जानेवाले वर्षिकोत्सव के बारे में वर्णन करते हुए अपने भाई के नाम पर पत्र लिखिए।
3. पुस्तक विक्रेता के नाम पर पत्र लिखिए।
4. प्राध्यापक की नौकरी केलिए प्रधानाचार्य के नाम पर पत्र लिखिए।
5. घर में हुई चोरी का विवरण देते हुए पुलिस अधिकारी के नाम पर शिकायती पत्र लिखिए।

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी - ओम प्रकाश सिंहल
2. पत्र लेखन - D.B.H.P. सभा, मद्रास

Dr. K. Vasantha Kumari